श्री रत्नत्रय भक्ति सरिता

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव
वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार
जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ

प्रकाशक
श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन
C/o धर्मराजश्री तपोभूमि दिगम्बर जैन ट्रस्ट, धर्मतीर्थ
पोस्ट-कचनेर (गट नं. 11-12), जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
www.jainacharyaguptinandiji.org
E-mail : dharamrajshree@gmail.com

पुस्तक का नाम : **श्री रत्नत्रय भक्ति सरिता**

आशीर्वाद : **गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव**

: **वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव**

रचनाकार : **मुनि श्री सुयशगुप्तजी, मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी**
ग.आर्यिका राजश्री माताजी, ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी,
आर्यिका आस्थाश्री माताजी

सर्वाधिकार सुरक्षित : **रचनाकाराधीन**

प्रकाशन वर्ष : **2019**

संस्करण : **दशम 1000**

प्रकाशक : **श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)**
Email : dharamrajshree@gmail.com

प्राप्ति स्थान
1. **प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ**
2. **श्री धर्मतीर्थ, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) 9421503332**
3. **श्री नितिन नखाते, नागपुर, 9422147288**
4. **श्री राजेश जैन (केबल वाले), नागपुर 9422816770**
5. **श्री रमणलाल साहू जी, औरंगाबाद मो. 9823182922**
6. **श्री सुबोध जैन, राधेपुरी, दिल्ली 9910582687**

मुद्रक : **राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर**
9829050791 Email : rajugraphicart@gmail.com

भूमिका प्राक्कथन

एकापि समर्थेयं जिनभक्तिं, दुर्गतिं निवारयितुम्।
पुण्यानि च पूरयितुं दातुं मुक्तिश्रियं कृतिन:॥

आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी ने कहा है कि जिनभक्ति ही, हमारी दुर्गति को निवारण करने में, पुण्य को पूरने (भरने) में और क्रमश: मुक्तिश्री देने में पूर्ण समर्थ है। विशेषकर वर्तमान पंचमकाल में प्राणिमात्र का संहनन व मानसिक शक्ति क्षीण होने से विरले जीव ही ज्ञान वैराग्य को धारण कर पाते हैं और बहुसंख्य जीवों में ज्ञान वैराग्य का अभाव है। इस कारण वर्तमान युग में मात्र देव–शास्त्र एवं गुरु की भक्ति ही कर्म निर्जरा का मुख्य कारण है।

इसी शृंखला में परम पूज्य आचार्य रत्नश्री कनकनन्दी गुरुदेव की पावन प्रेरणा से मैंने व गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी, विदूषी आर्यिका क्षमाश्री, आर्यिका आस्थाश्री माताजी ने भजन, आरती, प्रार्थना, स्तुति आदि की रचनायें लिखी है, जो **''श्री रत्नत्रय भक्ति सरिता''** के रूप में पुन: प्रकाशित होने जा रही है।

उपरोक्त कृति आबाल वृद्ध, युवाओं को लक्ष्य में लेकर बनायी गयी है। वर्तमान में अनेक बालक एवं युवक प्रभु भक्ति के संस्कारों को भूलकर फिल्मी गानों से अश्लीलता के विकार प्राप्त कर रहे हैं। उन्हें प्रचलित धुनों में यदि प्रभु भक्ति के नये गीत दिये जायें, तो वे फिल्मी गानों के विकार से बच सकते हैं। इसी उद्देश्य से इस कृति में निर्मल परिणामों से देव–शास्त्र–गुरु की अर्चना की गयी है। साथ ही **''श्री रत्नत्रय संस्कार शिविर''** एवं **''श्री रत्नत्रय श्रावक संस्कार शिविर''** का आयोजन वर्ष में अनेक बार संघ द्वारा किया जाता है। उसमें भी प्रार्थना स्तुति की आवश्यकता होती है। इन सभी उद्देश्यों को लेकर इस कृति की रचना की गयी है।

इस कृति में छन्द, लय, ताल को गौणकर भावों को मुख्यता दी गयी है। अत: विज्ञजन इसे सुधार कर भावों की गहराई को पाने का प्रयास करें।

हमारे पूर्वाचार्यों के आशीर्वाद और विशेषकर श्रमण शिल्पी गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव एवं आचार्यरत्न श्री कनकनन्दी गुरुदेव की प्रखर प्रेरणा से ही यह कृति बन पायी है।

इसलिए इस कृति की सभी अच्छाईयाँ हमारे पूर्वाचार्यों गुरुओं तथा संघस्थ अन्य रचनाकारों की समझे तथा इसमें जो भी त्रुटियाँ हैं वे हम सबकी समझे प्रकाशन की शीघ्रता होने से यदा–कदा कई त्रुटियाँ हो सकती हैं उसे विज्ञजन सुधार कर पढ़ें।

श्रमण शिक्षक आचार्यश्री की प्रेरणा से तीनों आर्यिकाश्री ने सुन्दर–सुन्दर भक्ति गीतों की रचना कर भक्ति रसिक जनमानस को जोड़ने का अच्छा प्रयास किया, इस हेतु तीनों माताजी को आध्यात्मिक काव्य साधना के प्रगति पथ पर बढ़ने का आशीर्वाद।

इस संस्करण में मुनि श्री सुयशगुप्तजी एवं मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी की अनेक रचनायें भी प्रकाशित हो रही है। पूर्व संस्करणों में भी कुछ रचनाओं का समावेश हो चुका है। ज्ञानवृद्धि हेतु उन्हें भी प्रति नमोऽस्तु सहित आशीर्वाद है।

इसके पुण्यार्जक, मुद्रक, प्रकाशक सभी को आशीर्वाद।

इस कृति से प्राणिमात्र लाभान्वित हो तथा सांसारिक विकारों का त्यागकर भक्ति के संस्कारों को प्राप्त करें।

ऐसी मंगल कामना के साथ।

–आचार्य गुप्तिनन्दी

अनुक्रमणिका

जिनेन्द्र भक्ति

क्र.सं.	भजन	रचयिता	पृष्ठ सं.
1	मेरा महावीर प्यारा	आचार्य श्री गुप्तिनंदी	12
2	आदि ब्रह्मा आदिश्वर हो	ग.आर्यिका राजश्री	13
3	ओ मरूदेवी के दुलारे	आर्यिका आस्थाश्री	14
4	जय जय जय हम बोले	आर्यिका आस्थाश्री	14
5	हे शांति प्रभु को नमन	ग.आर्यिका राजश्री	15
6	भक्ति करूँ पूजा करूँ	ग.आर्यिका क्षमाश्री	16
7	श्री नेमकुँवर महाराज	मुनि श्री चंद्रगुप्त	16
8	मात शिवा के ललना	मुनि श्री चंद्रगुप्त	17
9	ये तो राजुल की दरकार है	मुनि श्री चंद्रगुप्त	18
10	थाली को सजालूँ मैं	आचार्य श्री गुप्तिनंदी	19
11	पारस प्रभु की प्रतिमा	ग.आर्यिका क्षमाश्री	19
12	पारस के गुण प्यारे प्यारे	ग.आर्यिका क्षमाश्री	20
13	भक्ति करें पारसनाथ	आर्यिका आस्थाश्री	20
14	उपसर्ग को जीतने वाले	मुनि श्री चंद्रगुप्त	21
15	बाबा तेरे भक्त कचनेर	मुनि श्री चंद्रगुप्त	22
16	मेरे पारस बाबा	मुनि श्री चंद्रगुप्त	22
17	सुनो सुनो रे	मुनि श्री चंद्रगुप्त	24
18	वीरा मोरे निरखत मन हर्षायो	आचार्य श्री गुप्तिनंदी	26
19	श्री वर्द्धमान के समोशरण	आचार्य श्री गुप्तिनंदी	26
20	जय वीरा जय वीरा	मुनि श्री चंद्रगुप्त	27
21	होऽऽ वीर महावीर	मुनि श्री चंद्रगुप्त	28
22	वीर प्रभु तुम्हें	मुनि श्री चंद्रगुप्त	28
23	पालना प्रभु का	ग.आर्यिका राजश्री	29
24	पलना प्रभुवर का	ग.आर्यिका क्षमाश्री	30
25	त्रिशला का प्यारा ललना	आर्यिका आस्थाश्री	30
26	वीरा जयंती देखो आज	ग.आर्यिका क्षमाश्री	31
27	झीनी-झीनी उड़ी रे	ग.आर्यिका क्षमाश्री	31
28	महावीरा अतिवीरा	आर्यिका आस्थाश्री	32
29	प्रभु वीरा को पुकारे हर	आर्यिका आस्थाश्री	33
30	छाया दु:ख जग में अपार	आर्यिका आस्थाश्री	33
31	जय गोम्मटेश कहो	मुनि श्री चंद्रगुप्त	34
32	बाहुबली के दर्शन आये	ग.आर्यिका राजश्री	35

33	गोम्मटेश गोम्मटेशऽऽ	ग.आर्यिका राजश्री	36
34	बाहुबली नाम जग में निराला	ग.आर्यिका राजश्री	37
35	पंछिड़ाऽऽ ओऽऽ पंछिड़ा	ग.आर्यिका क्षमाश्री	37
36	नीले गगन के तले	ग.आर्यिका क्षमाश्री	38
37	गोम्मटेश बाहुबली	आर्यिका आस्थाश्री	39
38	जिनवर का ध्यान लगा बंदे	आचार्य श्री गुप्तिनंदी	40
39	जिनराज हैं इक नैया	आचार्य श्री गुप्तिनंदी	41
40	हर क्षण की जाती घड़ियों में	आचार्य श्री गुप्तिनंदी	41
41	मंदिर की घंटी में	आचार्य श्री गुप्तिनंदी	42
42	जग से बिछड़ते ही	मुनि श्री चंद्रगुप्त	43
43	रंगमा रंगमा रंगमा रे	मुनि श्री चंद्रगुप्त	43
44	मंदिर में आओ पुण्य कमाओ	मुनि श्री चंद्रगुप्त	44
45	हम सब नन्हे बच्चे	मुनि श्री चंद्रगुप्त	45
46	ये लाल गुलाबी हरे	मुनि श्री चंद्रगुप्त	46
47	तन मन से तुम ध्याओ	ग.आर्यिका राजश्री	46
48	भक्ति की देखो छाई है बहार	ग.आर्यिका राजश्री	47
49	अरिहंत प्रभु की महिमा	ग.आर्यिका राजश्री	48
50	आओ प्रभु दर्शन को चलें	ग.आर्यिका राजश्री	48
51	आजा हो आजा आजा प्रभुजी	ग.आर्यिका क्षमाश्री	49
52	तुम तो प्रभु वीतरागी	आर्यिका आस्थाश्री	49
53	प्रभुजी का न्हवन	आर्यिका आस्थाश्री	50
54	थाली सजा के लाई	आर्यिका आस्थाश्री	50
55	दर्श तेरा पाये	आर्यिका आस्थाश्री	52
56	हम आये तेरे द्वार	आर्यिका आस्थाश्री	52
57	कितना प्यारा प्रभु तेरा द्वारा	आर्यिका आस्थाश्री	52
58	जय जिनवर की जय	आर्यिका आस्थाश्री	53

जिनवाणी भक्ति

59	हुआ शास्त्र अवतार	आचार्य श्री गुप्तिनंदी	54
60	माँ शारदे वर दे	आचार्य श्री गुप्तिनंदी	54
61	हे मात जिनवाणी	आचार्य श्री गुप्तिनंदी	55
62	अरिहंत मुख से	आचार्य श्री गुप्तिनंदी	56
63	स्याद्वाद के इस झरने में	मुनि श्री चंद्रगुप्त	56
64	तेरी वाणी माँ जिनवाणी	मुनि श्री चंद्रगुप्त	57
65	जिनवाणी जिनवाणी	मुनि श्री चंद्रगुप्त	58
66	मैं तो माँ जिनवाणी के	ग.आर्यिका राजश्री	58
67	ओ जिनवाणी माँ	ग.आर्यिका राजश्री	59

68	माँ जिनवाणी सू विनती छे	ग.आर्यिका राजश्री	59
69	आये शरण में तेरी माँ	ग.आर्यिका राजश्री	60
70	शारदे माँ की शरण	ग.आर्यिका क्षमाश्री	60
71	जय जिनवाणी जग कल्याणी	आर्यिका आस्थाश्री	61
72	जिनवाणी माँ को ध्यायें	आर्यिका आस्थाश्री	62

गुरु भक्ति

73	हमको ऐसी ज्योति	आचार्य श्री गुप्तिनंदी	62
74	मुनिवर ज्ञान बरसाओ	आचार्य श्री गुप्तिनंदी	63
75	ऐ जैन श्रमण के शिष्यों	आचार्य श्री गुप्तिनंदी	63
76	गुरुओं का दर्श पाकर	मुनि श्री चंद्रगुप्त	64
77	गुरु तेरे चरणों में	मुनि श्री चंद्रगुप्त	65
78	इतनी शक्ति हमें देना	ग.आर्यिका राजश्री	65
79	आपकी भक्ति से	ग.आर्यिका राजश्री	66
80	धन्य हमारे भाव जगे हैं	ग.आर्यिका राजश्री	67
81	गुरु दर्शन पाया हैं	ग.आर्यिका राजश्री	67
82	गुरुदेव तुम्हारे चरणों में	ग.आर्यिका राजश्री	68
83	हम तो भूल गये	ग.आर्यिका क्षमाश्री	68
84	अंग अंग से झलके	ग.आर्यिका क्षमाश्री	69
85	ज्ञान का दीप जलाते चलो	ग.आर्यिका क्षमाश्री	70
86	समता को चाहने वाले	ग.आर्यिका क्षमाश्री	70
87	धार लिया जिसने मुनि बाना	ग.आर्यिका क्षमाश्री	71
88	गुरु भक्ति में मन न लगाओ	ग.आर्यिका क्षमाश्री	71
89	गुरु दर्श पायें	ग.आर्यिका क्षमाश्री	72
90	ना माँगू सोना चाँदी	आर्यिका आस्थाश्री	73
91	चंदा सी आभा तेरी	आर्यिका आस्थाश्री	73
92	दर्शन पाकर मन हर्षाया	आर्यिका आस्थाश्री	74
93	गुरुओं के दिव्य दर्शन	आर्यिका आस्थाश्री	75
94	इस धरती पे सूरज	आर्यिका आस्थाश्री	75
95	शांतिसागर गुरुवर	मुनि श्री चंद्रगुप्त	76
96	महावीरकीर्ति गुरुवर	मुनि श्री चंद्रगुप्त	77
97	महावीरकीर्ति गुरुवर के ये नंदन	मुनि श्री चंद्रगुप्त	78
98	गुरु को वंदन हो	आचार्य श्री गुप्तिनंदी	78
99	गुरुवर कनकनंदी को ध्यायें	आचार्य श्री गुप्तिनंदी	80
100	क्या सोच रहे गुरुवर	आचार्य श्री गुप्तिनंदी	80
101	कनकनंदी गुरुदेव तुम्हारी जय हो	मुनि श्री चंद्रगुप्त	81
102	कनकनंदी गुरुवर तुमको नमन्	ग.आर्यिका राजश्री	82

103	गुरुवर ने हमें बुलाया	ग.आर्यिका क्षमाश्री	83
104	बादल झूमें सावन आये	ग.आर्यिका क्षमाश्री	84
105	पहली पहली बार	ग.आर्यिका क्षमाश्री	84
106	हम सब गुप्तिनंदी गुरु की	मुनि श्री चंद्रगुप्त	85
107	गुप्तिनंदी गुप्तिनंदी गीत गाओ रे	मुनि श्री चंद्रगुप्त	86
108	जीवन की डोर में	मुनि श्री चंद्रगुप्त	88
109	गोम्मट्टगिरी के अँगना	मुनि श्री चंद्रगुप्त	89
110	गुप्तिनंदी गुरुवर आये	मुनि श्री चंद्रगुप्त	90
111	गुरुवर चंदा हो	मुनि श्री चंद्रगुप्त	91
112	गुरु गुप्तिनंदी को आज	मुनि श्री चंद्रगुप्त	92
113	मनवा हरषे-2	मुनि श्री चंद्रगुप्त	93
114	गुरुदेव आये, सबको जगाये	मुनि श्री चंद्रगुप्त	93
115	हमको भ्रमण से निरालो	मुनि श्री चंद्रगुप्त	94
116	गुरु गुप्तिनंदी की शरण	मुनि श्री चंद्रगुप्त	95
117	गुप्तिनंदी गुरुराज रे	मुनि श्री चंद्रगुप्त	96
118	भक्तों सब साथ चलो	मुनि श्री चंद्रगुप्त	96
119	आचार्य गुरु गुप्तिनंदी	मुनि श्री चंद्रगुप्त	97
120	गुप्तिनंदी गुरुवर तुमको प्रणाम	मुनि श्री चंद्रगुप्त	98
121	गुरुवर गुप्ति गुरुवर	मुनि श्री चंद्रगुप्त	98
122	गुरु गुण गाओ	मुनि श्री चंद्रगुप्त	99
123	आया हूँ मैं तो द्वारे	मुनि श्री चंद्रगुप्त	100
124	गुरुदेवऽऽऽ गुरुदेवऽऽऽ	मुनि श्री चंद्रगुप्त	100
125	आओ आओ आओ जन्म	आर्यिका आस्थाश्री	101
126	चलो जन्म जयन्ति	आर्यिका आस्थाश्री	101
127	गुप्तिनंदी गुरु हमारे	ब्र. कपिल	102
128	गुरु गुप्तिनंदी मेरे	ब्र. कपिल	103
129	सतियों पर भी संकट आता (सती सीता चारित्र)	ग. आर्यिका क्षमाश्री	103
130	सती अंजना सुकुमारी (सती अंजना चारित्र)	आर्यिका आस्थाश्री	105
131	मेरे इस दिल में	ग.आर्यिका क्षमाश्री	106
132	ना कोई किया श्रृंगार	ग.आर्यिका क्षमाश्री	106
133	माँ राजश्री की वाणी	आर्यिका आस्थाश्री	107
134	राजश्री माँ राजश्री माँ	आर्यिका आस्थाश्री	108
135	माँ राजश्री माँ राजश्री	क्षुल्लक सुलभगुप्त	109
136	हे मात मुझको ऐसा	क्षुल्लक सुलभगुप्त	110
137	राजश्री माँ राजश्री माँ देना हमें	क्षुल्लक सुलभगुप्त	110
138	मात राजश्री नाम आपका	क्षुल्लक सुलभगुप्त	111

139	हे अंबिके ! हे राजश्री माता !	क्षुल्लक सुलभगुप्त	113
140	माँ राजश्री , माँ राजश्री ओ मैया ! राजश्री	क्षुल्लक सुलभगुप्त	114
141	अंब क्षमाश्री माता	क्षुल्लक सुलभगुप्त	114
142	माता तू त्राता तेरे भक्त	ब्रह्मचारी कपिल	115
	आहारदान		
143	आ जाओ मेरे महावीर	मुनिश्री चंद्रगुप्त	116
144	द्वारे खड़ी हैं चंदन पुकारे	ग.आर्यिका क्षमाश्री	116
145	चंदनबाला तुमको पुकारे	आर्यिका आस्थाश्री	117
146	अम्मा गई पानी को (धन्यकुमार चारित्र)	ग.आर्यिका क्षमाश्री	117
147	रोता क्यूँ आज.. (आहारदान का आह्वान)	मुनिश्री चंद्रगुप्त	119
148	हम सब नन्हें बच्चे हमें आहार	मुनिश्री चंद्रगुप्त	123
	आत्म संबोधन		
149	निज के निज साथी	आचार्यश्री गुप्तिनंदी	124
150	तुम हो इक नदिया	आचार्यश्री गुप्तिनंदी	125
151	सदा-सदा निज आतम	आचार्यश्री गुप्तिनंदी	125
152	साधु न दूर संयम से	मुनिश्री चंद्रगुप्त	126
153	ये बन्धु ये रिश्ते	ग.आर्यिका राजश्री	127
154	बड़ा नटखट है रे	ग.आर्यिका राजश्री	128
155	प्रभुवर को ध्याऊँ	ग.आर्यिका क्षमाश्री	128
156	औरों की कथायें	ग.आर्यिका क्षमाश्री	129
157	साँसों की न टूटे लड़ी	ग.आर्यिका क्षमाश्री	130
158	भावों पे ध्यान दो	आर्यिका आस्थाश्री	130
	प्रार्थना		
159	ध्वज गान	ग.आर्यिका राजश्री	131
160	पावन है इस देश	आचार्यश्री गुप्तिनंदी	131
161	क्रांतियुग वीरों को	आचार्यश्री गुप्तिनंदी	132
162	विश्व में सद्ज्ञान का	आचार्यश्री गुप्तिनंदी	133
163	अरिहंत भजो रे सिद्ध भजो	मुनिश्री चंद्रगुप्त	134
164	कहते जाओ	मुनिश्री चंद्रगुप्त	135
165	हे वीतरागी संकटहारी	ग.आर्यिका राजश्री	136
166	मोक्ष की मंजिल पाने वाले	ग.आर्यिका क्षमाश्री	136
167	दो ज्ञान गुरुवर	ग.आर्यिका क्षमाश्री	137
168	विश्व में सत्य का प्रकाश हो	ग.आर्यिका क्षमाश्री	138
169	अरिहंत ध्यान करना	ग.आर्यिका क्षमाश्री	139
170	अरहंत शरणा	ग.आर्यिका क्षमाश्री	139
171	हे परम कृपालु	ग.आर्यिका क्षमाश्री	140

शिविर

172	श्री रत्नत्रय संस्कार शिविर में	आचार्यश्री गुप्तिनंदी	141
173	यह शिविर है बालावीरों का	आचार्यश्री गुप्तिनंदी	141
174	सब मिल शिविर में जाओ	आचार्यश्री गुप्तिनंदी	142
175	मेरे देश के वीर जवानों	आचार्यश्री गुप्तिनंदी	143
176	शिविर की आई है	ग.आर्यिका राजश्री	143
177	रत्नत्रय संस्कार शिविर का	ग.आर्यिका राजश्री	144
178	आओ सभी मिल शिविर	ग.आर्यिका राजश्री	144
179	सच्चाई की डगर पर	ग.आर्यिका राजश्री	145
180	गूँज रहे हैं गीत खुशी के	ग.आर्यिका राजश्री	146
181	बच्चों तुम्हें हैं	ग.आर्यिका क्षमाश्री	147
182	ज्ञानमय सबका जीवन	ग.आर्यिका क्षमाश्री	147
183	मैं ये नहीं कहती	ग.आर्यिका क्षमाश्री	148
184	ये शिविर में आना	ग.आर्यिका क्षमाश्री	149
185	भारत का हर कण	ग.आर्यिका क्षमाश्री	149
186	शिविर में आयेंगे	आर्यिका आस्थाश्री	150
187.	ज्ञानी ध्यानी	आर्यिका आस्थाश्री	151
188.	जीवन सुखी बनाने	आर्यिका आस्थाश्री	152

कथा कीर्तन

189.	सल्लकी वन में	आचार्यश्री गुप्तिनंदी	153
190.	जय आदिनाथ भगवान की	मुनिश्री चन्द्रगुप्त	153
191.	जय आदीश्वर स्वामी	आर्यिका आस्थाश्री	154
192.	दान विधि की शिक्षा	आचार्यश्री गुप्तिनंदी	154
193.	जय हो शांति जिनेशा	आर्यिका आस्थाश्री	155
194.	जय मुनिसुव्रत देवा	आर्यिका आस्थाश्री	155
195.	जय चिंतामणि बाबा	आर्यिका आस्थाश्री	156
196.	जय महावीर भगवान की	आचार्यश्री गुप्तिनंदी	156
197.	जय महावीरा स्वामी	आचार्यश्री गुप्तिनंदी	157
198.	वीर महावीर ध्याओ	आचार्यश्री गुप्तिनंदी	158
199.	इक चला शिकारी	आचार्यश्री गुप्तिनंदी	158
200.	महासती चंदनबाला	आचार्य श्री गुप्तिनंदी	160
201.	जय तीर्थंकर भगवान की	मुनिश्री चन्द्रगुप्त	164
202.	जय पार्श्वनाथ भगवान की	मुनिश्री चन्द्रगुप्त	164
203.	ये महाकथा महावीर की	मुनिश्री चन्द्रगुप्त	165
204.	लिया वीर अवतार	आचार्यश्री गुप्तिनंदी	165
205.	हे जनक जननी	आर्यिका आस्थाश्री	166

गुरुदेव भक्ति

206.	केशलोंच करते हैं गुरुवर	आर्यिका आस्थाश्री	167
207.	म्हारी कुटिया में	आर्यिका आस्थाश्री	168
208.	गुरु गुप्ति करें विहार	आर्यिका आस्थाश्री	168
209.	गुप्तिनंदी गुरुदेव तुम्हारी	आर्यिका आस्थाश्री	169
210.	हो जिनवाणी मैया	आर्यिका आस्थाश्री	170
211.	ये पिच्छी बड़े भाग्य से	आर्यिका आस्थाश्री	170
212.	हे वात्सल्यमयी माता	आर्यिका आस्थाश्री	171
213.	न कच्चा है	मुनिश्री चन्द्रगुप्त	172
214.	वीतरागता की गंगा का	मुनिश्री चन्द्रगुप्त	173
215.	पर्वों में पर्व बढ़ा	आर्यिका आस्थाश्री	175
216.	जो आया है वो जायेगा	मुनिश्री चन्द्रगुप्त	175
217.	प्रभुवर इतना वर दो	मुनिश्री चन्द्रगुप्त	176
218.	ममता मूरत माँ	मुनिश्री चन्द्रगुप्त	177
219.	जो नारी तीर्थंकर	मुनिश्री चन्द्रगुप्त	179
220.	दीक्षा दिवस मनाओ	आर्यिका आस्थाश्री	180
221.	आओ खेले हम	आर्यिका आस्थाश्री	181
222.	भाग्योदय करवायें	आर्यिका आस्थाश्री	181
223.	जन्मे हैं गुरुवर गुप्तिनंदी जी	आर्यिका आस्थाश्री	182
224.	दीक्षा दिवस मनावा	आर्यिका आस्थाश्री	183
225.	दीक्षा जयन्ति आई	आर्यिका आस्थाश्री	183
226.	चौका मैंने लगाया	आर्यिका आस्थाश्री	184
227.	मंगल कलशा लाओ	आर्यिका आस्थाश्री	185
228.	चलो प्रभु पूजा करने	आर्यिका आस्थाश्री	185
229.	गुप्तिनंदी गुरुवर	आर्यिका आस्थाश्री	186
230.	आओ जी गुप्तिनंदी जी	आर्यिका आस्थाश्री	187
231.	ओ प्राणी रे	आर्यिका आस्थाश्री	187
232.	हम भक्ति से भगवान का	आर्यिका आस्थाश्री	188
233.	ये थाली सजालो	आर्यिका आस्थाश्री	189
234.	आओ बहना करें	आर्यिका आस्थाश्री	190
235.	जयकारा ऽ जयकारा ऽ	आर्यिका आस्थाश्री	191
236.	गुप्तिनंदी, ऋषिवर की	आर्यिका आस्थाश्री	193
237.	गुप्ति गुरु जहाँ भी जाते	आर्यिका आस्थाश्री	194
238.	दिगम्बर मुद्रा में	आर्यिका आस्थाश्री	195
239.	हमारी आर्ष परम्परा	मुनिश्री चन्द्रगुप्त	196
240.	दीक्षा की शुभ बेला	आर्यिका आस्थाश्री	197
241.	आओ मंदिर चलें...	आर्यिका आस्थाश्री	198

जिनेन्द्र भक्ति

(भगवान महावीर की बाल लीला)

(1) तर्ज : मेरा महावीर प्यारा.....

मेरा महावीर प्यारा बड़ा ही दुलारा
देखो पैयाँ चले है, देखो घुटनो चले है- जय हो महावीरा-4

पावों में छम-छम पायलिया बाजे
रुन झुन करधनी कमर में साजे
छम-छम-छम ध्वनि मोह रही है।। मेरा महावीर.....

इधर-उधर पाँव धरे नन्हा महावीरा
रत्नमयी धूलि से धूसर है वीरा
जाकी बाल क्रीड़ा मन मोह रही है।। मेरा महावीर.....

मुक्तों की माला गले में सोहे
रत्न मुकुट बाल मस्तक पर सोहे
मुकुट उतार वीरा फेक रह्यो है।। मेरा महावीर.....

शेर और गाय को साथ खिलावे
दोनों को एक घाट पानी पिलावे
शान्ति का उपदेश देय रह्यो है।। मेरा महावीर.....

त्रिशला मैया हर्ष मनावे
बाल क्रीड़ा का आनंद पावे
गोदी में टुकुर-टुकुर देख रह्यो है।। मेरा महावीर.....

'गुप्ति' बाल क्रीड़ा पर वारि जावे
बाल स्वभाव है खेल बतावे
खेल से भविष्य बताय रह्यो है।। मेरा महावीर.....

(2) तर्ज : चांद सी महबूबा...

आदि ब्रह्मा आदिश्वर हो, जीवों के हितकारी हो।
पंच कल्याणक से भूषित तुम, भव्यों के उपकारी हो।।

जब कल्पतरु थे ध्वंस हुए, जनता का मन अकुलाया था।
आकुल व्याकुल हो जीवन से, मनु नाभि शरण में आया था।–2
सम्यक् जीवन राह बता दो, जीवों के उपकारी हो।।
पंचकल्याणक.....

मनु नाभि बोले मेरा तनुज, होगा इस युग का तीर्थंकर।
इस चिंता से वह मुक्त करेगा, होगा सबका करुणाधर।–2
जीने की तब राह बतायी, आदि प्रभु दु:खहारी हो।।
पंचकल्याणक.....

तब अवधिज्ञान लगाया प्रभु ने, जानी विदेह की सब रचना।
असि आदि षट्कर्मों को बता, सिखलाया हमको कुछ करना।–2
कर्मभूमि का आरंभ करते, मुक्ति पथ अधिकारी हो।।
पंचकल्याणक.....

ब्राह्मी सुन्दरी को शिक्षा दे, नारी शिक्षण प्रारंभ किया।
उनको दीक्षा भी देकर के, स्त्री जाति को उबार दिया।–2
आतम गुण को पाने वाले, पंच महाव्रत धारी हो।।
पंचकल्याणक.....

शुभ संयम धारा कर्म नशे, तब केवल रवि को प्राप्त किया।
सम्पूर्ण गुणों को पाकर के, निज आतम का आनंद लिया।
'राजश्री' नित प्रभु चरणों को, वंदन बारम्बार करे।।
पंचकल्याणक.....

(3) तर्ज : तू जब जब मुझको...

ओ मरुदेवी के दुलारे, इस युग के तारण हारे।
हम आये शरण तिहारे, प्रभुवर का रूप निहारे॥
तेरी महिमा को गाये, तेरी पूजा रचाये
हमें तारो भगवन् शरण तेरी आ गये-2

नष्ट हुये जब कल्पवृक्ष, निकला जाये सबका दम।
जनता तो अकुला गई, कैसे बचाये प्राण हम॥
प्रजा शरण में आ गई, त्राहि-त्राहि मचा रही।
दया करो प्रभुवर हम पे, हमको भूख सता रही॥ तेरी महिमा...

असि-मसि आदि प्रभु ने, षट् कर्त्तव्य बताये थे।
कर्म भूमि का आरंभ कर, नई रोशनी लाये थे॥
नारी शिक्षा देकर के, जीवन कला सिखाई थी।
वेष दिगम्बर धारण कर, मुक्ति राह बताई थी॥ तेरी महिमा...

धर्म देशना देकर के, जन-जन का उद्धार किया।
अष्ट कर्म को क्षय करके, सिद्ध रूप को प्राप्त किया॥
युग के आदिनाथ को, युगों-युगों तक पूजेंगे।
आदिनाथ के नाम से पाप ताप सब छूटेंगे॥ तेरी महिमा...

(4) तर्ज : झुम-झुम झन नन बाजे...

जय-जय-जय हम बोले, जय आदि जिनंदा
ऋषभ जिनंदा जय, नाभि के नंदा
आदि जिनंदा जय ऋषभ जिनंदा
जय-जय2.....

1. नगर अयोध्या झूमे गाये, खुशियाँ मनाये वाद्य बजाये।
   जन्मे त्रिभुवन चंदा...जय आदि जिनंदा...
2. रूप निरख मरुदेवी हरषाती, अष्ट कुमारी नृत्य रचाती।
   छायो मन आनंदा... जय आदि....
3. एक शतक सुत श्रेष्ठ कहाये, ब्राह्मी सुंदरी सुता कहाये।
   रानी नंदा सुनंदा... जय आदि...
4. प्रजा प्रभु की शरणा आये, प्रभु को अपनी व्यथा सुनाये।
   कष्ट मिटाओ जिनंदा... जय आदि....
5. श्रद्धा रूपी दीप जलाऊँ, आदि प्रभु का कीर्त्तन गाऊँ।
   'आस्था' का मेटो भव फंदा.... जय आदि जिनंदा...

(5) तर्ज : हे मालिक...

है शांति प्रभु को नमन, हरते जो हमारे करम।
जो इन्हें ध्यायेगा, मुक्ति पथ पायेगा, हट जायेंगे सारे भरम॥ है शांति...

चारों गतियों में अटका रहा, इन कर्मों से घबरा रहा।
मैं रोता रहा, मैं हँसता रहा, इन पापों को ढोता रहा।
आज मैं आया तेरी शरण, सब छोड़ के अपनी शरम॥ जो इन्हें...

जब कष्टों का हो सामना, तब भाये यही भावना
ज्ञान ज्योति जले, मोक्ष मारग मिले, हम सभी की यही कामना।
जयकार करें हर दम, और आगे बढ़ायें कदम॥ जो इन्हें...

प्रभु शांति की पाई शरण, एक तू ही है तारण-तरण।
भक्त भक्ति करे, ज्ञान कोष भरे, और खुद में करे वो रमण।
दर्शन से सुधारें जनम, 'राज' पायें ये सच्चा धरम॥ जो इन्हें...

(6) तर्ज : पंछी बनूं उडके चलू...

भक्ति करूँ पूजा करूँ शांति चरण में।
आत्म शांति प्राप्त करूँ प्रभु शरण में।।

प्रभु शांति शरण गुणकारी, प्रभु चरण कमल दु:खहारी।
मैं प्रभु शरण नित ध्याता, प्रभु चरणों में शीश झुकाता।।
पाप हरूँ, ताप हरूँ, आज चरण में...2 आत्म शांति....

मैंने भव-भव में कष्ट उठाये, प्रभु नाम हृदय को भाये।
मैंने पाया प्रभु का सहारा, मुझसे दूर नहीं भव किनारा।।
नाम जपूँ, जाप जपूँ, आज चरण में...2 आत्म शांति....

शांतिनाथ शरण शांति दाता, हैं तीन जगत के जो त्राता।
'क्षमा' प्रभु छवि को निहारे, वसु कर्मों का बंध निवारे।।
गीत गाये, वाद्य लाये, आज शरण में...2 आत्म शांति....

(7) तर्ज : म्हारे हिवड़ा में नाचे मोर...

श्री नेमकुंवर महाराज, राजुल के सैया।
बारात चली रे आज, चले कृष्ण कन्हैया।।
मात शिवा संग समुद्र जय भी, करते नाच नचैया।। श्री नेमकुंवर...

महलों के झरोखों से राजुल, नेमि राजा की राह धरें। होऽऽ-2
कोई उसका शृंगार करें, तो कोई उसकी गोद भरें।।
हाथ में चुड़ी खन-खन खनके, बाजे पग पैजनियाँ।। श्री नेमकुंवर...

छप्पन कोटी यादव आये, सारे देशों से सज धज के। होऽऽऽ-2
ढ़ोलक शहनाई दूल्हे की, अगवानी करती बज-बज के।।
राजुल रानी हुई सयानी, आ गये नेमि सैया।। श्री नेमकुंवर...

बारात बढ़ी जूनागढ़ में, सखियाँ राजुल को तरसायें। होऽऽ-2
वरमाला लेकर के राजुल, अपने मन ही मन हर्षाये।।
माँग भरेंगें नेमि मेरी, लाये लाल चुनरिया। श्री नेमकुंवर...

(8) तर्ज : पैरों में बंधन हैं...

मात शिवा के ललना, निकल पड़े शिवपुर की ओर।-2
शिवरानी से ब्याह करें राजुल जैसी रानी छोड़।। मात शिवा.....

राजुल बोली हे स्वामी !, मैं भी सारे बंधन तोड़।-2
श्वेत शाटिका मैं धारूँ, जेवर लाल चुनरिया छोड़।। मात शिवा.....

सजा सेहरा बने दूल्हे, नेमजी हर्षाये।
कोटि छप्पन यदुवंशी, बराती बन आयें।।
नगाड़े ढोल बजते हैं, फूल सब बरसायें।
करे टीका शिवा माता, आरती सजवाये।।
रथ में बैठे नेमजी, जूनागढ़ की ओर चले।
नर-नारी और-विद्याधर, बाराती बन कर चले।।
श्री किशन कन्हैया आये, बलराम भी झूमे-गाये।
जय नेमि-जय नेमि बोल। मात शिवा.....

पशुओं का करूण क्रंदन, सुना जब स्वामी ने।
तभी वैराग्य था धारा, त्रिभुवननामी ने।।
तभी उतरे प्रभु रथ से, पशु बंधन खोले।
गये गिरनार पे स्वामी, सभी जय-जय बोले।।
उन पशुओं के साथ में, जग के बंधन तोड़ दिये।
ये तो एक बहाना था, गिरनारी रथ मोड़ लिये।।
सौधर्म सहित सुर आये, जिन तप-कल्याण मनायें।
संयम रथ की पकड़े डोर। मात शिवा.....

सुने राजुल मेरे नेमि, मेरे ना हो पाये।
असुँअन धार नयनों से, बहे रोना आये॥
बिलखती है तड़फती है, नहाये असुअन से।
नहीं आधार जीवन का, कहे चिंतित मन से॥
सिंदुर मेरी माँग का, बिन ब्याहे उजड़ा दिया।
नौ जन्मों की प्रीत को, नेमि क्यों विसरा दिया॥
मुझको भी संग ले जाओ, ये जीवन 'सुलभ' बनाओ।
विनती करती हूँ कर जोड़। मात शिवा.....

(9) तर्ज : ये तो सच है की भगवान है...

ये तो राजुल की दरकार है, नेमि नौ जन्म का प्यार है।
कैसे विसरा दिया नेमजी, छोड़ राजुल को मझधार में॥

मेरे साथी हो तुम, मेरे साजन हो तुम।
मेरी खुशियों के भी, स्वामी भाजन हो तुम॥
सूना-सूना तोरणद्वार है, सूना-सूना ये शृंगार है। कैसे.....

पशुओं को बाँधा क्यूँ, उनको तड़फाया क्यूँ।
मेरी खुशियों को हाँ, सबने रौंदा हैं क्यूँ॥
अब क्या जीने का आधार है, झूठा स्वारथ का संसार हैं। कैसे.....

हल्दी तन पे चढ़ी, मेंहदी हाथों लगी।
नेमि के रंग में, भोली राजुल रंगी॥
राजुल नेमि का क्या प्यार है, वो तो चढ़ बैठे गिरनार है। कैसे.....

राजा गिरनार के, चल दिये शिवडगर।
आर्यिका बनके मैं, पाऊँगी शिवनगर॥
करता वंदन 'सुलभगुप्त' भी, माता राजुल को शत बार है। कैसे....

(10) तर्ज : होंठो से छू लो तुम.....

थाली को सजा लूँ मैं मुझे मंदिर जाना है।
पारस प्रभुवरजी के गुण हमको गाना है।।

सर्वज्ञ वीतरागी, प्रभु हित उपदेशी हो।
नासा दृष्टि तेरी, तीर्थंकर वेषी हो।
तव ध्यान लगाऊँ मैं, तुम सम बन जाना है।। पारस प्रभु...

तेरी अमृत वाणी, भव पार लगाती है।
जो डूबने वाले हैं, उन्हें पार लगाती है।
हम आये शरण तेरी, तुम सम सुख पाना है।। पारस प्रभु...

उपसर्ग जयी भगवन, तुम कर्म विजेता हो।
समता रस के धारी, युग के अभिनेता हो।
त्रय 'गुप्ति' के स्वामी, मम मोह मिटाना है।। पारस प्रभु...

(11) तर्ज : आए हो मेरी.....

पारस प्रभु की प्रतिमा है जग में सबसे न्यारी।
दर्शन है कितना पावन-2 सबको है सौख्यकारी।।

पद्मावती ने आकर प्रभु को उठाया सर पर।
धरणेन्द्र फण फैला कर छाया था जिनके ऊपर।
वो दृश्य था निराला उपसर्ग का निवारी।। 2 दर्शन...

मानी कमठ भी हारा था जिनके आगे आकर।
चरणों में गिर गया वो भ्रमजाल को हटाकर।
कर दो 'क्षमा' हे भगवन् हो तुम क्षमा के धारी।। 2 दर्शन...

उपसर्ग जेता बनकर कर्मों को था हराया।
श्रावण की शुक्ला साते को मोक्षधाम पाया।
सबसे अधिक है प्रतिमा पारस प्रभु की प्यारी।। 2 दर्शन...

(12) तर्ज : तेरे आँखों के दो आँसू...

पारस के गुण प्यारे-प्यारे, सारे जग के संकट निवारे।
नित उठ प्रभु गुण गा लेना- गा लेना...।। पारस...

तुमने कष्टों में हंसना सिखाया, मानी का मान भगाया।
हम आयें हैं शरण, तुम हो तारण-तरण।
प्रभु सदा कृपा हम पर करना- हम पर...।। पारस के...

हो अनंत गुणों के धारी, जन-जन के मंगलकारी।
हम पूजा करें नाथ, वाद्य गीतों के साथ।
इस जग से हमको क्या लेना-क्या लेना।। पारस के...

हमने नर तन पाया सुन्दर, मिलते हैं इससे प्रभुवर।
तेरा नश्वर है ये तन, कर लो पावन जीवन।
'क्षमा' भाव हृदय में धर लेना-धर लेना।। पारस के...

(13) तर्ज : अच्छा सिला दिया तूने...

भक्ति करें पारसनाथ, तेरे धाम की
गुण गायें माला फेरे, तेरे नाम की। भक्ति करे...2।।

1. वाराणसी नगरी में जन्म लिया था।
   मात-पिता को धन्य किया था-2।
   जय-जय बोलें प्रभु तेरे नाम की-2 ।। गुण गायें...

2. चिन्तामणि प्रभु पार्श्व कहायें।
   हर प्राणी का कष्ट मिटायें-2 ।
   क्षमाधारी, चिन्तामणि पारसनाथ की-2।। गुण गायें...

3. नाग नागिन पे दया दिखलाई।
मंत्र नवकार की महिमा बताई–2 ॥
राह दिखाई प्रभु तप त्याग की–2 ॥ गुण गायें...

4. पार्श्वप्रभु की महिमा निराली।
संकटहारी जग उपकारी–2॥
जाप जपे 'आस्था' प्रभु नाम की–2 ॥ गुण गायें...

(14) तर्ज : ये धरती चाँद–सितारे...

उपसर्ग को जीतने वाले, वामादेवी के दुलारे।
दुखड़ों को नशाओ हमारे, आये हैं तेरे द्वारे॥
जयकार लगाये, तेरे द्वार पे आये, मेरे पार्श्वप्रभु।
तेरा शरणा लिया, जीवन सफल हुआ।–2

जलती लकड़ी चीरकर, नाग युगल पर की दया।
प्रभुवर को छोटा समझ, तापस सोच में पड़ गया॥
णमोकार का पाठ सुन, नाग और नागिन धन्य हुए।
पद्मावती धरणेन्द्र बने, प्रभु की रक्षा में लगे॥ जयकार लगाये.....

प्रभु के तप और ध्यान में, डाल कमठ ने बाधायें।
पूर्व भवों का वह वैरी, शोले पत्थर बरसाये॥
अवधिज्ञान से पता लगा, जान प्रभु की बाधाऐं।
धरणेन्द्र पद्मावती, प्रभु को फण पर बैठायें॥ जयकार लगाये.....

हे कचनेर नगर वाले, चिंतामणी पारस बाबा।
जिंतुर जटवाड़ा वाले, हरते दु:ख संकट बाधा॥
अतिशयकारी पार्श्वप्रभु, मेरा भी उद्धार करो।
'चन्द्रगुप्त' के जीवन में, रत्नत्रय भंडार भरो॥ जयकार लगाये.....

(15) तर्ज : नानी तेरी मोरनी को...

बाबा तेरे भक्त कचनेर आ गये।
जय पारस की जय पारस की गीत गा रहे।।

जय पारस की जय पारस की, जो भी कहता जायेगा।
चिंतामणि के चरणों में, चिंता हरता जायेगा।। बाबा...

बाबा तेरे चरणों में, आते दुखियारे।
लेकिन जब भी वापस जाते, होते सुखियारे ।। बाबा...

गेहूँ के जैसा है तेरा, रंग न्यारा-न्यारा।
तेरा दर्शन पाकर बाबा, हरषे जी हमारा ।। बाबा...

घी शक्कर से जुड़ने वाले, महिमा तेरी न्यारी है।
महिमा की तो बातें छोड़ो, मूरत मनहारी है ।। बाबा...

बाबा मेरे प्यारे-प्यारे, सबके मन में बसते हो।
भक्तों को तुम ऐसे लगते, जैसे हँसते रहते हो।। बाबा...

ओ काशी नगरी के राजा, राजे कचनेर में।
बज रहे हैं ढोल नगाड़े, बाजे कचनेर में ।। बाबा...

गुप्तिनंदी गुरुवर आये, लेकर अपना संघ हैं।
'चन्द्रगुप्त' भी आया बाबा, श्री गुरुवर के संग में।। बाबा...

(16) तर्ज : मेरे पारस बाबा...

मेरे पारस बाबा करते ना देर हैं।
आओ चिंता ये हरेंगे चाहे ढेर है।।
ये हैं चिंता हरने वाले, चिंतामणी रखवाले।
इनके चरणों में नहीं अंधेर हैं।
ये तीरथ पारसनाथजी का कचनेर हैं, ये तीरथ पारसनाथजी का कचनेर हैं।

मणि युगल ये बाबा मेरे चिंतामणी पारसमणी।
पारस लोहा सोना करता पर ये करते पारसमणी।
बाबा अतिशय वान, अतिशयों की खान।–2
यहाँ करें अतिशय सैर हैं।। ये तीरथ.....।।

बाबा दक्षिण के निराले दूसरे महावीरजी।
दोनों टीलों पर झरायें गाय धारा क्षीर की।।
वो भी टीले वाले बाबा, ये भी टीले वाले बाबा।–2
इनकी महिमा में कुछ ना फेर हैं।। ये तीरथ.....।।

तुम बनारस के हो पारस हम बनारस क्यूँ चले।
हमको तो कचनेर प्यारा, हम यहीं फूले फलें।।
बोलो जय कचनेर बनारस बोलो जय पारस जय पारस।–2
चाहे शाम हो चाहे सवेर हैं।। ये तीरथ.....।।

बाबा तेरा दर्श पाने भक्त आये दूर से, कोई पैदल कोई दल बल ले के आये दूर से।
गूँगा मीठा–मीठा बोले, अंधों की अखियाँ तू खोले।
लंगड़ा भी तेजी से दौड़े, बहरा भी बहिरापन छोड़े।। होऽऽ बाबा तेरा दर्श....
निर्धन को धनवान बनावे, बाबा सूनी गोद भरावे।–2
करते भक्तों की किस्मत फेर हैं ।। ये तीरथ.....।।

कुंथुसागर गुरु पधारें, बनवायें ये सुंदर शिखर।
गुप्तिनंदी गुरु करायें, कलशारोहण इसी शिखर।।
देवनंदि गुरु भी आये, छत्र सिंहासन बनवाये।
गुरु कृपा से ये सभागृह और पाण्डुकगिरी बन जाये।।
संविधान पट्ट चाँदी का रथ, गुप्तिनंदि गुरु सजवायें।
श्री कचनेर कथा फिल्मांकन, मुनि प्रसन्नऋषि रचवायें।।

जो जो गुरुवर यहाँ पधारें, तीरथ की तकदीर सुधारें।–2
लाखों तीरथ में तीरथ एक हैं ॥ ये तीरथ.....॥

पार कैसे बाबा पारस, तेरे रस का हम करें।
लेखनी भी सोचती हैं, क्या लिखें क्या कम करें॥
बाबा 'चन्द्रगुप्त' को वर दो, हमको अपने जैसा कर दो।–2
बोलो जरा भला क्या देर हैं॥ ये तीरथ.....॥

(17) तर्ज : सुनो सुनो रे...

सुनो–सुनो रे गीत सुनो ये, श्री कचनेर महान के।
सुनो कथानक चिंतामणी श्री, पार्श्वनाथ भगवान के॥
बड़े अनोखे बड़े निराले, अतिशय अतिशयवान के।
सुनो कथानक चिंतामणी श्री, पार्श्वनाथ भगवान के॥
जय–जय–जय चिंतामणी, जय–जय–जय पारसमणी।–2

1. धरती माता धन्य हुई, जिसके अंदर प्रभु रहे।
धन्य गाय भी वो जिसका, टीले ऊपर दूध बहे॥
संपतराय की दादी का, सपना सब साकार हुआ।
टीले से जब बाबा निकले, सबको हर्ष अपार हुआ॥
बन बये बाबा हर जन–मन के, प्यारे–प्यारे प्राण के।
सुनो....

2. बाबा का धड़ अलग हुआ, इक भारी अविवेक से।
सारी जनता रो रही, ये दुर्घटना देख के॥
घी शक्कर में रख बाबा को, तालों में था बंद किया।
तालों में थे बंद प्रभु पर, णमोकार ना बंद किया॥
तुड़ गये ताले जुड़ गये बाबा, प्राण बने निष्प्राण के।
सुनो.....

3. गणधर गुरु कुंथुसागरजी, आये प्रभु के दर्शन को।
सजा दिये ज्यों चाँद सितारे, तीरथ के आकर्षण को॥
बिना मुकुट के राजा जैसा, ये मंदिर था बिना शिखर।
शिखर गगन चुंबी बन वायें, गुरुवर पाने लोक शिखर॥
कथानकों से जुड़े कथानक, कुंथु गुरु के नाम के।
सुनो.....

4. देवनंदि गुरुदेव पधारे, द्वारे पारस देव के।
धन्य बनूँ मैं कब बाबा को, पांडुकशिला पे देख के॥
पांडुकगिरी निर्माण कराकर, ये उलझन वे सुलझाये।
रत्नजड़ित सुंदर सोने के, छत्र सिंहासन सजवाये॥
गाये गीत सभा गृह सुंदर, देवनंदि के नाम के।
सुनो.....

5. गुप्तिनंदी गुरुदेव करायें, सर्वप्रथम कलशारोहण।
बनवायें गुरु महाशिखर तो, शिष्य करें ध्वज का रोपण॥
गुरुवर रत्नत्रय विधान की, धूम यहाँ पर मचवायें।
बजे घंटियाँ जिसमें ऐसा, चाँदी का रथ रचवायें॥
संविधान पट्ट चुनाये यहाँ, आर्ष विधि के नाम के।
सुनो.....

6. मुनि प्रसन्न ऋषि नाम है जिनका, प्रसन्न रहना काम है।
फिल्मांकन कचनेर कथा के, प्रेरक गुरु महान् है॥
जो फिल्मांकन आज अभी तक, कोई नहीं करा पाया।
बाबा का इतिहास इसी में, पूर्ण रूप से दरशाया॥
श्री कुशाग्रनंदि के नंदन, प्रेरक इस अभियान के।
सुनो.....

7. गूँगा वाणी पाता हैं और, अंधे को दिख जाता है।
जो बाबा का दर्श करे वो, बहरा भी सुन पाता है॥
बाबा तुमको नमस्कार कर, चमत्कार हो जाते है।
इसिलिए हम बाबा तुमको, चिंतामणी बताते है॥
'सुलभगुप्त' में दीप जलाओ, बाबा केवलज्ञान के॥
सुनो कथानक चिंतामणी श्री, पार्श्वनाथ भगवान के॥

जय.....

(18) तर्ज : मैया मोरी मैं नहीं...

वीरा मोरे निरखत मन हर्षायो, महावीरा मोरे जब तुम दर्शन पायो।
मति श्रुत अवधि ज्ञान के धारी-2, बाल रूप धर आयो॥ वीरा...
स्वर्ण रूप सुन्दर मनमोहक-2, जन-जन के मन भायो॥ वीरा...
कण्ठमाल मुन्दर करधोनी-2, ठुमक-ठुमक हरखायो॥ वीरा...
पग पैजनिया पहन छमा-छम-2, छम-छम नाचत आयो॥ वीरा...
रत्न धूरि से भूषित वीरा-2, मैया उर लिपटायो॥ वीरा...
सिद्धारथ नृप अंगुली पकड़े-2 पग-पग वो चल आयो॥ वीरा...
खेलत कूदत सब बालक को-2, साहस पाठ सिखायो॥ वीरा...
'गुप्ति' के प्रभु वीर जिनेश्वर-2, बाल रूप मन भायो॥ वीरा...

(19) तर्ज : जहाँ डाल डाल पर...

श्री वर्धमान के समोशरण में, हो सन्मार्ग उजेरा
है वन्दन उनको मेरा...2
यहाँ दिव्य ध्वनि और पुण्य कर्म का, जमकर लगता डेरा
है वन्दन उनको मेरा...2

चऊ घाति करम का क्षय कर के, प्रभु केवल दृष्टि पाई- प्रभु...2
छह साठ दिवस तक तीन लोक ने, दिव्य बोधि ना पाई-दिव्य...2
प्रभुवर की दिव्य ध्वनि खिरवाऊँ, इन्द्र कहे प्रण मेरा।।
है वन्दन उनको मेरा...2

जहाँ इन्द्र-नरेन्द्र-मृगेन्द्र सभी, मिल सम्यग्दर्शन पायें। मिल....
जिन स्याद्वाद व अनेकांतमय, अमृत वृष्टि करायें-अमृत....
प्रभु-इन्द्रभूति से मानी का, क्षण में तुमने मन फेरा।।
है वन्दन उनको मेरा...2

श्री वीर वचन 'गुप्ति' को साधे, निज आतम को ध्यायें। निज...
अब कौन हमें भव पार करेगा, सबका मन अकुलायें-सबका...
गौतम गणधर के आते ही, आया वह काल सुनहरा।।
है वन्दन उनको मेरा...2

(20) तर्ज : रूक मजनू-रूक मजनू...

जय वीरा-जय वीरा जय-जय-जय-जय जय वीरा-2
आज मुझे प्रभु दर्शन दो, दर्शन दो-दर्शन दो।
आज मुझे प्रभु दर्शन दो मुझे मुक्ति पथ उपहार दो।
त्रिशलानंदन दर्शन देकर-2 भव सागर से तार दो। जय वीरा.....

आया तेरे द्वारे, ओ त्रिशला के प्यारे।
आप प्रभुवर सारी दुनियाँ की आँखों के तारे।
झूठी माया छोड़ दूँ मैं, भक्ति रंग में रंग जाऊँ मैं।
मुक्ति-भक्ति-शक्ति-बुद्धि शील गुणों का हार दो।। जय वीरा.....

जीऊँ मैं तेरे सहारे, मरण हो तेरे द्वारे।
दूर से आया तेरे द्वारे, मुझको अब क्यूँ टारे।
दुःखड़े मेरे मिटा प्रभुवर, 'चन्द्र' शरण में आया जिनवर।
वीरा तेरे द्वारे आये, हमको मुक्ति द्वार दो।। जय वीरा.....

(21) तर्ज : तु कितनी अच्छी है...

हो ऽऽवीर, महावीर, होऽऽवीर, महावीर
तू महावीरा है, तू सन्मति वीरा है, तू अतिवीरा है। हो ऽऽवीर...

हे प्रभु ! जब तुम गर्भ में आये।–2
इन्द्र कुबेर सजाये नगरी वर्धमान गुण गायें।।
माँ हर्षाये रे, सुर गण आये रे, जय–जय गाये रे। हो ऽऽवीर...

ओ त्रिशला के सन्मति प्यारे–2
धन्य हुई कुण्डलपुर नगरी, तेरा रूप निहारे।
तू लगता चंदा है, तू लगता सूरज है, नयन सितारा है। हो ऽऽवीर..

अतिवीरा ने दीक्षा धारी–2
सिद्धारथ सुत शंख बजायें, जैन धर्म का भारी।
तू तारणहारा है, तू संकटहारा है, जग में न्यारा है।। हो ऽऽवीर...

वीरा घाति कर्म नशायें–2
समोशरण में बैठे वीरा, केवलज्योति पायें।
तू गुण भण्डारा है, नहीं विस्तारा है, अगम अपारा है। हो ऽऽवीर...

जय महावीरा शिवपुर जायें।–2
'चन्द्रगुप्त' भी प्रभु चरणों में, शिवपुर राज उपाये।
तू सुख का द्वारा हैं, जगत का प्यारा है, वीर हमारा है।
होऽऽवीर, महावीर होऽऽवीर, महावीर।

(22) तर्ज : मेरे वीर प्रभु तुम्हें...

वीर प्रभु तुम्हें ध्याऊँ मन से, पाप कटे प्रभु दर्शन से।
जय महावीरा रटते, नाम सुमरते–भजते–2

मेरे प्राण निकल जाये इस तन से।
मेरे वीर प्रभु तुम्हें.....

कुंडलपुर में जन्मे स्वामी, आये सिद्धारथ अंगना।
सारी नगरी लगती प्यारी, स्वर्गों से सुंदर रचना॥
ऐरावत गज लाये, प्रभु का न्हवन कराये
सारे देव सुमेरू पर्वत पे॥ मेरे वीर...

आठों कर्म नशा कर जिनवर, आप गये मुक्तिपुर में।
ले लाडू के थाल प्रभु, आये हम पावापुर में॥
'चन्द्रगुप्त' भी आये, जीवन सुलभ बनाये।
बन जाये प्रभु सम दर्शन से॥ मेरे वीर...

(23) तर्ज : दीदी तेरा देवर दिवाना... (पालना)

पालना प्रभु का झुलाना, वीरा जयंती है मनाना-2।
चैत सुदी तेरस थी प्यारी, जन्मे इस जग के त्रिपुरारी-2॥

रेशम की डोरी से पलना सजायें।
हीरे और पन्ना भी उसमें लगायें।
झूले में प्रभु को झुलाना-2 वीरा जयंती है मनाना-2॥ पालना...

बालक प्रभु की अदायें निराली।
देवों ने आकर बजाई है ताली।
जयकारा वीरा का लगाना-2, वीरा जयंती है मनाना॥ पालना...

त्रिशला माता ने झूले को झुलाया।
राजा सिद्धारथ ने उर से लगाया।
सारा जग है तेरा दिवाना-2, मुक्ति का 'राज' है पाना-2॥ पालना...

(24) तर्ज : जिंदगी इक सफर है..... (पालना)

पलना प्रभुवर का झुलाना, हीरे-मोती से सजाना-2
रेशमी डोर से खीचेंगे आगे, फिर पलना पीछे भागे।
इसे आगे पीछे झुलाना, सन्मति का मन बहलाना-2॥ पलना...

छोटा सा वीरा प्यारा, लगता है जग मनहारा।
इसे कोई नजर न लगाना, मेरे वीरा को ना रुलाना-2॥ पलना...

त्रिशला माँ लोरी गाये, पितु सिद्धार्थ भी हर्षाये।
'क्षमा' कहे खुशी है मनाना, प्रभुवर के गुण हमें गाना-2॥ पलना...

(25) तर्ज : डोली सजाके रखना...

त्रिशला का प्यारा ललना, सुर नर झुलाये पलना।
झुला झुलाने प्रभु को, हमको भी आज चलना॥
ऽऽओऽऽ आ ऽऽआ... त्रिशला का....

झुले में वीर सोये, सबके हृदय को मोहे।
त्रिशला खुशी से बोली, झुला झुलाऊँ तोहे॥
हर्षित है लाल मेरा, तुझको सुनाऊँ लोरी।
रत्नों झड़ित है पलना, रेशम की लागी डोरी॥
सिद्धार्थ राजा बोले, में भी झुलाऊँ पलना...झुला...

माथे पे प्यारा टीका, कानों में तेरे कुंडल।
हाथों में बाजुबंद है, मुखड़ा है चन्द्र मंडल॥
किरीट लगाऊँ प्रभु को, माणिक्य मोतियों का।
रत्नों का हार सुंदर, प्रभु के गले की शोभा॥
प्रभु के चरण में आकर, निज को न अब तू छलना-झूला...

रूनझुन करधनी बाधी, पाँवों में तेरे पायल।
प्रभु बाल रूप लखकर, हो जाता मन ये घायल॥
महावीर वीर भगवन, सिद्धार्थ के दुलारे।
चरणों में करते वंदन, सूरज ये चाँद तारे॥
'आस्था' का दीप लेकर, मुक्ति की राह चलना...
झुला झुलाने.....

(26) तर्ज : चूड़ी जो खनकी...

वीरा जयंति देखो आज है छाई खुशियाँ अपरम्पार।
जय-जय वीर प्रभु...॥
चैत सुदी तेरस के दिन माँ त्रिशला से जन्म हुआ।
सिद्धारथ भी धन्य हुए कुण्ड ग्राम में हर्ष हुआ।
जन्म की छाई है बहार रे गाये घर-घर मंगलाचार॥
जय-जय वीर प्रभु...
रत्न जड़ित है पालना मुतियन की है झालना।
वीरा झूले पालना लगता जो मन भावना।
'क्षमा' को हर्ष अपार रे लिया वीर प्रभु अवतार॥
जय-जय वीर प्रभु....

(27)

झीनी-झीनी रे उडी रे गुलाल, चालो रे नगरिया में
चालो रे नगरिया में-4
बरसे रत्न अपार, चालो रे नगरिया में
वीर प्रभुजी गर्भ में आये, सुर-नर सब मिल मंगल गाये-2
त्रिशला माँ के द्वार॥ चालो रे...

पन्द्रह मास रत्न बरसे थे, नर-नारी के मन हरषे थे-2
खुशियाँ अपरम्पार।। चालो रे...

रोग-शोक ने मुखड़ा मोड़ा, सुख-शांति ने नाता जोड़ा-2
हो रही जय-जयकार।। चालो रे...

निर्धन जन को धन मिल जाये, खुशियाँ सबके मन बस जाये-2
सिद्धारथ दरबार।। चालो रे...

'क्षमा राज' शिव सुख को पायें, नृत्यगान से भक्ति रचाये-2
वीर प्रभु मनहार।। चालो रे...

(28) तर्ज : मैं निकला गड्डी लेके...

महावीरा, अतिवीरा, त्रिशला के हो नंदन
प्रभु द्वार आया, बंधन तोड़ आया-2
जय बोले, प्रभु तेरी, भक्ति से
प्रभु द्वार आया, बंधन तोड़ आया।। महावीरा अतिवीरा

लख चौरासी चक्कर खायें, इक क्षण भी शांति नहीं मिली।
हर जगह मिली ठोकर मुझको, कहीं भी ना मुझको शरण मिली।
मैंने जाना, ये माना, इस जग में, प्रभु एक साया।। बंधन...

ये जीवन तो दीपक जैसा, कब बुझ जाये मालूम नहीं,
संकटमोचन संकटहारी, प्रभु मार्ग दिखा दो आज सही,
मैं भटका भव वन में, जंगल में, शुभ भाव आया।। बंधन...

तू ही पूनम का चंदा है, तू ही दिनकर की ज्योति है,
तू ही फूलों की खुशबू है, तू ही माला का मोती है,
'आस्था' को मिल जाये, चरणों की ये धुली, ये आश लाया।।
बंधन तोड़ आया..... महावीरा.....

(29) तर्ज : हंसाता है यही रुलाता है यही...

प्रभु वीरा को पुकारे हर कोई।
गुण वीरा के गाये हर कोई।।
पुण्य कमायेंगे, पाप नशायेंगे-2।।

गर्व मानी का गल जाता है।
दर्शन तुम्हारे जो भी पाता है।।
तेरी मूरत ही पुण्य बढ़ाती है।
कर्मों से मुक्ति दिलवाती है।।
इनके चरणों में आये हर कोई।। प्रभु वीरा...

तेरा संदेशा अति प्यारा है।
देता जो सबको सहारा है।।
तुमने अहिंसा बताई है।
तेरे चरणों में 'आस्था' आई है।।
वीरा प्रभु को ध्याये हर कोई।। प्रभु वीरा...

(30) तर्ज : ना कजरे की धार...

छाया दु:ख जग में अपार, प्रभु तुम ही तारण हार।
मैं नमन करूँ शत बार, जय-जय तीर्थंकर महावीर-2।

सिद्धारथ राजदुलारे, माता त्रिशला के प्यारे।
जीवों के संकट हारे, महावीर के गुण हैं न्यारे।
मुक्ति जाये, शांति पाये-2, सब भक्ति कर लो आज।। छाया दु:ख...

कर्मों ने आकर घेरा, छाया चहुँ ओर अंधेरा।
मैं किसकी शरण में जाऊँ, प्रभु कोई नहीं है मेरा।
स्वारथ की, सारी दुनियाँ-2, शरणा दे दो प्रभु आज।। छाया दु:ख...

तेरी महिमा है न्यारी, प्रभुवर की मूरत प्यारी।
तुम ज्ञान किरण दातारी, सन्मति देवा उपकारी।
'आस्था' आये, शीश झुकाये-2, दे दो प्रभु आशीर्वाद॥ छाया दु:ख...

(31) तर्ज : धरती की शान तु है...

जय गोम्मटेश कहो, जय गोम्मटेश-2
आदिनंदन की-2 मिलके जयकार करो रे।
जय आदिनाथ लाल कहो रे, श्री गोम्मटेश आदिनाथ लाल कहो रे॥

नीलकमल के जैसे आँखें हैं प्यारी,
उन्नत ललाट तेरी आभा निराली,
घुँघराले केशों की शोभा है न्यारी
चरणों से मुखड़े तक मूरत है प्यारी
विंध्यगिरी नाथ-2 तेरी प्रतिमा विशाल
प्रभु चरणों में-2 आओ खाली झोली भरो रे... जय आदिनाथ...

घुटने तक जाये है, जिनकी हथेली,
पूजा करे जैसे फूलों की बेली
जैसे छुए नभ को मूरत ये तेरी,
वैसी ही कीर्ति हैं, नभ में भी तेरी
झुका रहे शीश-2, पाने तेरा आशीष
मेरी कामना-2, हे गोम्मटेश ! पूर्ण करो रे... जय आदिनाथ...

ओ माँ सुनंदा के राजदुलारे,
ओ आदिबाबा की आँखों के तारे
इक बार अभिषेक हम तेरा पायें,
हम सब श्रवणबेलगोला को जायें
'चन्द्रगुप्त' आय-2, तेरा गुणगान गाय,
प्रभु विनती ये-2, भक्तों की आज सुनो रे... जय आदिनाथ...

(32) तर्ज : रात कली इक...

बाहुबली के दर्शन आये, नैन विराजो बाहुबली।
एक बार जो तुमको निहारे, क्षण-क्षण पुकारे बाहुबली॥
बाहुबली के.....

आदि प्रभु के पुत्र निराले, मात सुनंदा प्यारे।
सवा पाँच शत धनु की काया, जन-मन के मनहारे॥
केवलज्ञानी, अन्तर्यामी, हृदय विराजो बाहुबली।
बाहुबली के.....

माता की आशा पूर्ण कराने, गुरु शरण में आये।
विंध्यगिरी में मूर्ति मनोहर, चामुण्डराय बनाये॥
गोम्मटेश को वंदन करके, खिल जाती है कली-कली।
बाहुबली के.....

गोल-गोल दो कपोल जिनके, मुखमण्डल मनहारी।
नीलकमल के दल सम जिनके, नैन युगल सुखकारी।
भक्त ये आये पुण्य कमाये, शोर मचाये गली-गली।
बाहुबली के.....

पुण्य उदय से दर्शन पाये, पूजा आरती गाये।
गान नृत्य भक्ति करने को, 'राजश्री' गुरु संग आये॥
जग के विधाता आनंद दाता, आनंद देते बाहुबली।
बाहुबली के.....

(33) तर्ज : हे राम ऽऽऽऽऽ....

गोम्मटेश ऽऽ गोम्मटेश ऽऽ गोम्मटेश ऽऽ गोम्मटेश ऽऽ
श्री आदिनंदन, सुनंदा वंदन–2
बाहुबली का, करें अभिनंदन–2
भ्रात भरत चक्रेश।। गोम्मटेशऽऽ...
विंध्यगिरी की, प्रतिमा निराली।–2
उपमा प्रभु की, जग में है आली–2
घुंघराले प्रभु केश।। गोम्मटेशऽऽ...
हिमगिरि जैसा, मस्तक ऊँचा–2
भक्तजनों को, उसने खींचा–2
नयन धरे मुनिवेष।। गोम्मटेशऽऽ...
गोल कपोल, कर्ण अति प्यारे।–2
ओठ लगे कि, वचन उच्चारे।–2
कीर्ति देश–विदेश ।। गोम्मटेशऽऽ...
त्रिवली वाला, कण्ठ मनोहर।–2
करूणा दया का, हृदय सरोवर।–2
अजान बाहु विशेष।। गोम्मटेशऽऽ...
तनु मध्य नाभि, मध्यलोक सम है।–2
प्रगति के सूचक, उरू पाद द्वय है।–2
देते तप संदेश ।। गोम्मटेशऽऽ...
चरण कमल में, अर्घ चढ़ायें।–2
ढोल मंजीरा, वाद्य बजायें।–2
नाश करें, भव क्लेश ।। गोम्मटेशऽऽ...
गुप्तिनंदी गुरुवर, संघ लेके आये।
बाहुबली गाथा, 'राजश्री' भी गाये।
सर्व सुलभ गोम्मटेश।। गोम्मटेशऽऽ...

(34) तर्ज : मैं तो शादी करूँगी.....

बाहुबली नाम जग में निराला
मुक्तिपुरी का खोले जो ताला
आके शरण में वन्दन करेंगे, हम तो कीर्तन करेंगे-2

ढोलक बजायेंगे, घुंघरू बजायेंगे
ताली बजा के करते नमन।
चरणों में आयेंगे शीश झुकाऐंगे
बाहुबली हैं तारण-तरण।।
प्रभु नाम हर पल जपते रहेंगे, हम तो....।।

भक्ति रचायेंगे झूमेंगे गायेंगे,
हो जायें मेरे पाप शमन।
चरणों में आयेंगे तुमको ही ध्यायेंगे।
'राजश्री' पा जाये मुक्ति सदन
भक्ति की शक्ति से भव से तिरेंगे, हम तो....।।

(35) तर्ज : पंछिडा रे...

पंछिड़ा होऽऽ पंछिड़ा-2
पंछिड़ा तू उड़ के जाना बेलगोल रे
बाहुबली से कहना तेरे भक्त आ रहे।

ओ मेरे जिनवर के दर्शन को जल्दी आओ रे,
मेरे प्रभु के अभिषेक को जल्दी आओ रे,
जल लाओ-चंदन लाओ-घृत लाओ रे-2
दूध दही का कलशा शीश ढारो रे।। पंछिड़ा...

ओ मेरे जिनवर की पूजन को जल्दी आओ रे,
मेरे प्रभु की पूजन को अष्ट द्रव्य लाओ रे,
चंदन लाओ-अक्षत लाओ-पुष्प लाओ रे-2
सुंदर नैवेद्य की थाल लाओ रे।। पंछिड़ा...

मेरे जिनवर का गुणगान पुण्य बढ़ाता,
यश कीर्ति सुख वैभव का कोष बढ़ाता,
दीप लाओ-धूप लाओ-फल लाओ रे-2
मनहारी मूरत को अर्घ लाओ रे।। पंछिड़ा...

मेरे जिनवर का दर्श पाप-ताप नाशता,
जिन दर्शन से खुलता है मोक्ष रास्ता,
ध्वजा लाओ-घंटा लाओ-तोरण लाओ रे-2
मंदिर के शिखर पर ध्वज चढ़ाओ रे ।। पंछिड़ा...

सभी जिनवर के दर्शन को तीर्थ आओ रे,
तीर्थ क्षेत्रों का भावों से दर्श करो रे,
गोम्मटगिरी, विंध्यगिरी, धर्मस्थल रे-2
'क्षमा राज' बाहुबली को नमन करे ।। पंछिड़ा...

(36) तर्ज : नीले गगन के...

नीले गगन के तले, बाहुबलीजी खड़े
विशाल काया दर्शन पाया, मन मेरा हर्ष भरे...
नीले गगन के.....

केश घुँघराले, सबसे निराले, छवि अनोखी धरे-2
नीले गगन के.....

नयन सुलोचन, कमल विलोचन, दृष्टि नाशाग्र करें-2
नीले गगन के.....

अधर लगे कि, कमल पांखुरी, मन्द मुस्कान भरे-2
नीले गगन के.....

विस्तृत कंधे, लम्बी भुजायें, अजानबाहु धरें-2।
नीले गगन के.....

कटि निराली, त्रिवली वाली, त्रिलोक रूप धरे-2
नीले गगन के.....

सुदृढ़ जाघें, प्रेरणादायी, संयम साधे खड़े-2
नीले गगन के.....

पावों में प्रभु के, बाँबी बनी हैं, कुक्कुट सर्प चढ़े-2
नीले गगन के.....

विंध्यगिरी के, प्रभु निराले, जन जन मोद भरें-2
नीले गगन के.....

'क्षमा' प्रभु को, शीश झुकायें, जीवन सफल करे-2
नीले गगन के.....

(37) तर्ज : अच्छा सिला दिया...

गोम्मटेश बाहुबली तुमको प्रणाम
प्रभु दर्शन करें सुबह और शाम
गोम्मटेश बाहुबली.....

गोम्मटेश के दर्शन पाये ।
मेरा मन फूला न समाये ।।
प्रभु चरणों में आये करे गुणगान..... गोम्मटेश

रुप आपका अतिशय कारी।
मैं बन जाऊँ चरण पुजारी।।
प्रभु के गुणों का करें कैसे बखान..... गोम्मटेश

नख और केश लगे मनहारी।
सौम्य छवि ही तारणहारी।।
बाहुबली प्रभुवर जग में महान..... गोम्मटेश

नयन सुलोचन लंबी भुजायें।
चरण कमल प्रभु हमको लुभाये।।
'आस्था' भी पाये निर्मल ज्ञान।
गोम्मटेश बाहुबली तुमको प्रणाम।।

(38) तर्ज : दिल लूटने वाले जादूगर...

जिनवर का ध्यान लगा बन्दे, तुमको निज सुख यदि पाना है।
परमातम ध्यान लगा बन्दे, रत्नत्रय निधि को पाना है।।

कहीं लोभ कषायें घेर न ले, इस ध्यान के स्वर्णिम अवसर में।
कहीं मद और माया रोक न ले, इस ज्ञान के पावन कुछ क्षण में।
सब छोड़ दे-2 जग के बंधन को, जग अपना नहीं बेगाना है।
जिनवर का.....

कई जन्म तुझे नरभव के मिले, पर व्यर्थ ही उन्हें गंवाया है।
बचपन अज्ञान अवस्था में, खेलों में खूब बिताया है।
अब ज्ञान से-2 खुद को भरता चल, तुझे मोक्ष महापद पाना है।
जिनवर का.....

यौवन की तरुण अवस्था में तू, विषय भोग में व्यस्त रहा।
यह सुत नारी सब स्वारथ के तू, इनसे हर क्षण त्रस्त रहा।
आने दे-2 रुग्ण अवस्था अब, सब ज्ञात तुझे हो जाना है ।।
जिनवर का.....

जब आई वृद्ध अवस्था है, तो जर-जर हुआ बदन तेरा।
मंदिर ले जाना दूर रहा, कोई ध्यान नहीं देता तेरा।
'गुप्ति' का-2 पालन नहीं किया, अब रो-रो कर मर जाना है।
जिनवर का.....

(39) तर्ज : संसार है इक नदिया...

जिनराज है इक नैया, ये तारण हारे हैं।
अब ले-ले शरण इनकी, ये जग के सहारे हैं।।

गिरते हुए आतम को, उत्थान की लय में ले।...2
निज ध्यान में निज धुन में, उत्थान की हर लय है।...2
निज भाव से जिनवर को, हम आज पुकारेंगें।। अब ले...

एक काम ये जीवन में, अब तक ना किया हमने।...2
आतम के संग नहीं, इन्साफ किया हमने ।...2
उत्थान हो आतम का, वह भाव जगायेंगे।। अब ले...

श्रुत ज्ञान ही थोड़ा सा, वह भाव जगायेगा।...2
चारित्र ही आतम का, इन्साफ करायेगा।...2
'गुप्ति' मय चिन्तन कर, सद्ज्ञान जगायेंगें।। अब ले...

(40) तर्ज : बाबुल की दुआएँ लेती जा...

हर क्षण की जाती घड़ियों में, मिलती है तुम्हारी सीख मुझे।
नहीं माँग रहा कुछ भी मैं तो, दर्शन की है दरकार मुझे।।

मेरे अन्तर्मन में आके कभी, जीवन में उजाला कर देना।
घनघोर अन्धेरे में हूँ मैं तो, वहाँ ज्ञान उजाला भर देना॥
तुम इच्छा पूरी करते हो, अब क्यों है भला इन्कार मुझे।
हर क्षण की ये जाती .....

कई बार तुम्हारा दर्श मिला, पर मूल्य न उसका जान सका।
मैं विषय कषायों में उलझा, पर को ही अपना मान रहा।
जिन से निज दर्शन पा जाऊँ, इस बार करो स्वीकार मुझे॥
हर क्षण की ये जाती .....

आकर के सहारा देना प्रभो, मेरी नैया पार लगा देना।
मैं पाल महाव्रत मोक्ष चलूँ, मुझे इतनी शक्ति दे देना।
'गुप्ति' से मुक्ति मिलती है, तेरी वाणी पर विश्वास मुझे॥
हर क्षण की ये जाती .....

(41) तर्ज : इंजन की सीटी में...

मंदिर की घंटी में म्हारो मन डोले-2
सगला चालो रे-2 भाया मंदिर होले-2

बड़े सबेरे घंटा बाजे और नगाड़ा बाजे।
बच्चे-बच्चे पूजन करते, झूम-झूम के नाचे॥ सगला...

द्रव्य भाव मय पूजा प्रभु की, करे जगत कल्याण।
निज आतम की शुद्धि होवे, होता निज उद्धार॥ सगला...

सब जीवों को शांति देती, अर्हंतों की पूजन।
'गुप्ति' को मुक्ति मिल जाये, यही करूँ मैं चिन्तन॥ सगला...

(42) तर्ज : घर से निकलते ही...

जग से बिछड़ते ही, माया को तजते ही। दर्शन प्रभु के मिले।
पापों से बचते ही, गुरुओं को भजते ही, शिवपुर की राह चले॥ जग...

स्वार्थ भरा है ये जग सारा, जैसे सागर का जल खारा।
झूठेपन का मान बढ़ाता, सच्चाई का सर है झुकाता॥
झूठे जगत के ये, बंधन के कटते ही, गुरुओं की शरणा मिले।
जग से बिछड़ते ही...

सुख के साथी सब बन जाते, दुःख में कोई काम ना आते।
ये सब साथी झूठे-झूठे, अपने सारे सद्गुण लूटे॥
ऐसे साथी की, संगति कर दो तो, अंत में हाथ मले।
जग से बिछड़ते ही...

जिन आगम जिनदेव गुरुवर, ये ही सच्चे सुख की धरोहर।
इनकी भक्ति भक्तों को दे, आतम सुख का सुंदर सरोवर॥
भगवन तुम्हारी ही, भक्ति की फुलवारी, मन में 'सुलभ' के खिले।
जग से बिछड़ते ही...

(43) तर्ज : गरबा...

रंगमा रंगमा रंगमा रे प्रभु थारा ही रंग मा रंगी गयो रे।

आया दिवस ये मंगल पावन श्री जिन का दर्शन मन भावन॥
जिनवर की भक्ति रचाय रह्यो रे।...प्रभु

गाओ भजन परमातम नाम का, आदि प्रभु से महावीर नाम का
प्रभु नाम लेय हर्षाय रह्यो रे।...प्रभु

आओ रे भक्तों ! जिन मंदिर में, प्रभु आयेंगे मन मंदिर में
फूलों से पूजन रचाय रह्यो रे।...प्रभु

आओ प्रभु का अभिषेक कर लो, दूध–दही का कलशा भर लो
चरणों में चंदन चढ़ाय रह्यो रे।...प्रभु

गुप्तिनंदी गुरु का संघ आया क्षमा धरम को 'सुलभ' बनाया।
चरणों में 'चन्द्रगुप्त' आय रह्यो रे।...प्रभु

(44) तर्ज : मंदिर में आओ ...

मंदिर में आओ पुण्य कमाओ, प्रभुजी की पूजन भक्ति रचाओ।
आओ–आओ–आओ भक्तों, जिनमंदिर में आओ॥
ला ला ऽऽऽ...॥

कलशे हम सजायेंगे झूमे–नाचे–गायेंगे।
प्रभुजी के अभिषेक में नाचेंगे–नचायेंगे॥ जय हो–4, कलशे हम...
आओ–आओ–आओ भक्तों !, अभिषेक करने आओ॥ मंदिर में.....

थाली हम सजायेंगे ताली हम बजायेंगें।
प्रभुजी की पूजन में नाचेंगें–नचायेंगे॥ जय हो–4, थाली.....
आओ–आओ–आओ भक्तों ! पूजन करने आओ॥ मंदिर में.....

चमचम दीप जलायेंगें, छमछम नृत्य रचायेंगें।
प्रभुजी की आरती में, नाचेंगें–नचायेंगे॥ जय हो–4, चमचम.....
आओ–आओ–आओ भक्तों ! आरती करने आओ॥ मंदिर में.....

ढोलक हम बजायेंगें, घुँघरू भी छनकायेंगें।
प्रभुजी के कीर्त्तन में, नाचेंगें–नचायेंगें॥ जय हो–4, ढोलक.....
आओ–आओ–आओ भक्तों ! कीर्त्तन करने आओ॥ मंदिर में.....

(45) तर्ज : हम सब नन्हें बच्चे...

हम सब नन्हें बच्चे हमें जीवन बनाना हैं।
रोज सुबह मंदिरजी में, दर्शन करने जाना हैं॥

दर्शन करने जायेंगें तो क्या–क्या ले के जायेंगें।–2
क्या–क्या लेके जायेंगें जी क्या–क्या लेके जायेंगें।–2
छोटे–छोटे हाथों में फल–फूल ले के जायेंगें।–2

हम सब नन्हें बच्चे हमें जीवन बनाना हैं।
रोज सुबह मंदिरजी में अभिषेक करने जाना हैं॥
अभिषेक करने जायेंगें तो क्या–क्या लेके जायेंगें–2, क्या–क्या...
छोटे–छोटे हाथों में हम दूध लेके जायेंगें॥

हम सब नन्हें बच्चे हमें जीवन बनाना हैं।
रोज सुबह मंदिरजी में पूजन करने जाना हैं॥
पूजन करने जायेंगें तो क्या–क्या लेके जायेंगें।–2, क्या–क्या...
छोटे–छोटे हाथों में हम द्रव्य लेके जायेंगें॥

हम सब नन्हें बच्चे हमें जीवन बनाना हैं।
रोज शाम मंदिरजी में आरती करने जाना हैं॥
आरती करने जायेंगें तो क्या–क्या ले के जायेंगें।–2, क्या–क्या...
छोटे–छोटे हाथों में हम दीपक ले के जायेंगें॥

हम सब नन्हें बच्चे हमें जीवन बनाना हैं।
रोज शाम मंदिरजी में भक्ति करने जाना हैं॥
भक्ति करने जायेंगें तो क्या–क्या ले के जायेंगें।–2, क्या–क्या...
छोटे–छोटे हाथों में हम ढोलक ले के जायेंगें॥
हम सब.....

(46) तर्ज : ये लाल गुलाबी...

ये लाल गुलाबी हरे नीले पीले फूल।
प्रभु आपको चढ़ाऊँ, पाने चरणों की धूल॥

लाल-लाल फूल लाया, मैं तो घूम-घूम के।
चरणों में आपके चढ़ाऊँ झूम-झूम के॥
झूम-झूम के हो प्रभु झूम-झूम के-2, ये लाल.....

फूल ये गुलाबी लाया, मैं तो घूम-घूम के।
चरणों में आपके चढ़ाऊँ झूम-झूम के॥
झूम-झूम के हो प्रभु झूम-झूम के-2, ये लाल.....

नीले-नीले फूल लाया मैं तो घूम-घूम के।
चरणों में आपके चढ़ाऊँ झूम-झूम के॥
झूम-झूम के हो प्रभु झूम-झूम के-2, ये लाल.....

पीले-पीले फूल लाया मैं तो घूम-घूम के।
चरणों में आपके चढ़ाऊँ झूम-झूम के॥
झूम-झूम के हो प्रभु झूम-झूम के-2, ये लाल.....

(47) तर्ज : जन्म-जन्म का साथ है...

तन मन से तुम ध्याओ, दस धर्म ये प्यारा-2।
ऐसा कर लो ज्ञान कि, पावो तुम भी पुण्य भण्डारा॥
क्रोध को छोड़ो प्यारे, क्षमा धर्म अपना लो।
मान महा दु:ख त्यागो, विनय धर्म को पा लो।
कपट छोड़ आर्जव अपनाओ, ये ही धर्म हमारा॥ तन मन...

शौच धर्म अपनाकर, सत्य सुधा को पा लो।
संयम की अग्नि से, तप कर कर्म जला लो।
त्याग आकिंचन दोनों मिल, दर्शाते रूप हमारा ॥ तन मन...

ब्रह्मचर्य को पालो, मन को वश में करके।
इसकी महिमा न्यारी, कर्म कटे फिर क्षण में।
'राज' भी इनका पालन करके, पाये मुक्ति द्वारा॥ तन मन...

(48) तर्ज : छोटी छोटी गैया...

भक्ति की देखो छाई है बहार, भक्तों के मन में हर्ष अपार।-2

अरिहंत प्रभु की, महिमा महान्।-2
मस्तक झुकायें, हम बारम्बार॥-2 भक्ति की...

गुप्तिनंदी गुरु हैं, ज्ञान के भण्डार।-2
डंका बजायें, करें धर्म प्रचार॥-2 भक्ति की...

माँ जिनवाणी, देती है ज्ञान।-2
आते शरण में, बने भगवान ॥-2 भक्ति की...

छम-छमा-छम-छम-छम, घुंघरु की झंकार।-2
आरती पूजन से, करें जयकार॥-2 भक्ति की...

ढमक-ढमा-ढम ढोल, बाजे प्रभु द्वार।-2
भक्ति से करें, सब नृत्य मनहार ॥-2 भक्ति की...

नाचें-गायें-झूमें, आये प्रभु द्वार।-2
'राजश्री' पाये, मुक्ति का द्वार ॥-2 भक्ति की...

(49) तर्ज : मेंहदी तो बावी... (गरबा)

अरिहंत प्रभु की महिमा निराली, हो रही जय जयकार रे
प्रभु जी का दर्शन करो–2
समोशरण में आप विराजे–2, देते हित उपदेश रे।। प्रभु...
सर्व करम का नाश कर वे–2, पहुँचे अपने थान रे ।। प्रभु...
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण से–2, होता भव के पार रे।। प्रभु...
आये प्रभुजी चरणों में तेरे–2, कर दो हमको पार रे।। प्रभु...
'राजश्री' चरणों में आई–2, कर दो भव से पार रे ।। प्रभु...

(50) तर्ज : आजा सनम मधुर...

आओ प्रभु दर्शन को चलें, दर्शन से सभी पाप कट जायेंगे।
महिमा प्रभु की महान्, प्रभु दर्शन है महान्।
भटक रहा गतियों में, पायी आज शरण है।
भक्ति करता नाथ की, तू ही तारण–तरण है।
आ गया तेरी शरण, दे दो मुझको शरण।
मुक्ति की मंजिल हो तुम, कह रहा है आज मन।। आओ...
जाना आत्म स्वरूप को, पाया अपने रूप को।
छोड़ा सब संसार को, पाने शिवपति भूप को।
पा गये स्वतंत्रता, त्याग के परतंत्रता।
ऐसे प्रभु महान्, ये ही हैं ज्ञानवान।। आओ...
राजें समोशरण में, परमौदारिक तन है।
पाया केवलज्ञान है, निज आतम की लगन से।
करके कल्याण जो, पा गये निर्वाण वो।
'राजश्री' त्रय योग से, कर रही उनको नमन।। आओ...

(51) तर्ज : आ जा हो आ जा.....

आ जा हो आ जा, आ जा प्रभुजी तुमको भक्तों ने पुकारा।
भक्तों की अर्जी सुनकर, प्रभु दे दो सहारा॥ आ जा...

जिनवर की भक्ति करके, भव पार करेंगे। भव...
हर क्षण हे भगवन ! तेरा, हम ध्यान धरेंगे। हम...
प्रभुजी से ही मिलता है-2, इस जग को किनारा॥ भक्तों...

कर्मों की कड़ियाँ तोड़ने, हम दीक्षा धरेंगे। हम...
प्रभुवर की शरणा पाके, हम आगे बढ़ेंगे। हम...
संयम तप के संदेश से-2, हमको है उबारा॥ भक्तों...

प्रतिमा तुम्हारी शांत है, जो मन को लुभाती। जो मन...
चरणों में नमते प्राणी के, पापों को नशाती। पापों...
मिलता रहे 'क्षमा' को-2 प्रभु तेरा सहारा॥ भक्तों...

(52) तर्ज : तुम तो ठहरे...

तुम तो प्रभु वीतरागी, दर पे कब बुलाओगे।
दर पे कब बुलाओगे-3, पार कब लगाओगे॥

मानव जीवन में कर्म दुख देते हैं।
मिल जाये-3 तेरी शरण, मुक्ति कब दिलाओगे॥ तुम तो प्रभु...

बातों में ना निकले, अनमोल ये जीवन।
खिल जाये-3 अन्तर्मन, पाप से छुड़ाओगे॥ तुम तो प्रभु...

तुम हो मेरे जिनवर, मैं हूँ तेरा सेवक।
भाव से-3 करे अर्चा, भाग्य तुम जगाओगे॥ तुम तो प्रभु...

मैं हूँ अज्ञानी प्रभु, ज्ञान मुझे देना।
'आस्था' रूपी-3 अमृत का, पान कब कराओगे॥ तुम तो प्रभु...

(53) तर्ज : अच्छा शिला दिया...

प्रभु जी का न्हवन कराने आया हूँ।
अपने सारे पापों को नशाने आया हूँ।। प्रभुजी...

एक सहस अठ कलश भराये...2।
क्षीरोदधि का जल भर लाये।।ऽऽओऽ...
पुण्य सरोवर भरने आया हूँ...अपने सारे...

मेरु शिखर पे न्हवन कराये-2।
सौधर्म शची संघ पुण्य कमाये।।ऽऽओऽ...
घृत दूध इक्षुरस लेके आया हूँ...अपने सारे...

दधि सर्वौषधि कुंभ कलश ले-2।
मंगल आरती सब दु:ख हरले।ऽऽओऽ...
चंदन पुष्प चढ़ाने आया हूँ...अपने सारे...

चार कलश चहुगति से उबारे-2।
'आस्था' से प्रभु चरण पखारे।।ऽऽओऽ...
महाशांतिधारा करने आया हूँ...
अपने सारे.....

(54) तर्ज : चूड़ी जो खनकी...

थाली सजा के लाई हाथ में,
करूँ वन्दन बारम्बार, प्रभु के चरणों में-2
प्रभुवर तेरी मूरत को, देख-देख हरषाया हूँ।
वीतराग मुद्रा तेरी, दर्शन करने आया हूँ।।
ध्यान धरूँ तेरे चरणों में-2..... करूँ वन्दन बारम्बार... ।।

भोगों की इच्छा तजकर, तेरे द्वार पे मैं आया।
मन की इच्छा पूर्ण करो, मिल जाये तेरी छाया।।
तेरा पुजारी बनूँ नाथ मैं-2..... करूँ वन्दन बारम्बार... ।।

विषयों का मैं दास बना, अष्ट कर्म से जूझ रहा।
पावन मैं बन जाऊँ प्रभु, अष्ट द्रव्य से पूज रहा।।
'आस्था' आई है तेरे द्वार पे-2, करूँ वंदन बारम्बार...।।

(55) तर्ज : तुम पास आए...

दर्श तेरा पाए शीश झुकाये, दर्शन पाकर सुख पा जाये।
शांति हो जग में, भावना ये भाते हैं, पार करो प्रभुजी, गुण तेरे गाते हैं-2।।

दर्शन बिना मैं रूलता रहा, नाना गति में फिरता रहा।
मोह तम नाश हो, ज्ञान का वास हो,
तेरे चरण की रजकण पाते हैं।। पार करो...

हितकारी प्रभुजी तेरी वाणी, बतला रही है माँ जिनवाणी।
सत्य का ज्ञान हो, पाप का नाश हो,
सुर सुमनों की माला लाते हैं।। पार करो...

धर्म अहिंसा को अपनाऊँ, रत्नत्रय निधि मैं प्रगटाऊँ।
कर्म का नाश हो, मोक्ष में वास हो,
धर्म सुधा का अमृत पाते हैं।। पार करो...

कर्मों का कैसा चक्कर लगा, मोह माया ने मुझको ठगा।
विश्व में शान्ति हो, भाव में क्रांति हो,
भक्ति 'आस्था' से चरणों में आते हैं।। पार करो...।।

(56) तर्ज : हम भूल गये रे हर बात...

हम आये तेरे द्वार, प्रभु मेरा कर दो बेड़ा पार–2
हो जाये अब उद्धार, प्रभु मेरा कर दो बेड़ा पार॥ हम...

स्वारथ की दुनिया है सारी, मतलब से करे सब ही यारी।
जब काम निकल जाए उनका, कोई साथ न जाए नर–नारी।
बंधन की–2 तोड़ो दीवार, प्रभु मेरा...॥

मैंने पाप कमाया जिसके लिए, वो भाई–बहना छोड़ चले।
जिस जिस को अपना माना था, वो रिश्ते–नाते तोड़ चले॥
इस मोह की–2 तोड़ो दीवार, प्रभु मेरा...॥

मैंने हित का साधन किया नहीं, मैं करता रहा पर का हित ही।
ना दान दिया गुरुओं को कभी, प्रभुवर की पूजा की ही नहीं॥
पापों की–2 तोड़ो दीवार, प्रभु मेरा...॥

मैं धर्म अहिंसा प्राप्त करूँ, निज आतम का कल्याण करूँ।
मैं राग द्वेष माया तज दूँ, 'आस्था' से मुक्ति महल को वरूँ॥
कर्मों की–2 तोड़ो दीवार, प्रभु मेरा...॥

(57) तर्ज : कितना प्यारा तूझे रब ने बनाया...

कितना प्यारा प्रभु तेरा द्वारा, बहती है अमृत धारा...2
मैं हूँ पापी तू हैं पावन, भव से पार लगा दे।
राग–द्वेष माया में अटका, सत्य की राह दिखा दे॥
कितना प्यारा...

माया के वैभव में सब कुछ भूल गया।
अज्ञानी बन के प्रभु मद में झूल गया।
तृष्णा की आग लगी चारों ओर मेरे।

पा जाऊँ निज धन को आऊँ शरण तेरे।
तेरी महिमा, कितनी गाये, तेरे चरणों में शीश झुकाये।
मन मेरा पावन बन जाये, तेरा दर्श करा दे।।
कितना प्यारा...

तेरी सुन्दर मूरत प्रभुवर मन मेरे भाये।
ज्ञान का दीप जला देना गुण तेरे गाये।
भव-भव में शरणा पाये सारे पाप नशे।
'आस्था' नमन करे जिनवर को मोक्ष महल में बसे।
तू है स्वामी, मैं हूँ सेवक भक्ति पुष्प चढ़ाऊँ।
सुरभित होवे जीवन मेरा मुक्ति राह दिखादे ।।
कितना प्यारा...

(58) तर्ज : हाय रब्बा हाय...

जय जिनवर जी-3, जय गुरुवरजी-3, जय माता दी-3।
सत्य अहिंसा का मार्ग बताया, अनेकांत को जग में फैलाया।
धर्म के हो आधार, बोलो जय जिनवर की-2

महाव्रतों के धारी गुरुजी, राग-द्वेष माया भी तज दी।
वेष दिगम्बर धार, बोलो जय गुरुवर की-2

वात्सल्य ज्ञान दया की मूरत, करुणा रस बरसाती सूरत।
वन्दन बारम्बार, बोलो जय माता दी-2

धर्म हमारा शांति वाला, दिलवाये मुक्ति की माला।
धर्म की हो जयकार, बोलो जय जिनवर जी-2

'आस्था' से नित भक्ति रचाये, शरण में आकर मुक्ति पाये।
हो जाये भव पार, बोलो जय जिनवर की-2

जिनवाणी भक्ति

(59) तर्ज : लिया प्रभु अवतार...

हुआ शास्त्र अवतार, जय-जय कार-3
जिनवाणी अवतार, जय जय कार-3

यही हमें सन्मार्ग दिखावें, पतितों को भवपार लगावे-2।
सबको मंगलकार, जय जय कार-3

उमड़-उमड़ नर-नारी आवें, नृत्य भजन संगीत सुनावें-2।
करते धर्म प्रचार, जय जयकार-3

धर्म तत्त्व उपदेश की वर्षा, गुरुवर करते हरषा हरषा-2
कर रहे ज्ञान प्रचार, जय जयकार-3।

कनकनंदीजी गुरुवर आयें, जिन आगम का सार बतायें-2।
ज्ञान के हैं भण्डार, जय जयकार-3।

आओ 'गुप्ति' खुशी मनाओ, जिन आगम पर बलि बलि जाओ-2।
हो रही जय-जयकार, जय-जयकार-3।

(60)

माँ शारदे वर दे, जिनवाणी माँ वर दे,
घोर तम अज्ञान जग में,
फैला चारों दिग-विदिग् में-2
विरद क्लांत दु:खित हूँ मैं,
मम तिमिर हर ले- माँ शारदे वर दे॥
तुझसे वञ्चित क्यों चहूँ दिश,

मनुज तुझ बिन है माँ निन्दित–2
इसलिए मम हृदय चिन्तित,
चिन्ता तू हर ले– माँ शारदे वर दे।।
शब्द करता हूँ मैं संचित,
वो भी थोड़े शब्द विखरित–2
वन्दना मैं करना चाहूँ,
शब्द वो दे दे– माँ शारदे वर दे।।
गर्व मेरा दूर कर माँ,
विनय सेवा भाव भर माँ–2,
घृणा ईर्ष्या छोड़ दूँ मैं,
शक्ति वह दे दे– माँ शारदे वर दे।।
लोभ–माया दूर जावे,
क्रोध वैर निकट न आवे–2,
व्यसन तम को दूर कर दूँ,
तेज वह दे दे– माँ शारदे वर दे।।
'गुप्ति' तुझ मय होना चाहे,
तुझको अब ना खोना चाहे–2,
अज्ञ घन को दूर कर दूँ,
ज्योति वह भर दे– माँ शारदे वर दे।।

(61) तर्ज : प्रभु पतित पावन...

हे मात जिनवाणी, सरस्वती, वंदना तेरी करे।
निजआत्म प्रक्षालन के हेतु, तव चरण मम हिय धरे।।
माँ नाम तेरे अनगिनत हैं, उनको हम जाने नहीं।
किन्तु कुछ पद पुष्प लेकर, शरण हम तेरी लही।।

शारदा, वाणी सरस्वती, भारती तुम नाम है।
वागिश्वरी माता विदुषी, वचन मन अभिराम है।।
हंसवाही बह्मचारिणी, शारदे तुमको कहे।
माता जगत् की ब्राह्मिणी, ब्रह्माणी वरदा भी कहे।।
सप्तभंगी वीणा वादिनी, भाषा श्रुत देवी तुम्हीं।
सर्वज्ञपुत्री, गौ, गणेशी, द्वादशांगी हो तुम्हीं।
अनगार की माँ ढाल तुम हो, विज्ञजन शरणागता।
बहुभाषिणी विद्या तू माता, हर हमारी आपदा।।
सद्ज्ञान की ज्योति जला माँ, 'गुप्ति' करता वंदना।
परमात्म सिद्धि शीघ्र कर लूँ, त्याग कर दु:ख वंचना।।

(62) तर्ज : मेंहदी तो बावे मालवी...

अरिहन्त मुख से फुलवा खिले, जाकी ऋषिगण गूंथे माल रे,
जिन जी की वाणी भली, वाणी भली मन लागे भली–2
जाकी ऋषिगण गुंथे माल रे जिनजी की वाणी भली–
गूंथा रे धवला और महाधवला, गूंथा धरम का सार रे। जिनजी...
गूंथा कर्मकाण्ड गूंथा है जीवकांड, गूंथा है पद्मपुराण रे। जिनजी...
गूंथा मूलाचार गूंथा रयणसार, गूंथा रे आचारसार रे। जिनजी...
गूंथा है धर्म को दर्शन विज्ञान से, सुन्दर समन्वय बनाय रे। जिनजी...
धारो महाव्रत आगम ज्ञान से, 'गुप्ति' से मुक्ति मिल जाय रे। जिनजी...

(63) *तर्ज : ज्ञान ध्यान में...*

स्याद्वाद के इस झरने में, गोता हमने लगाया है।
माँ जिनवाणी की शरणा से, मिथ्या ज्ञान हटाया है।।

समोशरण सा महल तुम्हारा, तुम तीर्थंकर की जननी। तुम...
अरिहंतों के मुख से प्रगटी, हे भव्यों की दु:खहरणी। हे...
तेरे चरण की रजकण पाने, तुमको शीश झुकाया है–2॥ माँ जिनवाणी...

भवसागर की लहरों ने ही, भव–भव में भटकाया है। भव भव...
जन्म–मरण के इस फेरे ने, संकट जाल बिछाया है। संकट...
इन संसार दु:खों से बचने, द्वार तेरा अपनाया है–2॥ माँ जिनवाणी...

जैसे वर्षा जल की बूँदे, वसुन्धरा पे हैं गिरती। वसुन्धरा...
वैसे गणधर तुमको झेले, जब जिनमुख से हो खिरती। जब...
तेरी महिमा के आगे तो अन्त कभी ना आया है–2॥ माँ जिनवाणी...

शुभ्र वर्ण के वस्त्राभूषण, वीणा हस्तों की शोभा। वीणा...
सम्यग्ज्ञान दिलाये हे माँ, तव मुखमण्डल की आभा॥ तव...
ज्ञान सुधारस पाने अम्बा, 'चन्द्रगुप्त' भी आया है–2॥ माँ जिनवाणी...

(64) तर्ज : प्यार दिवाना होता है...

तेरी वाणी माँ जिनवाणी हम सब पायेंगे।
तेरी बताई राहों पे हम वारि जायेंगे॥

कर्म अरि से लड़ते–2, थका हमारा मन।
विजय ना पायी इनसे हमने, हार गये हैं हम॥
कर्मों से छुटकारा पाने, तुझको ध्यायेंगें। तेरी.....

जिनमुख से प्रगटी तू तेरा, नाम है जिनवाणी।
तेरा सहारा पाने आये, अज्ञानी प्राणी॥
तेरी वाणी पाकर आतम ज्योत जलायेंगे। तेरी.....

जीवन के चौराहे पर जा, मन ये भटक गया।
तुझको जबसे जाना माता, तुझमें मग्न हुआ॥
'चन्द्रगुप्त' की आशा हैं ये, शिवपद पायेंगे। तेरी.....

(65) तर्ज : जिनवाणी-जिनवाणी...

जिनवाणी जिनवाणी जय जय माँ जिनवाणी।
जिनवाणी जिनवाणी जय-जय माँ जिनवाणी॥

तू अरिहंतों की वाणी, तू तीर्थंकर की वाणी।
तुझको जो ध्याते ध्यानी, बनते केवलज्ञानी॥ जिनवाणी...

मेरे मन की वीणा ये, करे हैं झनकार।-2
वीणा के तारों पे माँ विराजो हर बार॥-2 तू अरिहंतों...

द्वादशांग रूप तेरा मात शारदे।-2
द्वादशांग ज्ञान हमें उपहार दे॥-2 तू अरिहंतों...

शोभा हो निराली तुम जिनमुख की।
दाता हो हे मैया तुम शिवसुख की॥ तू अरिहंतों...

नाचे जैसे मोर जब जल बरसे।
वैसे तोहे सुन मन मोर हरषे॥ तू अरिहंतों...

शारदे माँ तारदे तु पाप-ताप से।
विनती करे हैं 'चन्द्रगुप्त' आपसे॥ तू अरिहंतों...

(66) तर्ज : मेरा बाबू छेल छबीला...

मैं तो माँ जिनवाणी के गुण गाऊँगी-2
गुण गाऊँगी-2 मैं तो नाचूंगी॥ मैं तो...
मन में बिठाके शीश झुकाके, मैं तो नाचूंगी।

आँखों में तुमको बसाके करती सदा मैं तेरी अर्चा।
होठों से हरदम तेरे गाती रहूँ तेरी चर्चा।
पार लगा दो, भव से छुड़ा दो भक्ति करलूँ मैं ॥ मैं तो...

आज करेंगे मिलके, माँ जिनवाणी अर्चा।
झूला झुलाये तुमको, पाने मुक्ति चर्चा।
'राज' मैं पाऊँ, शिवपुर जाऊँ मुक्ति पाऊँ रे॥ मैं तो...

(67) तर्ज : बहुत प्यार करते...

ओ जिनवाणी माँ तेरी शरण।
कोटि-कोटि नमते-2 तुम्हारे चरण।

तेरी ही पूजा से हम पुण्य पायें,
हित व अहित का ज्ञान जगायें,
जग में तुम्ही हो-2 तारण-तरण॥ ओ जिनवाणी...॥

माँ शारदे हैं, सब कष्ट हारी,
महिमा तुम्हारी है, जग से न्यारी,
सब दु:ख हर्त्ता-2 संकट हरण॥ ओ जिनवाणी...॥

श्रद्धा से तुमको शीश झुकायें,
सुख सम्पदायें शिव सुख पाये,
'राज' आत्मा का-2 मंगल करण ॥ ओ जिनवाणी...॥

(68) तर्ज : महावीर थारी अरजी छे...

माँ जिनवाणी सू विनती छे, ज्ञान मने दो अरजी छे
राग से जीवड़ो भरमे छे, संसार मा दुख पावे छे
राग घणो दुखदायी छे, भव वन मा भटकावे छे॥ माँ...॥

आज महोत्सव मनावे जो, मोह माया ने त्यागे वो
मोह माया दु:ख दायी छे, त्यागे वही वैरागी छे ॥ माँ...॥

दुनियाँ मा ना कोई शरणा छे, गुरु शरण मा रहणो छे
भक्ति में मनड़ो रखवो जी, मारी विनती सुनलो जी॥ माँ...॥
म्हारा गुरुजी पधारे छे, ज्ञान मने वे देवे छे
'राज' भी शरणे आई छे, संयम की धुन तो लगाई छे॥ माँ...॥

(69) तर्ज : आये हो मेरी जिंदगी...

आये शरण में तेरी माँ तुझसे ज्ञान पाने-3।
जिनवाणी भक्ति कर लो-2 सम्यक् निधि को पाने॥ आये...
अज्ञान के अंधेरे, में हम भटक रहे हैं।
मिलता नहीं सहारा, अनाथ हम खड़े हैं॥
चरणों में आये तेरे-2 वैराग्य को जगाने-2 ॥ आये...
हो श्वेत वस्त्र धारी, आसन कमल विराजी।
सम्पूर्ण ज्ञान देती, कलहंस पर विराजी॥
चरणों में आये तेरे-2 सद्ज्ञान को जगाने-2 ॥ आये...
अरिहंत मुख से निकली, जिनधर्म की विकासी।
तू है अनेक भाषी, सत्ज्ञान की प्रकाशी॥
घर-घर में ज्ञान ज्योति-2 जायेंगे हम जगाने-2 ॥ आये...
ये द्वादशांग वाणी, सापेक्ष भाव वाली।
मिथ्यात्व को हटाती, नाना सुनाम वाली॥
वागीश्वरी की शरणा-2, 'राजश्री' आई पाने-2 ॥ आये...

(70) तर्ज : दिल के अरमां आँसूओं...

शारदे माँ की शरण जो आ गये।
सत्य दर्शन धार मुक्ति पा गये॥

भव भंवर में डूबते बहु दिन गये।
बिन गुरु के आज तक भटके फिरे।
पुण्य फल पाया गुरु अब मिल गये।
क्यों न आतम की व्यथा तुम सुन रहे॥ शारदे माँ...॥

आत्मा परमात्मा हो जायेगा।
गर गुरुवर की शरण पा जायेगा।
कनकनंदी-सा गुरु जो पा गये।
नर से नारायण, वही जन बन गये ॥ शारदे माँ...॥

ध्यान का रस अल्प भी, जो पा गया।
सत्य समता आत्म सुख को पा गया।
ज्ञान की भण्डार माँ जो पा गये।
पा 'क्षमा' को वे ही शिव राही भये ॥ शारदे माँ...॥

(71) तर्ज : दिल दीवाना बिन...

जय जिनवाणी, जग कल्याणी तारो माँ।
ये विनती है अम्बे माँ सुन लो माँ।2

वीर प्रभु के मुख से, निकली दिव्यध्वनि जिनवाणी।
नाना भाषा वाली माता, द्वादशांग की वाणी।
सुर-नर-किन्नर संत मनीषी, ध्याये माँ ॥ ये विनती है...

विद्या देवी, सरस्वती माँ, वीणा हाथ में धारी।
शक्ति तुम्हारी, कितनी अद्‌भुत, तेरी महिमा भारी।
तम अज्ञान हमारे हर लो, सारे माँ ॥ ये विनती है...

नयन तुम्हारे खिले पुष्प सम, लगते सबको प्यारे।
हंसराज पर आन विराजी, दिव्य वसन को धारे।
'आस्था' भी तेरे चरणों में, आये माँ ॥ ये विनती है...

(72) तर्ज : चूड़ी मजा न देगी...

जिनवाणी माँ को ध्याये, मुक्ति का राज पाये।
आये शरण में तेरे-2 गुणगान तेरा गाये॥ जिनवाणी...

माँ शारदे हितैषी, मन को पवित्र करती।
गणधर प्रभु ने झेली, भव्यों के पाप हरती॥
एकांत को मिटाये, मिथ्यात्व भ्रम नशाये ॥ जिनवाणी...

दिव्यात्म शक्ति धारी, दुनियाँ में सबसे न्यारी।
परमत विखण्ड करती, स्याद्वाद रूप धारी।
समकित रवि को पाये, अज्ञान तम हटाये ॥ जिनवाणी...

करते हैं तुमको वंदन, बन जाये तेरे नंदन।
मिट जाये भव का क्रंदन, अर्पण है तुमको चंदन।
आगम का ज्ञान पाने, 'आस्था' भी तुमको ध्याये ॥ जिनवाणी...

गुरु भक्ति

(73) तर्ज : हमको मन की शक्ति...

हमको ऐसी ज्योति देना आत्म जय करें।
ज्ञान ज्योति को जलायें कर्म जय करें॥

सत्य तथ्य से परे विचार ना करें,
सत्य शोध बोध हित विहार हम करें,
सत्य निष्ठ हम बने, उदारता वरें॥ ज्ञान ज्योति को...

सरल सहज हो हमारी धर्म भावना,
मुश्किलों, बुराई का करेंगे सामना,
पक्षपात ना करें, महानता वरें॥ ज्ञान ज्योति को...

सब कृतज्ञ हो गुरु के जो महान हैं,
साम्य भाव के धनी गुणों की खान हैं,
'गुप्ति' का नमन तुम्हें, जो मुक्ति को वरें॥ ज्ञान ज्योति को...

(74) तर्ज : बहारों फूल बरसाओ.....

मुनिवर ज्ञान बरसाओ, शरण हम आज आये हैं।-2
ज्ञान का सार समझाओ, शरण हम तेरी आये हैं।-2

बड़े नि:स्वार्थ सेवी हो, मेरे सच्चे हितैषी हो।
तुम्ही हो मात-पितु मेरे, तुम्ही परमात्म वेषी हो।
बहा दो ज्ञान की गंगा, यही अभिलाष लायें हैं॥ मुनिवर ज्ञान...

करो तुम धर्म की वर्षा, दर्शन ज्ञान को लेकर।
सिखाते सत्य अहिंसा, करुणा प्रेम को लेकर।
दया हो हम पर हे गुरुवर, यही उल्लास लायें हैं ॥ मुनिवर ज्ञान...

हो सेवा एकता सबमें, यही उपदेश देते हो।
बनो सत् देश सेवक तुम, यही भक्ति सिखाते हो।
बना दो विश्व का बन्धु, यही इक आस लायें हैं ॥ मुनिवर ज्ञान...

छुड़ा दो कर्म के बंधन, कहे यह मेरा अन्तर्मन।
संयम ध्यान धारण कर, करूँगा 'गुप्ति' का पालन।
ले चलो मुक्तिपुरी को यही विश्वास लायें हैं ॥ मुनिवर ज्ञान...

(75) तर्ज : ऐ मेरे वतन के लोगों...

ऐ जैन श्रमण के शिष्यों कर लो सब मिल जयकारा।
हम सबको छोड़ यहाँ से जाये मुनि संघ हमारा॥
पर इतना मत भूलो तुम उनने जो राह बताई।
उसे याद हमेशा रखना जीवन की यही कमाई॥

चले आज मुनि श्री यहाँ से, हैं परम दिगम्बर ज्ञानी।
कोई रोक ले इनको जाते, हम भी हो इन सम ज्ञानी।

छोड़ा निज मात-पिता को, निज घर से मोह छुड़ाया।
धन दौलत सब कुछ त्यागी और निज का ध्यान लगाया।
ये बने दिगम्बर ज्ञानी और हम सब हैं अज्ञानी।। कोई रोक...

केशों को तृण सम तोड़ा, वस्त्रों को दूर भगाया।
बस पीछी कमण्डल लेकर, जिन महामुनि पद पाया।
ये तोड़ चले सब रिश्ते, हम मोही महा अज्ञानी ।। कोई रोक...

अमृत वर्षा करते थे, 'गुप्ति' त्रय भूषण धारी।
निज वैभव को बतलाते, ये भेद ज्ञान के धारी।
फिर हमको दर्शन देना, सुन लो गुरु अरज हमारी ।। कोई रोक...

तुमको तो मोह नहीं है, पर हमको मोही बनाया।
जाना ही था जब तुमको, तब फिर क्यों पास बुलाया।
आशीष वचन दो गुरुवर, हम बने तुम्ही सम ज्ञानी ।। कोई रोक...

(76) तर्ज : इस योग्य हम कहाँ हैं...

गुरुओं का दर्श पाकर, जीवन सफल बनायें।
उनके चरण कमल में, श्रद्धा सुमन चढ़ायें।।

गुरुओं की शांत मूरत, दु:ख दर्द हरने वाली।
समता का भाव धारें, चाहे दे कोई गाली।।
ऋषियों की इस छवि को, हम सब हृदय बसायें। गुरुओं.....

विषयों की आश छोड़ें, पाले महाव्रतों को।
भूषण सदा बनायें, जिनवाणी के मतों को।।
गुरुओं से ज्ञान पाकर, अज्ञानता हटायें।। गुरुओं.....

पर्वत गुफा वनों में, वे योग ध्यान धारें।
लख उनकी थिर छवि को, मृग खाज को खुजावें॥
करके कठिन तपस्या, आठों करम नशायें। गुरुओं.....
ऐसे गुरुजनों के, हम भक्ति गीत गायें।
उनके समान बनने, उन जैसी रीत पायें॥
चरणों में सिर झुकाने, मुनि 'चन्द्रगुप्त' आये ॥ गुरुओं.....

(77) तर्ज : बहुत प्यार करते हैं...

गुरु तेरे चरणों में, अर्पण ये मन-2
चरणों में तेरे, करते नमन॥
तेरी शरण ही, तारण-तरण है।
चरणों की अर्चा, मेरा धरम है॥
स्वर्ग से बड़ी है तुम्हारी शरण। गुरु...
हमारा ये जीवन अर्पण हैं तुमको।
भक्त बनाये गुरु दर्श हमको॥
भूल ना सकेंगे गुरु भक्ति हम। गुरु...
शांत स्वभाव हे, गुरुवर तुम्हारा।
अर्चन करे है, मनवा हमारा॥
'चन्द्रगुप्त' भी चढ़ाये, भक्ति सुमन। गुरु...

(78) तर्ज : इतनी शक्ति हमें देना दाता...

इतनी शक्ति हमें देना गुरुवर, मोह तम को जगत से भगायें।
तेरे अनुभव के मोती चुने हम, आत्म दीप में उसको लगायें॥
सादा जीवन जियें हम सदा ही, मन के भावों को निर्मल बनायें।
आत्मनिर्भर हो कर्त्तव्य पालन, जीवन के ये सूत्र बनायें
गुण से भारी बने हम जगत में, ज्ञान की ज्योति हम सब जलायें॥ तेरे ...

सच्चे देव-गुरु और आगम, इनकी सेवा में तन-मन लगायें।
भूत और भविष्य के पीछे, वर्तमान समय न गवायें।
गम की लहरें न जिसमें कभी हो, सुख सरिता में गोते लगायें॥ तेरे...

सत्यनिष्ठा-क्षमा-धैर्य समता, जीवन की अमोल निधि है।
बाह्य रीति रिवाजों से केवल, धर्म की ना कोई विधि है।
'राज' धर्म का पाये गुरु से, तेरी मूरत हृदय में बसायें। तेरे...

(79) तर्ज : आपकी नजरों ने...

आपकी भक्ति से मिल गई मुक्ति की मंजिल मुझे।
मन से यह भक्ति तुम्हारी दे रही शक्ति मुझे॥

हे गुरु ! हम कर रहे हैं आपकी यह वंदना-2।
कर रहे हैं हर तरह से आपकी आराधना-2।
आ रहे हैं हम शरण में भाव की श्रद्धा लिये...
आपकी भक्ति से...

वीतरागी तुम गुरु हो राग है ना द्वेष है-2।
करें निंदा या प्रशंसा इसका ना कुछ खेद है-2
भाव से पूजा करेंगे पुण्य संचय के लिये...
आपकी भक्ति से...

भा रही छवि आपकी प्रभु मेरे मन को हर रही-2
शांत मूरत ये तुम्हारी त्याग शिक्षा दे रही-2
'राजश्री' आयी शरण में मुक्ति पाने के लिये...
आपकी भक्ति से...

(80) तर्ज : रात कली इक...

धन्य हमारे भाव जगे हैं, गुरु चरण में नमन करें।
हाथ लिये हम श्रीफल आये, पाप ताप का वमन करें॥ धन्य...

हाथ कमण्डल, बगल में पीछी, पंच महाव्रत धारी।
नंगे पैरों से चलते हैं, जन-जन के उपकारी।
आहार देकर पुण्य कमाएँ, मुक्तिपुरी को गमन करें॥ धन्य...

केशों का लोचन, पाप विमोचन, जीव दया हित करते।
राग द्वेष का बन्धन तोड़े, समता रस को वरते।
दर्शन करके संयम धारें, मुक्ति वधु का चयन करें ॥ धन्य...

पुण्य उदय से, गुरुवर मिलते, इनके चरण पखारें।
रोम-रोम पुलकित होते हैं, इनका रूप निहारें॥
'राजश्री' तव चरणों में आकर, पाप कर्म का दहन करे॥ धन्य...

(81) तर्ज : क्या मौसम आया...

गुरु दर्शन पाया है...2 शीश मैंने झुकाया है...2
गुरुवर के दर्शन से सारे पाप कटें।

गुरुवाणी सुन करके मिथ्या मोह हटें।
गीत गायें हम सब, पाने को ये संगम।
है छवि निराली भूषण तेरा संयम॥ गुरु दर्शन...

मुक्ति की रानी, आतम ज्ञानी, कर ले अपना ध्यान जिये।
जब जब आऊँ, शीश झुकाऊँ, करता हरदम ध्यान हिये।
पापों से ना होवे, मन मेरा घायल।
कष्टों में ना रोए, मन मेरा पागल।

दु:ख नहीं है ये तो, खुद की कहानी है।
निर्मल खुशियाँ मुझको, जीवन में पानी है ॥ गुरु दर्शन...

गुरु की भक्ति, प्रभु की पूजा, जी करता है सदा करूँ।
पुण्य डगर है, पाप नहीं है, ऐसी मैं तो राह वरूँ।
भावों से गाऊँगी, गुरुवर की भक्ति।
भक्ति से मिलती है, आतम की शक्ति।
गुरु पूजा ही तो, भव पार लगाती है।
'राजश्री' भक्ति से, निज पद को पाती है ॥ गुरु दर्शन...

(82) तर्ज : महावीर तुम्हारे...

गुरुदेव तुम्हारे चरणों में, श्रद्धा के सुमन चढ़ाऊँ मैं।
तेरे महान उपदेशों से, जीवन को सफल बनाऊँ मैं।

डगमग डोले मेरी जीवन नैया, बन जाओ गुरु आके खिवैया–2
मोह बंधन में फंसी हुई हूँ, कैसे ये जीवन बिताऊँ मैं॥ गुरुदेव...

चाहूँ रत्नत्रय की कलियाँ, आज सजाऊँ जीवन बगिया–2
तप संयम की नौका लेकर, भव सागर तिर जाऊँ मैं ॥ गुरुदेव...

गुरु का नाम बड़ा सुखकारी, भक्ति करते सब नर–नारी।–2
'राजश्री' भक्ति भावों से, गुरुवर के गुण गाऊँ मैं ॥ गुरुदेव...

(83) तर्ज : हम तो भूल गये...

हम तो भूल गये हर बात, गुरुवर करना अब उद्धार।
हमने पाया सच्चा साथ, गुरुजी कर दो बेड़ा पार॥

स्वावलम्बी बनो समयानुबद्ध हो, कार्य करो यह सिखलाया।
कर्त्तव्य पाल अधिकारी बनो, यह सूत्र भी हमको बतलाया।
रूढ़ी की–2 तोडो दीवार, गुरुजी कर दो बेड़ा पार॥ हम तो...

सेवा का धर्म भी अपनाओ, दु:खियों को कभी न ठुकराओ।
छोड़ो शोषण अत्याचारी, त्यागो अपराध दुराचारी।
हो जाये-2 जग उपकार, गुरुजी कर दो बेड़ा पार॥ हम तो...

सत् लक्ष्य तुम्हारा हर दम हो, सब देश धर्म की रक्षा करो।
निर्ग्रन्थ गुरु से शिक्षा लो, 'क्षमा' उनके निर्मल भाव पढ़ो।
मिल जाये-2 मुक्ति द्वार, गुरुजी करना बेड़ा पार ॥ हम तो...

(84) तर्ज : जनम-जनम का साथ है...

अंग-अंग से झलके गुरुवर त्याग तुम्हारा।-2
ऐसा दो वरदान कि पाऊँ मैं भी ज्ञान भण्डारा॥

छोड़ दिया गुरु तुमने, ये अज्ञान अँधेरा।
किस विध पाऊँ आके, तुमसा ज्ञान उजेरा।
भटक न जाये ये बालक, गुरु देना आन सहारा॥ अंग-अंग...

साम्य सुधा रस पीते, हो निष्पक्षी योगी।
ज्ञानी-ध्यानी गुरुजी, हमको बना दो जोगी।
इन नैनों से सत्य त्याग का, देखूँ अज़ब नजारा ॥ अंग-अंग...

न्याय मूर्ति तुम गुरुवर, हो अनुशासन धारी।
जगते भाग्य उसी के, जिसपे कृपा तुम्हारी।
जनम-मरण के इस बन्धन से, पाऊँ मैं छुटकारा ॥ अंग-अंग...

'क्षमा' ने सब कुछ त्यागा, आई तेरे दर पे।
मुक्ति मुझको दे दो, ऐसी करुणा करके।
तेरे दर पर आये हैं, पाने आशीष तुम्हारा ॥ अंग-अंग...

(85) तर्ज : ज्योत से ज्योत .....

ज्ञान का दीप जलाते चलो, गुरुओं के गुणगान गाते चलो।
राह में आये ना कष्ट कभी, जीवन को ऐसा बनाते चलो॥

संयम तप से भूषित हैं जो, इनका लाभ उठा लो।
इनके अनुपम ज्ञानामृत से, जीवन अमर बना लो॥ राह में...

समता रस के रस में डूबे, बनकर ब्रह्म बिहारी।
ज्ञान ध्यान में लीन रहे जो, ज्ञान निधि भण्डारी ॥ राह में...

दृढ़ संकल्पी सत्पथगामी, अनुशासन सुखकारी।
'क्षमा' शील के पालनहारे, गुरुवर करुणा धारी ॥ राह में...

(86) तर्ज : सूरज कब दूर गगन...

समता को चाहने वाले, ममता को हटाने वाले।
आतम के ये मतवाले, कर्मों को हराने वाले॥
गुरुओं का आज शुभ अर्चन है, चरणों में वंदन है–2

निष्पृह वृत्ति गुरुओं की, नहीं होती कुछ अभिलाषा,
घर बार छोड़कर जिनने, छोड़ी है जग की आशा।
आतम में मगन जो रहते, शुभ ध्यान हमेशा करते।
नहीं वैर भाव है सबसे, समभाव सभी पर रखते॥
गुरुओं का यही शुभ संयम है, चरणों में वंदन है॥ समता को...

आहार हाथ में लेते, नहीं किसी से कुछ भी कहते।
नंगे पैरों से चलते, केशों का लोचन करते।
नहीं वस्त्र है कोई तन पे, पड़े ठंड या मेघ भी बरसे।
जीवों की रक्षा करते, नहीं मोह है कोई तन से।
करते जो सदा शुभ चिंतन हैं, चरणों में अर्चन है ॥ समता को...

शुभ वृत्ति जिनकी प्यारी, जिसमें न दुनियादारी।
ये ज्ञान किरण विकसाते, बन आतमराम बिहारी।
क्रांति हो आज जगत् में, शांति हो हर कण-कण में।
हो 'क्षमा' धरम ये हमारा, जीवन के हर एक क्षण में।
क्रांति के यही तो उद्‌गम हैं, चरणों में अर्चन है॥ समता को...

(87) तर्ज : फूल तुम्हें भेजा है...

धार लिया जिसने मुनि बाना, करते निज कल्याण हैं।
आओ नमन करें हम सब मिल, ये ही संत महान् हैं॥

जिनकी ज्ञान रश्मियाँ देखो, सारे जग में छाय रही।
नव चिंतन से भरी हुई जो, नव संदेशा लाय रही।
स्वाभिमान समता सद्‌वाणी, जिनकी निज पहिचान है॥ धार लिया...

एक बार आहार जो करते, केशों का लोचन करते।
नंगे पैरों से चलते हैं, भूमि का शोधन करते।
ध्यान मनन चिन्मय चिंतन कर, करते निज का भान हैं॥ धार लिया...

इनके चरण जहाँ भी पड़ते, वो तीरथ बन जाता है।
संत चरण दिनकर सम पाकर, पाप तिमिर छट जाता है।
'क्षमा' नमन करती है उनको, जो संतों की शान हैं॥ धार लिया...

(88) तर्ज : मिलो ना तुम तो...

गुरु भक्ति में मन न लगाओ, टी.वी. को अपनाओ।
तुम्हें क्या हो गया है।
जिन भक्ति में मन न लगाओ, तन को खूब सजाओ।
तुम्हें क्या हो गया है॥-2

मोह महामद पीकर, पर को ही देखो अपना रहे।
दिन रात एक करके, पापों से धन तुम कमा रहे।
गुरु की वाणी तुम्हें न भाये, धन को गले लगाओ॥ तुम्हें क्या...

सिगरेट दारु पीते, झूठन खाये ये बाजार की।
जैनी कुल में जन्में, देखो ये जैनी या नारकी।
सप्त व्यसन का त्याग करो ना, और जैनी कहलाओ ॥ तुम्हें क्या...

पुण्य उदय से प्राणी, गुरु संग तुमने पा लिया।
सेवा न करके उनकी, तुमने पाप कमा लिया।
बासा भोजन काम में लाओ, ताजे को ठुकराओ ॥ तुम्हें क्या...

कुछ तो समझ लो प्यारे, गुरुवर तुम्हें समझा रहे।
ये हैं वो देवता जो, ज्ञानामृत बरसा रहे।
'क्षमा' धर्म को न अपनाओ, तो पीछे पछताओ ॥ तुम्हें क्या...

(89) तर्ज : तुम पास आए...

गुरु दर्श पाये, मन हर्षाए गुरु गुप्ति नंदी, सबको लुभाये
मुद्रा दिगम्बर सबको ही भाती है चारित्र सुरभि जग में फैलाई है–2

भटका है मानव सुख चाह में, अटका है भोगों की राह में
कष्ट सब दूर हों, हे भगवन् द्वारे तेरे
गुरु चरणों में दुनिया आई है॥..... चारित्र सुरभि...॥

भाग्य की सोई कलियाँ खिली, सच्ची शरण गुरुवर की मिली
सारे गम दूर हो–हे भगवन् द्वारे तेरे
गुरुवर की वाणी से शान्ति पाई है॥..... चारित्र सुरभि...॥

गुरुवर बिना अज्ञानी बना, गर्व से था मैं कितना तना
मान सब चूर हो, हे भगवन् द्वारे तेरे
गुरु गुण गाने 'क्षमा' श्री आई है ॥..... चारित्र सुरभि...॥

(90) तर्ज : देना हो तो दिजिये...

ना माँगू सोना-चाँदी, ना माँगू कुछ उपहार।
भक्ति में करता रहूँ छूटे ना गुरु द्वार -2।।
ना माँगू.....

जनम-जनम का गुरु शिष्य का, नाता बड़ा अनोखा है।
गुरु बिना यह शिष्य आपका, बैठ अकेला रोता है ।।
हमें छोड़ न जाओ गुरुवर-2, बस सुनलो यही पुकार।
भक्ति में करता रहूँ.....।।

भटक रहे थे राह में हम तो, आकर हमे जगाया था।
अज्ञानी को ज्ञानी बनाने, अपने पास बुलाया था।।
में कदम बढ़ाऊँ कैसे-2, यहा काटे बिछे हजार...भक्ति...

गुरुवर के उपकारों को में, कभी भूला ना पाऊँगा।
रूठ न जाना गुरुवर मेरे, कैसे तुम्हें मनाऊँगा।।
तेरी याद गुरुवर आये-2, दर्शन पाऊँ हर बार...भक्ति...

थोड़े दिन तो पास रहे, अब हमको छोड़ के जाओगे।
गाँव-गाँव और शहर-शहर में, शिष्य अनेकों पाओंगे।।
इस शिष्य को भूल न जाना-2, 'आस्था' को लगाओ पार...
भक्ति में करता रहूँ.....

(91) तर्ज : फूलों सा चेहरा तेरा...

चंदा सी आभा तेरी, तारों सी मुस्कान है।
ज्ञान तेरा देखकर, वेष तेरा देखकर, मानव भी हैरान है-2

धर्म सिखा दे पाप मिटा दे, सत्य अहिंसा सबको बता दे
समकित को पाये पुण्य बढ़ाये, सन्मार्ग पथ की राह बता दे
मिथ्यात्व को नशाये, ज्ञान को फैलाये, त्याग तपस्या का मान बढ़ाये
संयम को धारे, तेरे द्वार आये, चरणों में तेरे पुष्प चढ़ाये
मुक्ति का राग लगा आये तेरे पास हैं।। ज्ञान तेरा...

स्याद्वाद रूपी वाणी से तुमने, कर दिया ज्ञान से जग में उजेरा।
मिल पाये हमको अमृत वाणी, तेरी शरण में होवे बसेरा।
राग-द्वेष त्यागा, समता को धारा, धरती गगन में नाम तुम्हारा।
तेरा साया पाने 'आस्था' भी आये, मिल जाये मुझको मुक्ति द्वारा
भक्ति की थाल सजा आये तेरे पास हैं।। ज्ञान तेरा...

(92) तर्ज : तेरा साथ है कितना प्यारा...

दर्शन पाकर मन हर्षाया, गुरु चरणों में शीश झुकाया।
दो चरणों का सहारा, हम आये शरण में,
गुरु तुमको ही ध्याया... दर्शन पाकर...

चलते-फिरते तीर्थ है, ये ही मेरे भगवान।
भक्ति कीर्त्तन हम करे, करे सदा गुणगान।।
चरणों की रज, शीश लगाये2, सोया भाग्य जागने।
हम आये शरण.....

कठिन तपस्या आपकी, जिसका ना कोई पार।
छवि गुरु की देखकर, झुम उठा संसार।।
योग लगाये, कर्म नशाये2, आये पुण्य कमाने।
हम आये शरण.....

आदिनाथ भी है यही, ये हो मेरे महावीर।
कुंद-कुंद भी है यही, संयम की तस्वीर॥
त्याग-तपस्या, इनकी देखो2, 'आस्था' से गुण गाये।
हम आये शरण.....

(93) तर्ज : आए हो मेरी जिंदगी...

गुरुओं के दिव्य दर्शन, सब पाप ताप हरते।
गुरुवर हमारे प्यारे-2 मुक्ति रमा को वरते॥

तप साधना में रत है, तन से ममत्व तजते।
समता को मन में धरते, परमेष्ठी मंत्र भजते।
जिन वेष को हैं धारे, निज ध्यान में ही रहते-2॥ गुरुवर...

उत्तम व्रतों को पाले, भव से तिराने वाले।
आतम विहार करते, मुक्ति को वरने वाले।
क्रोधादि पाप तजते, उत्तम क्षमा को धरते-2 ॥ गुरुवर...

निर्मल गुणों को पाया, परमात्म रूप ध्याया।
कर्मों के नाश कर्त्ता, ऐसे गुरु को पाया।
मंजिल को अपनी पाने, 'आस्था' से भक्ति करते-2 ॥ गुरुवर...

(94) तर्ज : गंगा जमुना में जब तक...

इस धरती पे सूरज व चंदा रहे।
इन गुरुओं का सत् संग भी मिलता रहे... मिलता रहे॥
गुरुवर हो मेरे गुरुवर-2...

1. आया रिमझिम बरसता ये सावन–2।
   आके हमको करो गुरु पावन॥
   एक चौमासा दो, हमको मौका ये दो।
   हम श्रीफल लिये यह अर्जी करे...यह अर्जी करे॥ गुरुवर..... इस.....

2. और तुमसे मैं कुछ भी ना चाहूँ–2।
   तेरे स्वागत में पुष्प बिछाऊँ॥
   आया अवसर बड़ा, ये भक्त खड़ा।
   तेरा आशीष हम पे सदा ही रहे...सदा ही रहे॥ गुरुवर..... इस.....

3. कब आओगे नगरी में गुरुवर–2।
   अब बोलो जरा हे ऋषिवर ! ॥
   श्रद्धा भक्ति जगी, मन में 'आस्था' लगी।
   तेरे चरणों की रज हम माँग रहे...माँग रहे॥ गुरुवर..... इस.....

(95) तर्ज : मुझे ऐसा वर दे दो...

शांतिसागर गुरुवर, शांति के सागर हो।
गुणगान करूँ तेरा, तुम गुण रत्नाकर हो॥

इस कलियुग में तुमने, मुनि मार्ग चलाया है।
मुनिचर्या पालन कर, जिन धर्म बढ़ाया है॥ जिन धर्म.....
सन्मार्ग–पथिक गुरुवर, सन्मार्ग दिवाकर हो। गुणगान.....

चारित्र चक्रवर्ती, चारित्र शिरोमणी हो।
वात्सल्य मूर्ति गुरुवर, संयम चूड़ामणी हो॥ संयम.....
है धन्य तेरी महिमा, करुणा के सागर हो। गुणगान.....

दक्षिण के सूरज बन, तुम ज्ञान किरण देते।
उत्तर के चंदा बन, मिथ्यामत हर लेते।। मिथ्या.....
सारे जग में न्यारे, तुम ज्ञान प्रभाकर हो। गुणगान.....
ऐसे शांति सिंधु, हमें आतम शांति दो।
जो आतम दीप बने, ऐसी तप ज्योति दो ।। ऐसी.....
वर 'चन्द्रगुप्त' को दो, तुमसा गुणआगर हो। गुणगान.....

(96) तर्ज : मधुबन के मंदिरों में...

महावीर कीर्ति गुरुवर, सबके हृदय समाये।
कलिकाल में ऋषिवर, महावीर तुम कहाये।।

गुरुवर बड़े तपस्वी, संसार में मनस्वी।
यशकीर्त्ति को न चाहा, फिर भी बने यशस्वी।।
वात्सल्य तेरे जैसा, अब हम कहाँ से पायें। कलिकाल.....

गुरु साधना के सूरज, सारे जगत में छायें।
तप त्याग की किरण बन, मूरत चमकती जाये।।
ऐसी वो सौम्य मूरत, हम सबके मन को भाये। कलिकाल.....

तुमने अनेक गुरुवर, उपसर्ग को सहा था।
पत्थर किसी ने मारे, फिर भी न कुछ कहा था।
समता के धारी तुमसे, हम साम्य भाव पायें। कलिकाल.....

हे धीर वीर गुरुवर, गंभीर चाल तेरी।
बन जाऊँ मैं भी तुमसा, बस ये ही आश मेरी।।
गुरुवर दो वर 'सुलभ' को, जीवन सुलभ बनायें। कलिकाल.....

(97) तर्ज : नानी तेरी मोरनी को मोर ले गये...

महावीरकीर्ति गुरुवर के ये नंदन प्यारे हैं।
जय-जय कुंथुसागर गुरुवर जग में न्यारे है।।

गुरुवर की मूरत मनहारी, सबके मन को भाती हैं।
मधुर-मधुर वाणी गुरुवर की, झूठ कभी ना जाती है।। महावीरकीर्ति...

करूणा के सागर हे गुरुवर, खुशियों की फुलवारी हो।
ज्ञानी ध्यानी निर अभिमानी, दुखियों के दुःखहारी हो।। महावीरकीर्ति...

गुरुवर के आशीष वचन से, सारे संकट मिटते हैं।
चाहे निर्धन या धनवाला, सबके दुःखड़े सुनते है।। महावीरकीर्ति...

बुढ़ों के संग बुढ़े गुरुवर, बच्चों के संग बच्चे हैं।
जग में इनका नाम बड़ा हैं, फिर भी मन के सच्चे हैं।। महावीरकीर्ति...

गुरुवर तेरे शिष्य रत्न में, गुप्तिनंदी महान हैं।
उनका नंदन 'चन्द्रगुप्त' ये, करता तुम्हें प्रणाम हैं।। महावीरकीर्ति...

(98) तर्ज : संदेश आते हैं...

गुरु को वंदन हो, सदा अभिनंदन हो।
कनकनंदी गुरुवर, तुम्हें शत वंदन हो।।
बड़े ही ज्ञानी हो, बड़े ही ध्यानी हो; गुणों की खानी हो।
तुम्ही तो इस युग की जिनवाणी हो। हो ऽऽ-3

गुरुवर ज्ञाता हैं, ऋषि निर्माता हैं।
महादानी गुरुवर, ज्ञान के दाता हैं।।
समीक्षायें करके जिनागम सिखलाते।
अहर्निश ग्रन्थों से हमे पथ दिखलाते।।

तुम्हारी वाणी में सत्य सुख–अमृत है।
तुम्हारें ग्रन्थों में तुम्हारी मूरत है॥
तुम्हारी मूरत में ज्ञान की सूरत है, ज्ञान की सूरत ही चाँद वा सूरज है।
गुरुवर चलते फिरते तीरथ हैं। होऽऽऽ

तुम्हें बच्चे चाहे बड़े–बूढ़े चाहे।
तुम्हें साधु चाहें आर्यिकायें चाहें॥
हमारे मन में भी तुम्हारी चाहत हैं।
तुम्हारे बिन गुरुवर हमे ना राहत है॥
भला क्या कोई है तुम्हे जो ना चाहे।
तुम्हारी चाहत में छिपी युग की चाहे॥
तुम्हे भारत चाहे, विदेशी भी चाहे, तुम्हे दुनियाँ चाहे।
सभी वैज्ञानिक गुरुवर को चाहें ॥ होऽऽऽ

हे गुरुवर कुन्थुसागर जी, हमे बात कहो उस सागर की।
वो सागर तुमको कहाँ मिला, जिसमें ये सुन्दर रत्न मिला॥
क्या खूब तेरी पहचान है, क्या खोजा रत्न महान् है।
क्या आप कोई जौहरी, जो रत्नों की पहचान की॥
वो रत्न कनकनन्दी बने वो ज्ञानधनी ज्ञानी बने।
वो रत्न तुम्हारी शान है इस संघ की पहचान है।

वो वैज्ञानिक आचार्य है तव शिष्यों के प्राचार्य हैं।
है नाम कनकनंदी उनका, चमके है कनक सम तप उनका।
वो कनकनंदी हैं– वो कनकनंदी हैं उन्ही के चरणों में ये 'गुप्तिनंदी'है।
मैं उनको ध्याता हूँ, गुरु गुण गाता हूँ, सभी कुछ पाता हूँ।
मैं अपना सोया भाग्य जगाता हूँ॥ होऽऽऽ...

(99) तर्ज : कोयल कूकें हूक उठाये...

गुरुवर कनकनंदी को ध्यायें, शिक्षा पायें हर्ष मनायें।
संत ऋषि वैज्ञानिक सब मिल।
गुरु गुण गायें रेऽऽऽ...।
सत्य-साम्य-सुख को समझाने गुरु बुलायेऽ रे....।

कुन्थुसागर के नन्दन, हो तुमको शत-शत वन्दन।
वैज्ञानिक सूरीश्वर का, करते हम सब अभिनन्दन।।
जैसे चम-चम कनक चमकता, वैसे गुरु का ज्ञान दमकता।
बड़े-बड़े आचार्य मुनि को आप पढ़ाये रेऽऽऽ....।। सत्य...।।

गुरु में बसती जिनवाणी है, फिर भी ना वो अभिमानी हैं।
वीरों सी चाल गुरुवर की, आगम के दृढ़ श्रद्धानी हैं।।
मिथ्यामत का खण्डन करते, आर्षमार्ग का मण्डन करते।
जैनागम की वैज्ञानिकता आप बताये रेऽऽऽ...।। सत्य...।।

सहकार करो तुम मुझको मैं, वैज्ञानिक धर्म तुम्हें दूंगा।
चन्दा चिट्ठा मतवादों में, ना तुमको मैं उलझाऊँगा।।
हम सब गुरु के दर्शन पायें, गुरु की पगरज माथ लगायें।
'गुप्तिनंदी' के मन मन्दिर में, आप समाये रेऽऽऽ...।। सत्य...।।

(100) तर्ज : होठों से छू लो...

क्या सोच रहे गुरुवर, आशीष वचन दे दो।
करूँ भक्ति तुम्हारी मैं, मेरी भक्ति अमर कर दो।।

पहले गंगाधर थे, अब भी गंगाधर हो।
तब शांत सी गंगा बहे, अब ज्ञान भी उसमें हैं।
तुम ज्ञान की गंगा हो, विज्ञान दिवाकर हो।। क्या सोच...

वैज्ञानिक नेता या, मैं साधु ही बनूँ।
जहाँ सत्य मिले मुझको, उसी पथ पर मैं चलूँ।
पथ जान गये गुरु तुम, सत्यार्थ प्रभाकर हो ॥ क्या सोच...

संयम पथ पर चलते, तुम शिवपथ के नेता।
अज्ञान तिमिर हरते, तुम कर्म गिरी भेत्ता।
अज्ञान तिमिर मेरा, क्षण भर में दूर करो ॥ क्या सोच...

तुम जान गये गुरुवर, है मोह बुरा बन्धन।
पहचान लो आतम को, कहते हरदम-हरक्षण।
'गुप्ति' त्रय पालक तुम, हमें अपनी शरण ले लो॥ क्या सोच...

(101) तर्ज : कनकनंदी गुरुदेव तुम्हारी जय हो...

कनकनंदी गुरुदेव तुम्हारी जय हो, वैज्ञानिक गुरुदेव तुम्हारी जय हो।
ज्ञानी में विज्ञानी, वैज्ञानिक ज्ञानी ध्यानी।
श्री आचार्य कनकनंदी को चाहे प्राणी प्राणी॥ कनकनंदी.....

कुंथु गुरुवर के शिष्यों में आप हो बड़े। आप...
उनके सारे शिष्य गुरुवर आपसे पढ़े।
कुंथुसागर देवकी तो आप माँ यशोदा हैं।
सब साधुगण को शिक्षा दे तुमने पाला पोसा हैं॥
पद्मनंदी से ज्ञानी, देवनंदी से ध्यानी।
श्री आचार्य कनकनंदी को चाहे प्राणी प्राणी॥ कनकनंदी.....

वैज्ञानिक आचार्य जग में आप कहाये॥ आप...
निस्पृह व निर्भीक वक्ता धर्म सिखाये॥
आपके शिष्यों में 'गुप्तिनंदीजी' का नाम हैं।
मात राजश्री मात क्षमाश्री, शिष्याओं की शान हैं॥

प्रामाणिक गुरु वाणी, जैसे हो जिनवाणी।
श्री आचार्य कनकनंदी को चाहे प्राणी प्राणी।। कनकनंदी.....

वैज्ञानिक संगोष्ठियाँ आप कराये ।। आप...
शिविर लगाके भावी पीढ़ी आगे बढ़ायें।।

देश विदेशों में गुरुवर का देखो कितना नाम हैं।
'चन्द्रगुप्त' का गुरु चरणों में बारंबार प्रणाम हैं।।

गुरुवर स्वाभिमानी, होंगे केवलज्ञानी।
श्री आचार्य कनकनंदी को चाहे प्राणी-प्राणी।।
कनकनंदी गुरुदेव तुम्हारी जय हो, वैज्ञानिक गुरुदेव तुम्हारी जय हो।।

(102) तर्ज : बहुत प्यार करते...

कनकनंदी गुरुवर तुमको नमन-2
ले लो हमें भी-2 अपनी शरण।। कनकनंदी...

अनुशासन में चलना सिखाते।
सत्य धर्म का पाठ पढ़ाते।
तुम हो गुरुवर-2 तारण तरण।। कनकनंदी...

नाना विधाओं का ज्ञान कराते।
स्वावलम्बी गुरुवर हमको बनाते।
समता गवेषक-2 सच्चे श्रमण ।। कनकनंदी...

'राजश्री' भी चरणों में आई।
भक्ति सुमन की माल बनाई।
दे दो मुझे भी-2 ज्ञान रतन ।। कनकनंदी...

(103) तर्ज : तू जब जब मुझे...

गुरुवर ने हमें बुलाया श्रुत पंचमी पर्व मनाया।
आगम की विधि बताकर हमको सन्मार्ग दिखाया।।
भक्तों का पुण्य है आया ज्ञानी गुरुवर को पाया।
श्रुतपंचमी पर्व बताकर जन-जन को मार्ग बताया।
तुम ज्ञानी बनाते हमें निज सा बनाते।
गुरु श्रुत गामिया... तेरा शरणा लिया ज्ञान हमको मिला-2

जहाँ पड़े गुरु के चरण तीरथ वही महान है।
कनकनंदी गुरु मिले पाया ज्ञान भण्डार है।
ज्ञान-विज्ञान को पाके हम अजर-अमर हो जायेंगे।
जिनवाणी की सेवा से जीवन सफल बनायेंगे।
निज भक्त बना लो मुझे शरणा में ले लो
गुरु श्रुत गामिया... तेरा शरणा लिया...2

अज्ञानी बन भटक रहे भौतिकता के जाल में।
नैतिकता से दूर हम फंसे विदेशी माल में।
गुरु की शरण को पाके मैं ज्ञान उजाला पा गया।
मोक्ष महल कैसे चढ़ूँ जिन आगम बतला रहा।
शिव शक्ति दिला दो मुझे निज सा बना लो
गुरु श्रुत गामिया...तेरा शरणा लिया...2

जिनवाणी की सेवा में जन मन का उत्थान है।
ज्ञान निधि इससे मिले आगम ज्ञान महान है।
सरस्वती की शरण से बुझती भव की प्यास है।
पाऊँ सदा ही ये शरण 'क्षमा' की ये ही आश है।
मुझे ज्ञानी बना दो भव पार लगा दो
गुरु श्रुत गामिया...तेरा शरणा लिया...2

(104) तर्ज : कोयल कूके हूक उठाये...

बादल झूमे, सावन आये, गुरुवर गुप्तिनंदी आये
भक्ति में ये डूबे मानव, शिक्षा पाये रे
सच्चे सुख की राह बताने, गुरु बुलाये रे–2

गंभीर हैं गुरुवर ज्ञानी, जो आतम के हैं ध्यानी।
हैं वीतरागी निर्ग्रन्थ दिगम्बर, छोड़ दिया सारा आडम्बर॥
छोड़ो सब जग झूठे सपने, गुरुवर जी हैं तेरे अपने।
धर्म को भूले मानव तुझको, याद दिलाये रे॥ सच्चे सुख...

गुरुवर करुणा की मूरत है, हमें उनकी बड़ी जरुरत है।
क्रांतिकारी उपकारी हैं, सबके सब संकटहारी है॥
जिसको गुरु आशीष है मिलता, दुःख उससे निश्चित ही डरता।
गुरु को भूले मानव तुझको, याद दिलाये रे ॥ सच्चे सुख...

हम सब अज्ञानी बालक हैं, गुरुदेव हमारे पालक हैं।
हो प्रखर प्रवक्ता कहलाते, गुरु सत्य धर्म को बतलाते॥
बालक वय में दीक्षा धारी, बनने आतम राम विहारी।
'क्षमा' धर्म के धारी गुरुवर, याद दिलाये रे ॥ सच्चे सुख...

(105) तर्ज : दिल तो पागल है...

पहली–पहली बार ये अवसर आया है
गुप्तिनंदी का सत्संग पाया है। हम तो झूमेंगे, नाचे–गायेंगे–2।

जिन धर्म का ध्वज फहराया है
गुप्तिनंदी का संग पाया है
राजश्री माँ की छत्र छाया है
कैसा ये प्यारा संघ पाया है।
भक्ति करने का शुभ अवसर आया है–2॥ गुप्तिनन्दी...

गुरु दिगम्बर ये मनहारे हैं
सारे जहाँ से जो न्यारे हैं
गुरुओं की भक्ति पार लगाती है
जीवन में जीना हमें सिखाती है
ज्ञान पाने का शुभ अवसर आया है–2॥ गुप्तिनन्दी...

इनके चरणों में जो भी आयेंगें
पुण्य निधि वो पा जायेंगें।
भूले मानव को राह बताते हैं
'क्षमा' धर्म को अपनाते हैं॥
शान्ति पाने का शुभ अवसर आया है–2॥ गुप्तिनन्दी...

(106) तर्ज : हम सब नन्हें बच्चे

हम सब गुप्तिनंदी गुरु की, जीवन गाथा गाते है।
सुनलो–सुनलो–सुनलो भक्तों हम सब तुम्हें सुनाते हैं॥

जिस नगरी में जन्में गुरुवर वो नगरी भोपाल हैं।
वो नगरी भोपाल हैं जी वो नगरी भोपाल हैं।
कोमलचंद के नंदन माता त्रिवेणी के लाल हैं॥ हम सब.....

कुंथुसागरजी गुरुवर ने दीक्षा दी गुरुदेव को। दीक्षा दी.....2
रोहतक नगरी में गुरुवर ने धारा मुनिवेष को ॥ हम सब.....

श्री आचार्य कनकनंदीजी शिक्षा गुरु आपके। शिक्षा गुरु.....2
ज्ञानी–ध्यानी बन गये गुरुवर हरने बंधन पाप के॥ हम सब.....

गुरुवरजी आचार्य बने थे गोम्मटगिरी के द्वार पे। गोम्मगिरी...2
बज रहे थे ढोल–नगाड़े, गुरुवर के दरबार में॥ हम सब.....

पूजन भक्ति हम सब मिलकर, गुरुवर की रचाते हैं। गुरुवर की...2
'चन्द्रगुप्त' भी श्री गुरुवर का, जय–जयकार लगाते हैं॥ हम सब....

(107) तर्ज : गुप्तिनंदी-2 गीत गाओ रे...

आओ आओ भक्तों मिल आओ रे।
जयकारा गुरुदेव का लगाओ रे॥

जिनका बड़ा भारी नाम, जिनके बड़े भारी काम2।
ऐसे गुप्तिनंदीजी के गुण गाओ रे।
गुप्तिनंदी गुप्तिनंदी गीत गाओ रे2॥

जैन साधुओं में तेरा नाम हैं बड़ा, नाम हैं बड़ा तेरा नाम हैं बड़ा।
गहनों में जैसे कोई हीरा जड़ा, हीरा जड़ा जैसे हीरा जड़ा॥

गुरुवर तेरा नाम चिंतामणी के समान हैं।
आपको पाया तो चिंतामणी से क्या काम हैं-3॥
आओ-आओ चिंताऐं मिटाओ रे।
चिंता छोड़ो बिगड़ी बनाओ रे॥ जिनका बड़ा.....

त्रिवेणी माता के सुत पग पायले, पग पायले गुरु पग पायले।
जिसपे तेरा हाथ वह फूले वा फले, फूले वा फले वह फूले वा फले॥

आपकी पीछी से होते बड़े बड़े काम हैं।
झोपड़ी का वासी पाये महल मकान हैं-3॥
आओ-आओ पीछी लगवाओ रे।
दुखड़ों से पीछा छुड़वाओ रे॥ जिनका...

हे गुरुदेव ! हे गुरुदेव ! लिखते सुंदर काव्य सदैव-2।
हे गुरुवर ! तुम काव्य धनी, कौनसी कविता नहीं आपसे बनी।
कलम तुम्हारी जैसे जादू की छड़ी, लिखे रचनाऐं जो की बड़ी से बड़ी।

हे गुरुदेव ! हे गुरुदेव ! लिखते सुंदर काव्य सदैव-2।
सरस्वती माता ने जिनको दिया अटल वरदान हैं॥
ऐसे गुरुवर गुप्तिनंदी ने लिखे अनेक विधान है॥ हे गुरुदेव.....

नवग्रह शांति विधान लिखा, जिससे ग्रह दु:ख दूर भगा।
गणधर वलय विधान से, दीक्षार्थी का पुण्य जगा॥
पंचकल्याण विधान से, गुरुवर जग कल्याण करें।
रोट तीज निर्धन को भी, धन से मालामाल करें।
रत्नत्रय सुविधान तुम्हारी, प्रज्ञा की पहचान हैं।

काव्य मंजूषा सावधान भी, कविताओं की शान हैं॥
तीस चौबीसी का विधान भी, सर्व विधान प्रधान हैं।
कुंथु गुरुवर के शिष्यों की, गुप्तिनंदी गुरु शान हैं॥
हे गुरुदेव ! हे गुरुदेव !, लिखते सुंदर काव्य सदैव 2।
हे गुरुवर ! तुम काव्य धनी.....

चरणों में तेरे मेरा शीश रहे, शीश रहे मेरा शीश रहे।
शीश पे तुम्हारा आशीष रहे, गुरुजी तुम्हारा आशीष रहे॥

आप हो चंदा तो हम तारों के समान हैं2।
चंद्रमा की चाँदनी से तारे शोभमान हैं2।
चंद्र जैसे तुम्हें 'चंद्रगुप्त' का प्रणाम हैं।
भक्ति की मधुर धुन गाओ रे।
सोया हुआ भाग्य जगाओ रे॥

जिनका बड़ा भारी नाम, जिनके बड़े भारी काम2।
ऐसे गुप्तिनंदीजी के गुण गाओ रे।
गुप्तिनंदी गुप्तिनंदी गीत गाओ रे॥

(108) तर्ज : कब से आये तेरे दूल्हे राजा

जीवन की डोर में तेरा ही नाम।
तू ही महावीर है तू ही है राम।। हो ऽऽऽ आ ऽऽऽ

दर्शन दो गुरुवर, हम आये दर्शन पाने।
आये हम गुरुवर, गुप्तिनंदी को ध्याने।।
तेरे चरणों में हो जायेंगें गुम-गुम-गुम-गुम
गुरुवर के दर आये, मन मेरा हरषाये।-2

हम भक्ति के भाव ले, तव चरणों की छाँव में।
आये दर्शन को, गुरुवर-गुरुवर।
दर्शन गुरुवर आप दो, हरलो भव-संताप को।
चरणों की रज दो, गुरुवर-गुरुवर।
पाये आज पायें, संयम व्रत को पाये2।
तेरे चरणों की रज धूलि को चुन-चुन-चुन-चुन। गुरुवर के दर...

कुंथु गुरु के पास में, महाव्रतों की आस में।
छोड़े जग वैभव, गुरुवर-गुरुवर।
कनकनंदी के साथ में, ले जिनवाणी हाथ में।
ज्ञान रतन पायें, गुरुवर-गुरुवर।
चरणों में झुक जाऊँ, ज्ञान रतन पा जाऊँ2।
ज्ञानी बन जाऊँ जिनवाणी को सुन-सुन-सुन-सुन। गुरुवर के दर...

कृपा गुरुवर आपकी, तोड़े बेड़ी पाप की।
हो दु:खहारी तुम, गुरुवर-गुरुवर।
हम पर भी करुणा करो, भव-भव के बंधन हरो।।
दो आशीष हमें, गुरुवर-गुरुवर।
'चन्द्रगुप्त' भी आये, चरणों में बस जाये2।
भक्ति के घुँघरु जय बोले है, रून-झुन-रून-झुन। गुरुवर के दर...

(109) तर्ज : पैरों में बंधन है...

गोम्मटगिरी के अँगना, गूँजे शहनाई चहुँ ओर।-2
गुरु गुप्ति आचार्य बने-2, जयकारा बोले इन्दौर॥
गोम्मटगिरी के अंगना ऽऽऽऽऽ

दर्शन ज्ञान चरित्रादि, पंचाचार धरे घनघोर।
हे गुप्तिनंदी गुरुवर, हमको बाँधो अपनी डोर॥
गोम्मटगिरी के अंगना ऽऽऽऽऽ

तेरे दर्शन से हे गुरुवर, मेरे मन की कलियाँ।
खिले ऐसे वो जैसे हो, चमकती फूलझरियाँ॥
चमकती है दमकती है, मुझे चमकाती है।
तेरे आशीष की किरणें, मुझे दमकाती है॥

लो मैं द्वारे आ गया, भक्ति बाना ओढ़ के।
दुनियाँ के सारे बंधन, तोड़े मोड़-मरोड़ के॥
अब चरणों में गिर जायें,भव सागर से तिर जायें।
पा जायें भवसागर छोर। गोम्मटगिरी...

दिखा अंतराय जब गुरुवर, को अपने गुरुवर का।
तभी चाहा उसी क्षण में, प्रशासन शिवपुर का।
सभी बोले कठिन ये राह, तुम्हें ना जाने दे।
तभी बोले मेरे है त्याग, पीने खाने के॥

मात त्रिवेणी रोय कर, ममता से है रोकती।
ममता की सरिता जननी, कैसे सुत को छोड़ती।
फिर भी गुरुवर ना माने, कहते दुनियाँ क्या जाने।
भवसागर कैसा घनघोर। गोम्मटगिरी.....

सुरि कुंथु से जन्मे हो, कनकनंदी पाले।
वो दीक्षा दे उबारे हैं, ये शिक्षा से तारे॥
गुरु आशीष के बल पे, बड़े ही ज्ञानी हो।
तेरे आशीष के बल हम, वरे शिवरानी को॥

तेरा समवशरण मनहर, होवें जिस स्थान पर।
मैं बैठूँ पहले कोठे, गणधर के स्थान पर॥
ये 'चन्द्रगुप्त' है चाहे, तेरे जैसी ही राहे।
चलने सिद्धशिला की ओर। गोम्मटगिरी...

(110) तर्ज : धूम मचा ले...

गुप्तिनंदी गुरुवर आये, सब भक्तों का मन हर्षायें।
कोई नहीं है उनके जैसा।
एक बार जो द्वारे आये, बार-बार वो आता जायें।
उनका ये आकर्षण कैसा।

आओ भक्तों ! भक्ति कर लो, अपनी खाली झोली भर लो।
भटक न जाओ भवसागर में घूम-घूम-घूम-घूम
गुरुवर की जय बोलो झूम-झूम, गुप्तिनंदी की जय-जय बोलो झूम।

वीतरागी हैं वो नहीं रागी हैं वो, हमको अनुराग उनसे लगा।
जग में न्यारे हैं वो सबके प्यारे हैं वो, उनकी भक्ति में मन है रंगा।
आओ मिलकर वंदन कर लो, अपने सारे क्रंदन हर लो।
आओ भक्तों भक्ति कर लो झूम-4, गुरुवर की...

आओ अर्चन करें आओ पूजन करें, प्रज्ञायोगी गुरुराज की।
गाये गुणगान हम करते जयकार हम, बालयोगी ऋषिराज की।
चरणों की रज धूलि पायें, चरणों की धूलि बन जाये।
भक्ति में हम नाचें-गायें झूम-4, गुरुवर की...

इनके दरबार जा गुरु दर्शन को पा, भक्तों के मन की कलियाँ खिले।
ज्ञानी बन जायें हम हर ले अज्ञानतम, हमको ज्ञानी गुरुवर मिले।
'चन्द्रगुप्त' भी द्वारे आये, अपना जीवन सुलभ बनाये,
श्रद्धा के फूलों को लाया चुन-4, गुरुवर की...

(111) तर्ज : संदेशे आते हैं...

गुरुवर चंदा हो, गुरुवर सूरज हो।
गुरु गुप्तिनंदी, क्षमा की मूरत हो॥
जगत के प्यारे हो, जगत में न्यारे हो, नयन के तारे हो
तुम्ही तो सबके पालनहारे हो। हो ऽऽऽ

गुरुवर ज्ञानी हैं, बड़े ही ध्यानी हैं।
सभी गुण होते भी, नहीं अभिमानी हैं।
श्रमण चर्या पाले, महाव्रत को धारे।
दिगम्बर मुद्रा में, लगे सबको न्यारे।
तेरे मुखड़े पर ही, सरलता झलके है।
उसी के दर्शन को, मेरा मन ललके है।
ललक ऐसी जागी, लगन ऐसी लागी, बनूँ मैं वैरागी
तेरे गुण गाकर मनवा हर्षे है॥1॥ होऽऽ

मधुर वाणी तेरी, सभी को भाती है।
सभी के जीवन में, मधुरता लाती है॥
संदेशा ये देती, जगत के प्राणी को।
यदि सुख पाना है, भजो जिनवाणी को॥
तुम्हारी मूरत ही, दु:खों को हरती है।
दया तेरी मन को, खुशी से भरती है॥

उठाये गिरते को, हँसाये रोते को, जगाये सोते को।
सभी की खाली झोली भरती है।।2।। होऽऽ

ऐ भटकने वाले राही चलो, ले चलूँ मैं तुम्हे मेरे संग चलो।
उस राह चले, उनके चरणों की छांव तले।।
वो जाये चरण जहाँ–जहाँ, हो जाये चमन वहाँ–वहाँ।
रूक जावे वो चरण जहाँ, वो तीरथ धाम बने वहाँ।।
जो भी उनके गुण गायेगा, उनके जैसे गुण पायेगा।
वो पावन नाम सुनो उनका, वो नाम हरे दुःख हर मन का ।।
जो नाम हरे दुःख हर मन का, वो पावन नाम सुनो उनका।
मुनिवर वो सबके, ऋषिवर वो सबके।
गुरु गुप्तिनंदी, गुरुवर हम सबके।।
गुरुवर शरणा दो, हमें चरणों में लो, चरण की रज दे दो।।
'चन्द्र' का उलझा जीवन सुलझा दो।
हो ऽऽऽ, गुरुवर चंदा हो....

(112) तर्ज : म्हारे हिवड़ा में नाचे मोर...

गुरु गुप्तिनंदी को आज, मेरा शीश नवैया।
बस जाऊँ द्वारे आज, तिरे भव की नैया।।
छोड़ के बंधन जग के क्रंदन आया द्वार खिवैया। गुरु ...
तेरा द्वार स्वर्ग से सुंदर है, जो जगमंडल से मनहर है। हो ऽऽऽ तेरा...
भटका आया भव फेरों में, ये जीवन तुझ पर निर्भर है।
कर्मों की ये धूप नशाने, दो चरणों की छैया ।। गुरु .....
हे सौम्यमूर्ति मनहारी गुरु, तू त्याग तपस्या मूरत है। होऽऽऽ हे...
हमको चरणों का साया दो, हे गुरुवर तेरी जरूरत है।।
मेरा जन्म सुधारो गुरुवर, बसना मेरे हैया।। गुरु.....

ये भ्रमण अति दु:खदायी है, कभी जन्म लिया कभी मरना है। होऽऽऽ ये...
नर तन पाया है इस भव में, अब जीवन में कुछ करना है।
'चन्द्रगुप्त' को दे दो आशीष, गुरुवर तारो नैया।। गुरु.....

(113) तर्ज : ये मौसम का जादू है मितवा...

मनवा हरषे-2, फूला ना समाये। दर्शन पाकर, हम हरषाये।।
गुरु गुप्तिनंदी हमारे, तुम्ही हो हमारे सहारे।
मनवा मेरा हैं मगन, गाता गुरुवर के भजन।।
गुरु भक्ति में झूमें गायें।।

तेरे चरणों में आये, भक्ति की माला पहने।
मैंने मन पे ओढ़े हैं, श्रद्धा फूलों के गहने।।
दुनियाँ में हैं मोह-माया, तेरा ही दरबार भाया। होऽऽ गुरुवर...

तुम ही हो सम्यक्ज्ञानी, हम हैं कितने अज्ञानी।
तेरा पथ अपनायेंगे, महिमा अब तेरी जानी।।
भक्तों की सुनलो ये विनती, शिष्यों में कर लेना गिनती। होऽऽ गुरुवर...

जब-जब भी संकट आये, तुझको ही ध्यायेंगे हम।
तेरा चिन्तन करने से, सबके मिट जायेंगें गम।।
ओ 'चन्द्रगुप्त' के प्यारे, तुम ही गुरुवर हमारे। होऽऽ गुरुवर...

(114) तर्ज : तुम पास आए...

गुरुदेव आये, सबको जगाये। गुरु गुप्तिनंदी को, भूल न पाये।।
गुरु भक्ति के हम संगीत गाते हैं, गुरु गुप्तिनंदी मन को लुभाते हैं ।।
भटका हुआ था भव राह में। दुनियाँ के भोगों की चाह में।।
ज्ञान की रश्मियाँ हे गुरुवर तुमसे मिली,
तेरी छवि हम मन में बसाते है ।। गुरु गुप्तिनंदी..

जैनी हुआ पर जैनी न था।
मानव हुआ पर मानव न था।।
तेरे संस्कार की कलियाँ मेरे मन में खिली।
संस्कार जिनके जीना सिखाते हैं ॥ गुरु गुप्तिनंदी...

गुरुवर तुम्ही हो तारण-तरण।
तुम ही सुधारो मेरा जनम।।
तोड़ दो हे गुरु 'चन्द्रगुप्त' की, भव की कड़ी।
गुरुवर हमें ही भव से तिराते हैं।। गुरु गुप्तिनंदी...

(115) तर्ज : हमको हम ही से छुड़ालो...

हमको भ्रमण से तिरालो, शिवपुर राही बना लो।
हम फँसे है भव भ्रमण में, कर्म वैरी ऐसे रण में।
द्वार आये गुरुवर बचालो।।

ये मन भटका तो, अपना साया दो।
चरणों की गुरुवर, हमको छाया दो।।
लख चौरासी में भटके, मिथ्याज्ञान रहा उलझाये।
पुण्योदय अब आया हैं, सम्यग्ज्ञान सदा सुलझाये ॥
तुमसे ही हो नाता, हे गुरुवर जग त्राता। द्वार आये.....

नर तन पाकर भी, उसको ना समझा।
देव नरक आदि, फेरों में उलझा।
अब तो ये ही आशा है, मुझमें ज्ञान सुधा भर दो।
मैं पापों का पंक हरूँ, मुझको सिद्धशिला वर दो।।
वर लूँगा शिवरानी, तेरी डगर है ठानी। द्वार आये.....

मेरे कर्मों की, धूल उड़ा देना,
अपने चरणों का, फूल बना देना।

जिसमें ज्ञान रूपी भौरें, उनमें सम्यक्–गुंजन भर दो।
गुरुवर ये खुशबु फैला, मिथ्याक्रंदन को हर लो॥
आया है 'चन्द्र' शरण, नाश करें जन्म मरण
द्वार आये गुरुवर बचालो। हमको.....

(116) तर्ज : आँखें खुली हो या हो बंद...

गुरु गुप्तिनंदी की शरण, उद्धार उसी का होता है।
गुरु भक्ति की सरिता में, जो भी लगाये गोता है॥
जय हो गुरु गुप्तिनंदी जय तुम्हारी हो।2

आज हे गुरुवर तेरे, चरणों में झुकते हैं हम।
तेरे चरणों में ही गुरुवर, मेरे मिटते हैं गम॥
तेरी शरण में हे मेरे गुरु, छोटा सा घर है बना लिया।
कैसी लगी भीड़ भक्तों की ये, पूरा नगर बसा लिया॥
जो नाम भव से तार ले, जपना उसी का होता है। गुरु भक्ति की...

हम अकेले ही गुरुवर, भव–भ्रमण में फिरे।
ये निरर्थक मंजिलें हैं, चढ़ के हम हैं गिरे॥
तेरे ही द्वारे पे आके सभी, नहीं गिरेंगें कभी प्रभो।
तेरी ही राहों पे चलते हुए, भव से तिरेंगें हम विभो।
जो तुमको भूल जायेगा, संसार उसी का होता है। गुरु भक्ति की...

गम मेरे मिट जाये गुरुवर, जन्म–मृत्यु के आज।
सारे कर्मों को नशाऊँ, पाऊँ मुक्ति का राज॥
तेरा सहारा ही चाहें सभी, पापों से मुक्ति यहीं मिले।
भोगों ही भोगों में डूबे हुए, प्राणी को तृप्ति ना मिले॥
ये 'चन्द्रगुप्त' भक्ति से, चरणन गुरु के धोता है। गुरु भक्ति की...

(117) तर्ज : चुड़ी जो खनकी...

गुप्तिनंदी गुरुराज रे–2 हमको करलो भव पार
तेरी जयकार करे...

पग–पग पर काँटे चुभते, बढ़ते–बढ़ते पग डिगते।
हमको रंगलो अपने रंग, गुरुवर ले लो अपने संग
गुरुवर बचाओ दु:ख जाल से–2 हमको...

तेरे चरण की धूल हैं हम, तेरे प्यारे फूल हैं हम।
तुम जो साथ में हो गुरुवर, हमको नहीं है कुछ भी गम॥
तारो हमें संसार से–2 हमको...

हमने तुमको ध्याया हैं, सर्व सुखों को पाया है।
'चन्द्रगुप्त' के जीवन में, अब ना दु:ख का साया है।
गुरुवर तेरा आधार दे–2 हमको...

(118) तर्ज : यारो सब साथ चलो...

भक्तों सब साथ चलो, मिलके गुणगान करो।
गुरुवर के चरणों में, वंदन हजार करो॥
लेंगें चरणों में आज वो हमें।

गुप्तिनंदी गुरुवर, तुझको प्रणाम।
जग के ओ सरताज, तेरा ऊँचा नाम॥
सारे जग में है तेरी, महिमा महान।
तुझको ही ध्याऊँ, दिन रात सुबह शाम॥
आया मैं तो, तेरे द्वारे, ओ गुरुवर। गुप्तिनंदी...

आश लगाई हैं, दर्श की गुरुवर।
महिमा महान तेरी, तू ही मेरा जिनवर।

शिवपुर जाने की राह है तेरा दर।
ले ले शरण में है ना दुनियाँ का डर।
आया मैं तो, तेरे द्वारे, ओ गुरुवर। गुप्तिनंदी...

समझ न पायेगा ये मेरा मन, चरणों में अर्पण तन मन धन।
आया मैं तो, तेरे द्वारे, तेरे द्वारे आया मैं तो। समझ...
आया मैं तो तेरे द्वारे ओ गुरुवर। गुप्तिनंदी...

साँसों में मेरी आप बसे, चरणों में तेरे पाप नशे॥
आया मैं तो तेरे द्वारे, तेरे द्वारे आया मैं तो... साँसों...
आया मैं तो तेरे द्वारे ओ गुरुवर। गुप्तिनंदी...

तेरे चरण की धूल हैं हम, तेरे प्यारे फूल है हम॥
आया मैं तो तेरे द्वारे तेरे द्वारे आया मैं तो... तेरे चरण...
आया मैं तो, तेरे द्वारे, ओ गुरुवर। गुप्तिनंदी...

तेरा आशीर्वाद मिले, 'चन्द्रगुप्त'' भव नाव तिरे।
आया मैं तो तेरे द्वारे तेरे द्वारे आया मैं तो... तेरा आशी...
आया मैं तो, तेरे द्वारे, ओ गुरुवर। गुप्तिनंदी...

(119) तर्ज : जहाँ डाल-डाल पर...

आचार्य गुरु गुप्तिनंदी के, चरण कमल को ध्यायें।
गुरु चरणन शीश झुकायें।-2
गुरुवर की शांत प्रशांत मूरतियाँ, सबके मन को भायें।
गुरु चरणन शीश झुकायें।-2

भोपाल नगर के नयन सितारे, मात त्रिवेणी प्यारे।-2
तेरा इक दर्शन ही दु:खियों को, दु:खसागर से तारे॥-2
हे क्रांतिकारी गुरुवर तुम, सारे जग भर में छायें। गुरु.....

सम्यग्दर्शन है मूल तरू की, ज्ञान स्कंध घनेरा।-2
सम्यग्चारित्र रूपी शाखाऐं, डाले उन पर डेरा।।-2
ऐसे पावन आचार्य तरू पे, मुनिवर सब बस जाये। गुरु.....

जो धर्म क्रांति फैलाकर जग में, धर्म ध्वजा फहरायें।-2
वो ध्वज तेरे आशीष वचन से, लहर-लहर लहराये।।-2
इस 'चन्द्रगुप्त' की आश यही है, भवसागर तिर जाये।गुरु.....

(120) तर्ज : अच्छा सिला दिया...

गुप्तिनंदी गुरुवर, तुझको प्रणाम।
भक्तों के हृदय में है, गुप्तिनंदी नाम।।

छोटी-छोटी कलियाँ ये, फूल बन जायें।
तेरे चरणों की रज, धूल बन जायें।। हो ऽऽऽ-2
तेरे धाम से ही पायें, मुक्तिपुरी धाम।-2 भक्तों के...

छोटे-छोटे फूल मिल, माला बन जायें।
तेरी भक्ति सरिता की, धारा बन जाये। हो ऽऽऽ-2
उस धारा से करेंगें, पाद-प्रक्षाल।-2 भक्तों के...

छोटे-छोटे हाथों में, नीर झारी लाऊँ।
चरणों में धारा देत, रोग को नशाऊँ। हो ऽऽऽ-2
'चन्द्रगुप्त' करें गुरु-गुणगान। भक्तों के....

(121) तर्ज : बच्चे मन के सच्चे...

गुरुवर गुप्ति गुरुवर, हम सबके तारणहारे।
हम अज्ञानी बालक आये, गुरुवर तेरे द्वारे।।

हम बालक अज्ञानी हैं, गुरुवर ज्ञानी ध्यानी हैं।
सबको ज्ञान प्रदान करें, गुरुवर निर अभिमानी हैं॥
इनके हृदय में क्रोध नहीं, मान कपट और लोभ नहीं।
इनकी सुंदर सौम्य छवि लख, दुखियों के दुख हारे। गुरुवर.....

जग के रिश्ते नातों से, गुरुवर तो वैरागी हैं।
बड़ा अजब फिर भी जग ये, गुरुवर का अनुरागी है॥
इनका जो भी दर्श करे, मन में ऐसा हर्ष भरे।
एक बार के दर्शन से ही, आये हरदम द्वारे। गुरुवर.....

गुरुवर का आशीष मिले, हृदय कमल की कली खिले।
हृदय कमल में बसा उन्हें, उनके जैसी राह चले॥
चरणों में झुक जायेंगे, तुम जैसे बन जायेंगे।
'चन्द्रगुप्त' के तुम हो ऋषिवर लालन-पालनहारे॥ गुरुवर.....

(122) तर्ज : लकड़ी की काठी...

गुरु गुण गाओ, गुरु पद पाओ, गुप्ति गुरु की भक्ति रचाओ।
आओ-आओ-आओ भक्तों, भक्ति करने आओ।

प्रज्ञायोगी आप हो, कविहृदय कहलाते हो।
ज्ञान सरिता आप हो, सच्ची बात बताते हो॥ जय-हो-4 प्रज्ञायोगी.....
आओ-आओ-आओ भक्तों ज्ञान रतन को पाओ। गुरु गुण गाओ...

तुमने शिविर लगाया है, सबको जैन बनाया हैं।
पूजन पाठ सिखा करके, जीना हमें सिखाया है॥ जय हो-4 तुमने.....
आओ-आओ-आओ भक्तों ज्ञान शिविर में आओ। गुरु गुण गाओ...

हम सब बच्चे आये हैं, हमको चरणों में ले लो।
तुम जैसे बन जायेंगे, आशीर्वाद हमें दे दो॥ जय हो-4 हम.....
आओ-आओ-आओ-भक्तों 'चन्द्रगुप्त' संग आओ। गुरु गुण गाओ...

(123) तर्ज : आये हो मेरी जिंदगी में...

आया हूँ मैं तो द्वारे, सेवक गुरु का बनके।-2
आशीर्वाद देना, गुरु गुप्तिनंदी सबके।

चलते हो मोक्षपथ पर, पुरुषार्थ अपना करते।
संयम के धारी गुरुवर, संयम का दान करते।
कल्याण करने वाले, कल्याण मेरा करके।-2 आशीर्वाद...

नीरस को रस बनाते, अज्ञानता मिटाते।-2
मुक्ति डगर पे चलकर, उन्मार्ग से हटाते।
समता के धारी गुरुवर, तुम सम मुझे बनाके।-2 आशीर्वाद...

संसार को नकारा, घर बार छोड़ करके।-2
सबको सुखी बनाया, संताप सबके हरके।
आया हैं 'चन्द्र' तेरा, भक्ति के पुष्प ले के। आशीर्वाद...

(124) तर्ज : हे राम ऽऽऽ ...

गुरुदेवऽऽऽ गुरुदेवऽऽऽ, गुरुदेवऽऽऽ गुरुदेवऽऽऽ

हे प्रज्ञायोगी, हे बालयोगी। जग में फैलाये, ज्ञान की ज्योति॥
ज्ञान रवि गुरुदेव। गुरुदेवऽऽऽ...

कुंथु गुरु से, मुनिव्रत पाये। कनकनंदी से, शिक्षा पाये॥
करते गुरु पद सेव। गुरुदेवऽऽऽ...

श्रुत पंचमी को, सूरि पद पायें। इंदौर नगरी, झूमे नाचे गाये।
लख आचार्य जिनेश। गुरुदेवऽऽऽ...

ढोल नगाड़े, वीणा बजायें, गुरु गुण पाने, गुरु गुण गाये॥
'चन्द्रगुप्त' स्वयमेव। गुरुदेवऽऽऽ...

(125) तर्ज : धन्य-धन्य आज घड़ी...

आओ आओ आओ जन्म जयन्ति मनाये।
गुप्तिनंदी गुरुवर की जयन्ति मनाये।।
आओ आओ.....

भोपाल नगरी में जन्में हैं गुरुवर।
त्रिवेणी माता के ललना है ऋषिवर।।
कोमलचंद पितु खुशियाँ मनाये... गुप्तिनंदी...

दिक्षा ली गुरुवर ने कुंथुसागर से।
शिक्षा ली गुरुवर ने कनकनंदी से।।
गोम्मटगिरी पे सुरी पद पाये...गुप्तिनंदी...

चम चम चमकते चाँद सितारे।
गुरुवर की भक्ति ही हमको उबारे।।
हाथों में दीप ले के, नृत्य रचाये... गुप्तिनंदी...

जन्म जयन्ति हो तुमको मुबारक।
आप हो गुरुवर हम सबके तारक।।
'आस्थाश्री' भक्ति से शीश झुकाये...गुप्तिनंदी...

(126) तर्ज : उडे जब-जब जुल्फे तेरी...

चलो जन्म जयन्ति मनाये-2 कि पुष्पों की वृष्टि करें।
कि पुष्पों की वृष्टि करे सब मिलके ऽऽहो2...।।

भोपाल नगर में जन्मे-2 कि माता-पिता हरषे।
मात-पिता हरषे-2 गुरुवर के..... लाऽऽ....
चलो जन्म.....

खुशियों से भर गया अंगना–2।
कि बाजे बजवाये–2, नगरी में... चलो...

माता गोदी में खिलाये–2।
कि सुंदर रूप लखे–2 बालक का... चलो...

बीता बचपन ये प्यारा–2।
कि पाया गुरु द्वारा–2, गुरुवर ने... चलो...

आये कुंथुसागर की शरणा–2।
कि गुप्तिनंदी बने–2 गुरुवर से... चलो...

करे गुरुवर को हम भक्ति–2।
कि आस्था नमन करे–2...गुरुवर को...
चलो जन्म जयन्ति..... पुष्पों की...

(127) तर्ज : माँईन–माँईन...

गुप्तिनंदी गुरु हमारे, सबके तारण हारे।
कुंथुसागरजी के नंदन, कनकनंदी के प्यारे।
गुरुवर होऽऽऽ...

माया ममता तजकर गुरुवर, मोक्षमार्ग अपनाऐं।
समता रस के धारी ऋषिवर, मुक्तिमार्ग दिखलाऐं॥
जैन धर्म के सूरज गुरुवर, जग के चाँद सितारे।
कुंथुसागरजी... गुरुवर होऽऽऽ...

त्याग तपस्या देखो इनकी, पंच महाव्रत पालें।
जो भी भव्य शरण में आयें, प्रवचन से हर्षालें।
गुरुवर तुम सम बनने आये, 'कपिल' तुम्हारे द्वारे।
कुंथुसागरजी... गुरुवर होऽऽऽ...

(128) तर्ज : मधुबन के मंदिरों में....

गुरु गुप्तिनंदी मेरे, मुक्ति की राह खोलो।
कब होगी मेरी दीक्षा, गुरुवर ज़रा ये बोलो॥
मेरी आस ये रही है, जल्दी मुनि बनाओ।
छोटी कली मैं तेरी, मुझको कुसुम बनाओ।
कर देर इस कली को, मुरझाओगे क्या बोलो। कब होगी...
पद चिह्न पे चलूँगा, संग उम्र भर रहूँगा।
है ये मेरी प्रतिज्ञा, चारित्र दृढ़ करूँगा॥
चरणों में हो समाधि, वरदान मुझको दे दो। कब होगी...
वैराग्य को हमारे, तुमने जनम दिया है।
कंकर से हमको शंकर, प्रभु आपने किया है।
है ये 'कपिल' तुम्हारा, उसको शरण में ले लो। कब होगी...

सति सीता चरित्र

(129) तर्ज : चांदी की दीवार...

सतियों पर भी संकट आता, कौन समझ ये पाता है।
भाग्य ही जिसको होकर मारे, से कौन अपनाता है॥ सतियों...
राम की भार्या सीता की भी, गाथा बहुत पुरानी है।
जंगल-जंगल भटकी देखो, वह अवध की रानी है॥
इकनारी के अपवादों से जग जिसको ठुकराता है। भाग्य ही.....
तीरथ करने जाऊँ पिया को दोहला यह बतलाती है।
किंतु पति के मन में क्या है समझ नहीं वो पाती है॥
अपकीर्ति के भय से जिसको पति ही वन पहुचाता है। भाग्य...
जैसे मुझको छोड़ वन मैं, वैसे धरम न विसराना।
सेनापति तुम जाओ पिया को यह संदेशा सुनवाना॥
दु:खी हृदय से छोड़ सति को सेनापति तब जाता है। भाग्य...
रोती बिलखती सीता माता मूर्च्छित हो गिर जाती है।

वज्रजंघ नृप लेने आते हर्षित हो संग जाती है।।
जंगल में भी मंगल होता पुण्य उदय जब आता है। भाग्य...
पुत्र जन्म की खुशखबरी ने सीता का दुःख दूर किया।
जन्मोत्सव की खुशियाँ छाई किंतु पिता को दूर किया।।
कर्म के आगे किसकी चलती सबको नाच नचाता है। भाग्य...
निज अधिकारों को पाने हित लवकुश अवध में जाते हैं।
राम लखन से युद्ध करें वे अपना शौर्य बताते हैं।।
देख वीरता उन वीरों की सूरज भी छिप जाता है। भाग्य...
देख वीर पुत्रों को अपने राम धन्य हो जाते है।
सीता को कैसे बुलवाऊँ यह विचार मन लाते हैं।।
भाग्य और दुर्भाग्य मात का एक साथ में आता है। भाग्य...
राम कहें निर्दोष सिया तुम निज कलंक को दूर करो।
राजमहल में तब ही आओ, या मेरा परित्याग करो।।
पंच शपथ के हेतु सिया का हृदय नहीं घबराता है। भाग्य...
अग्नि कुंड में गई सिया ज्यों अग्नि में जल कमल खिला।
देवों को भी शीलवती की सेवा का सौभाग्य मिला।।
शीलवती का शील निराला, पावक जल हो जाता है। भाग्य...
मुनि निंदा के फल ने देखो, कितने दुःख दिखाये हैं।
सीता जैसी महासति ने कितने कष्ट उठाये हैं।।
मुनि निंदा के फल से देखो क्या से क्या हो जाता है। भाग्य...
सीता आर्यिका दीक्षा ले, आतम का कल्याण करे।
छेदन करके नारी वेद को, अच्युत स्वर्ग प्रयाण करे।।
मात सिया के पादयुगल में, 'क्षमा' का सर झुक जाता है। भाग्य...

(130) तर्ज : मुझे ऐसा वर दे दे ...

(सती अंजना चरित्र)

सती अंजना सुकुमारी, पवंजय की नारी।
उसकी सुनलो ये कथा, वो कष्ट सहे भारी।। सती अंजना....
बाईस वर्षों तक भी, सुध बुध ना ली जिसकी।
जब युद्ध में निकल रहे, तब देह लखी उसकी–2।।
क्यों सामने आई तू, गाली दे दुत्कारी.... उसकी....
सुंदर तालाब मिला, उस पे डेरा डाला।
चकवी का क्रंदन सुन, मन पवन का रो डाला–2।।
तत्क्षण लौटा घर पे, वो रात थी सुखकारी... उसकी....
हे कुल कलंकनी तू, क्यों नाम लजाती है।
जा निकल जा इस घर से, क्यों हमको सताती है–2।।
विश्वास करो माता, मैं पतिव्रता नारी...उसकी....
जननी व जनक ने भी, उससे मुख मोड़ लिया।
भाई बाँधवजन ने, उसको न सहारा दिया –2।।
महलो की ये रानी, वन भटके दु:खियारी... उसकी...
सखी के संग अंजन को, गुरुवर के दर्श मिले।
दर्शन करके गुरु के, दोनों के नयन खिले–2।।
आशीष दिया गुरु ने, ये गुरु संकटहारी.... उसकी...
एक पुत्र को जन्म दिया, जो कामदेव सुंदर।
मामा आये लेने, उस जंगल के अंदर–2।।
हनुमान को देख सभी, खुश होते नर–नारी...उसकी...
जब युद्ध से आये पवन, ढुंढे वन में जाकर।
मन में अति हर्ष हुआ, सुत दारा को पाकर–2।।
'आस्था' से नमे तुमको, तुम हो समताधारी...उसकी...

(131) तर्ज : साजन जी घर...

मेरे इस दिल में तेरा ही नाम तेरे इस रूप से शरमाये शाम
हो ऽऽ ओ ऽऽऽ

माता के दर्शन से, सच्चा सुख मिल जाये
राजश्री माता के चरणों में हम आये।
तेरे चरणों में मिट जायेंगे गम...4
माँ के दर हम आये, मन मेरा हर्षाये–2।

देखो ना संसार को, देखो मेरी मात को
आओ करें इनका अर्चन–अर्चन,
कितना भी दर्शन करे, तो भी ना ये मन भरे।
आओ करें इनका दर्शन–दर्शन
तेरा रूप निहारूँ, तेरे ही गुण गाऊँ–2
तेरे चरणों में मिट जायेंगे गम....4 माँ के दर...

मूरत हो माँ त्याग की, तप संयम वैराग्य की।
ज्ञानी ध्यानी माँ, जय हो– जय हो।
जीवन ये अनमोल है, ये ही तुम्हारे बोल है
जग हितकारी माँ, जय हो, जय हो।
इस भव से घबराये, 'क्षमा' शरण में आये
तेरे चरणों में मिट जायेंगे गम...4 माँ के दर...

(132) तर्ज : ना कजरे की धार...

ना कोई किया शृंगार, सब छोड़ दिया घरबार
फिर भी लगती मनहार माता कितनी मनहर हो
तुम तो सबकी गुरुवर हो... हो ऽऽऽ

राजश्री नाम तुम्हारा, शिवराज दिलाने वाला...2
चरणों में शीश झुकाकर, पायें ज्ञानामृत प्याला...2
माता प्यारी करुणा धारी, करती जग का उद्धार।।
ना कोई किया.....

वात्सल्य तेरा मिल जाये, गुरु तेरी शरणा आये...2
तेरी शरणा को पाकर, भव सागर से तिर जायें...2
तुम हो माता जग की त्राता, उपचार महाव्रत धार।।
ना कोई किया.....

निर्मल ममता की धारी, गुरु सम अनुशासन कारी
निज पर की हैं उपकारी, हैं श्वेत साटीका धारी
कितना पावन मन को भावन, लागे तेरा व्यवहार।।
ना कोई किया.....

तेरा रूप ज्ञान की मूरत, है भोली-भाली सूरत
वाणी में मधुर रस छलके, सबको है तेरी जरुरत
ज्ञानी-ध्यानी, समता धारी, हो 'क्षमा' की तुम आधार।।
ना कोई किया.....

(133) तर्ज : मेंहदी लगा के रखना...

माँ राजश्री की वाणी, सुख की निधान खानी।
आये शरण में इनकी, बन जायें ज्ञानी ध्यानी।।

माता मुझे शरण दे, मेरे कर्म दूर कर दे।
देकर के ज्ञान ज्योति, भव से तू पार कर दे।। हो ऽऽ

अम्बा का नाम लेना, पापों को दूर करना।
शांति हो सारे जग में, मन में ये भाव करना।।

मैं खाली हाथ आई, भरने ये मेरी झोली।
वर दे तू मुझको ऐसा, भर जाये मेरी झोली॥
स्याद्वाद तेरी वाणी, अनेकांत रूपी झरना।
वात्सल्य देती सबको, चरणों में तेरे रहना ॥ हो ऽऽ
निश्चल व्रतों की धारी, संयम के पथ पे चलती।
हो सौम्य शांति धारी, झोली सभी की भरती॥
जीवन तो पाया नश्वर, कोई नहीं सहारा।
सुमार्ग मुझको ले चल, तुम्ही तो हो किनारा॥
सन्मार्ग पथ को पाये, मुक्ति पुरी को जाये।
'आस्था' विनय से माता, तेरी शरण में आये ॥ हो ऽऽ

(134) तर्ज : परदेशी-परदेशी जाना नहीं...

राजश्री माँ राजश्री माँ देना हमें देना हमें
सम्यक् ज्ञान - सम्यक् ज्ञान
राजश्री माता प्यारी करुणाधारी
जग उपकारी हो संकटहारी॥ राजश्री माँ-2

महाव्रतों का पालन करने वाली हो।
समता रस का पान कराने वाली हो॥
जगतपूज्य तुम आतम ब्रह्म विहारी हो।
आये हम सब अम्बे शरण तिहारी हो॥
राजश्री माता प्यारी, तारण हारी,
सबकी दुलारी, हो जग हितकारी-राजश्री माँ-देना-2...
आते हैं नर-नारी दर्शन पाने को।
तेरी भक्ति करते पुण्य कमाने को॥

तेरे ज्ञान की रश्मि जग में फैल रही।
दिशा बोध मिल जाये हमको मार्ग सही।।
राजश्री माता प्यारी, जग में निराली,
अहिंसा की धारी, हो धर्म प्रचारी-राजश्री माँ 2...
चाँद सितारों जैसी प्यारी लगती हो।
खिले हुए पुष्पों की क्यारी लगती हो ।।
समता और ममता को मन में धारा है।
'आस्थाश्री' को तेरा एक सहारा हैं।।
राजश्री माता प्यारी, संयम धारी,
मम हितकारी, हो जग उद्धारी...
राजश्री माँ राजश्री माँ देना हमें-2 सम्यक्ज्ञान-2...

(135) तर्ज : हायो रब्बा-हायो रब्बा...

माँ राजश्री माँ राजश्री माँ राजश्री-2
आश लगाऐ हम, दर तेरे आऐं।
चरणों में आकर, शीश झुकाऐं।।
भक्तों का कर उद्धार-जय हो माँ राजश्री।
मान न माँगें, सम्मान न माँगें।
धन भी न माँगें, न वैभव माँगे।
माताजी हैं सुख का द्वार-जय हो माँ राजश्री।
त्याग की मूरत ज्ञान भंडार है।
क्रांति करें जहाँ छाया अंधकार है।
दे दो ज्ञान अपार-जय हो माँ राजश्री।
समता है ताज तेरा, संयम हार है।
करती हो माता, धर्म प्रचार है।।
'सुलभ' का कर उद्धार।-जय हो माँ राजश्री।

(136)

हे मात ! मुझको ऐसा शुभ आशीष दो...
मैं पावन बन जाऊँ, मैं आत्म कल्याण करूँ, मैं पावन बन जाऊँ।।
हो माता हो माता हो माता राजश्री माता।

मैं सेवक हूँ आपका, आप मेरी गुरुवर हो।
गुरुवर के नाते मुझे, देना सम्यग्ज्ञान को।। हो माता–2
हे मात ! अपने जैसा सम्यग्ज्ञान दो। मैं पावन... हो माता...

ज्ञान सागर आप में, ज्ञान की बूँद मुझे भी दो।
ज्ञान की बूँदे देकर के, सम्यग्दर्शन दान दो।। हो माता...
ज्ञान देकर मुझको ये वरदान दो। मैं पावन बन ... हो माता...

ज्ञानसागर आप हो, दया की सागर आप हो।
सुख को देने वाली हो, दु:ख को हरने वाली हो।। हो माता...
हे माँ ! 'सुलभ' को रत्नत्रय वरदान दो। मैं पावन बन... हो माता...

(137) तर्ज : परदेसी–परदेसी...

राजश्री माँ राजश्री माँ देना हमें–2, सम्यग्ज्ञान–2
राजश्री माता प्यारी, जग उद्धारी,
उनकी महिमा न्यारी, लागे हैं सबको प्यारी।
राजश्री माँ.....

आठ बीस गुण को पालन करने वाली,
माताजी तो हैं गणिनी पद की धारी।
नरभव पाकर जिनने जीवन सफल किया।
माता–पिता ने निज बेटी पर गर्व किया।।

राजश्री माता प्यारी, संकटहारी,
तेरी वाणी प्यारी, लागे हैं सबको प्यारी।
राजश्री माँ.....

धर्म बटोही बनकर चलने वाली हो,
महाव्रतों को धारण करने वाली हो।
तुमने गणधर वलय विधान रचाया है,
दीक्षार्थी का मारग सुलभ बनाना है।।
तेरी रचना सबसे प्यारी, शिवसुखकारी,
तेरी छवि ही दु:खियों की दु:खहारी।।
राजश्री माँ.....

तेरी अमृतवाणी को ना भूलेंगें, अमृत वाणी के झूलों में झूलेंगे।
लाख करोड़ों की वस्तु भी लायेंगे, तेरी दक्षिणा हम ना दे पायेंगें।।
हे माता गुण भंडारी, संयम धारी,
भक्त 'कपिल' का, चरणों में जीवन वारि।। राजश्री माँ.....

(138) तर्ज : मात राजश्री नाम आपका

माता राजश्री नाम आपका, जग में अमर महान हैं।
लिखा आपने कितना सुंदर गणधर वलय विधान हैं।।
जय-जय-जय माँ राजश्री...
गाता हैं इतिहास आपका, मनभावन शुभ नाम है।
लिखा आपने कितना सुंदर, गणधर वलय विधान हैं।।
जय जय जय माँ राजश्री, जय जय जय माँ राजश्री।।-2

धन्य हो गई लेखनी, बसकर तेरे हाथ में।-2
गणधर वलय विधान लिखा, जिसने तेरे साथ में।।-2

जिन हाथों से मात आपने, ये विधान रच डाला हैं।–2
उन हाथों से हमको दो माँ, आशीर्वाद निराला हैं॥–2
भाग्यवान वो जिस पर तुझसी होऽऽऽ–2 वरदा का वरदान है। लिखा...

जितना सुंदर रूप हैं, उतना ज्ञान अनूप है।–2
मैय्या की ममता छैय्या, हरती गम की धूप हैं।–2
माता तुमको निरख–निरख मन, फूला नहीं समाया है।–2
तुझमें चंदनबाला तुझमें सीता माँ को पाया हैं।–2
आर्यिकाओं के गौरव की होऽऽऽ–2 माता तू पहचान हैं। लिखा...

हेऽऽ माँ !, हेऽऽ माँ !, हेऽऽ माँ !
क्यूँ छोड़ के हमको गई, मुख मोड़ के हमको गई, हेऽऽमाँ, हेऽऽ माँ...
''गणधर वलय पूजा हमारे पाप का मोचन करें।
परमात्म पद के राज हेतू आत्म का शोधन करें॥''
ये पंक्तियाँ जब बोलते तब याद तेरी आती हैं।
फिर आँसुओं से माँ हमारी, आँख भर–भर आती हैं॥
फिर तू ही तू माता नज़र हमको वहाँ पर आती हैं।
तब आपकी ये काव्य रचना मन मेरा बहलाती हैं॥

फिर भी विनती तुमसे करूँ, तेरी भक्ति से झोली भरूँ। हेऽऽ माँ...
जब–जब जनम होगा मेरा, तब पाऊँ तुमसी मात को।
हो जन्म ना मेरा दुबारा, पाके तुमसी मात को॥
गणधर वलय पूजा तुम्हें माँ, मोक्ष सुख दिलवायेगी–2।
माँ आपकी भक्ति मुझे भी, मोक्ष सुख दिलवायेगी॥–2
जय जय जय माँ राजश्री, जय जय जय माँ राजश्री।–2
जब तक सूरज चाँद हैं, गणधर वलय विधान हैं।–2
जब तक महाविधान हैं, माता तेरा नाम हैं।–2

हे माँ ! तेरी यशोपताका, हम जग में फहरायेंगे।–2
गणधर वलय विधान विधिवत्, जगह–जगह करवायेंगें॥–2
'सुलभगुप्त' हे मैय्या ! तेरी, बाल सुलभ संतान हैं।
लिखा आपने कितना सुंदर गणधर वलय विधान हैं॥
जय जय जय माँ राजश्री, जय जय जय माँ राजश्री।–2

(139) तर्ज : रात कली इक....

हे अंबिके ! हे राजश्री माता, हमसे बिछड़ कहाँ आप चली।
छोड़ के हमको मोड़ के मुख को, किसके सहारे आप चली॥
हे करुणा मूरत तेरी जरूरत, हमको हैं थी व रहेगी।
तेरे संग में बीती घड़ियाँ, हमको खुशी भर देगी॥
छोड़ के अपने इन बच्चों, कौन नगर किस गाँव चली॥
हे अंबिके...

समझायें कैसे हम अपने मन को, ये ना समझ में आये।
सुलझाना चाहें जितना स्वयं को, उतनी ही उलझन आये॥
हे माँ तेरे बिन हम बच्चों की, भला कहाँ पर होगी भली॥
हे अंबिके...

मन मंदिर की तुम हो मूरत, इसकी खुशी हमको हैं।
फिर भी नयनों से ओझलता, करती दु:खी हमको हैं॥
एक बार दो दर्शन अपना, मन में हमारे आस पली॥
हे अंबिके...

धन्य हुआ ये जीवन हमारा, तुम जैसी माँ पाकर।
हे माँ ! तुमने हमको जगाया, लोरी धरम की सुनाकर॥
आशीष देकर हे माँ ! खिलाओ, 'सुलभगुप्त' की हृदय कली॥
हे अंबिके...

(140) माँ राजश्री माँ राजश्री....

माँ राजश्री माँ राजश्री ओ मैया राजश्री।
जिनवाणी माँ जैसी ओ मैया राजश्री॥
माँ आपकी सुंदर छवि, हम सबके मन बसी।
जिनवाणी माँ जैसी ओ मैया राजश्री॥

जिनवाणी में जैसे हैं गंगा ज्ञान की।
वैसे ही हे माता !, तू गंगा ज्ञान की॥-2
हे माता ! चमकादो दमकादो भाग्यश्री॥ जिनवाणी माँ.....

हे समता की मूरत, हे ममता की मूरत।
माँ तेरा मुखड़ा तो, जैसे हो चंदा सूरज॥
दुनियाँ में क्या कोई हैं माता आपसी॥ जिनवाणी माँ.....

माताजी से हमको क्या-क्या ना मिलेगा।
इनके द्वारे जीवन पुष्पों सा खिलेगा॥
सबके मन मंदिर में राजे माँ राजश्री।
जिनवाणी माँ जैसी ओ मैया राजश्री॥
माँ राजश्री.....

(141) तुम दिल की धड़कन में...

अंब क्षमा श्री माता, पापों को हरती हो।
ज्ञान सुधा की सरिता, हरदम ही बहती हो॥
हमको ना ठुकराओ, चरणों में अपनाओ।

भव फेरों का घेरा है, काली रात अंधेरा है।
इस अज्ञान अंधेरे में, तू ही ज्ञान उजेरा है॥
तुमको ही हो जपना, कर्मों का हो खपना। हमको ना.....

कर्मों ने भटकाया है, भव-भव में अटकाया है।
रागद्वेष की ज्वाला ने, हमको माँ झुलसाया है॥
कर्मों से हो बचना, ये आशीष हमें देना। हमको ना.....

तुम समता की मूरत हो, जैन धर्म की कीरत हो।
'सुलभगुप्त' की हे माता, मन-मंदिर की मूरत हो।
इस मन में ही रहना, ये ही मेरा है कहना। हमको ना.....

(142) तर्ज : आजा ना छुले मेरी...

माता तू त्राता तेरे भक्त हैं हम, अंबा क्षमाश्री माँ तुमको नमन।
तेरा सहारा दे दे हमें, तेरी ही राहों पे होवे गमन। माता तू.....

मात क्षमाश्री तेरी महिमा को मिल गायेंगें हम।
पंथवाद मत संप्रदाय को जड़ से मिटा देंगे हम॥
तेरी वाणी की सरिता का, मिल गुणगान करें हम।
ना तेरा ना बीस पंथी हम, आगम पंथी हैं हम॥
तू ही लुभाये माँ भक्तों का मन। अंबा क्षमाश्री माँ तुझको नमन॥ तेरा...

कर्मों की अग्नि की लपटे, दुनियाँ को झुलसाये।
तेरी ज्ञान सरिता के ही, पानी से बुझ जाये॥
तू उपदेशों की गीता है, सौम्य छवि है तेरी।
कर्मों के रण में लड़ने को, तूने बजाई भेरी॥
छोड़े मेरा संग मेरे करम, अंब क्षमाश्री माँ तुझको नमन। तेरा...

जिनवाणी का रूप अंबिके, श्वेत वस्त्र को पहनें।
वीणा मयूर पंख पीछी है, संयम समता गहनें॥
तू गुण-सिंहासन पे आसीत, दर्शन को सब तरसे।
तेरा दर्शन पाकर हे माँ, मनवा मेरा हरषे॥
भक्त 'कपिल' ये पाये तेरी शरण, अंब क्षमाश्री माँ तुझको नमन्॥तेरा...

आहार दान

(143) तर्ज : आ लौट के आजा...

आ जाओ मेरे महावीर, तुम्हें चंदन पुकारे है।
मेरी नैया तिराओ अतिवीर-2, तुम्हें चंदन पुकारे है।।
आ जाओ...

कर्मों की बेड़ी मुझको सताये, दर-दर की ठोकर खिलाये।
दुष्टों के हाथों बेचे वो मुझको, मेरी नीलामी कराये।
अबला की सुनो प्रभु पीर-तुम्हें चंदन पुकारे है...

हाथों में कोदों का भात मेरे, तन पे बंधी है जंजीरें।
पडगाऊँ तुमको त्रिशला के प्यारे, हाथों की बदलो लकीरें।
आकर क्यूं लौटे वीर, तुम्हें चंदन पुकारे है...

आये प्रभु जो अब मेरे आंगन, सौभाग्य मेरा जगा है।
आहार देकर वीरा प्रभु को, दुर्भाग्य मेरा भगा है।
मेरी टूट गई रे जंजीर, तुम्हें चंदन पुकारे है...

ओ स्वामी ! मेरे जीवन सहारे, जीवन मरण को मिटा दो
आर्यिका दीक्षा देकर प्रभुवर, कर्मों से लड़ना सिखा दो।
जीवन ये 'सुलभ' कर वीर, तुम्हें चंदन पुकारे है...

(144) तर्ज : आसूँ भरी है ये जीवन...

द्वारे खड़ी है चंदन पुकारे।
मेरे वीर आओ, मेरे आज द्वारे।।

ये जुल्मी करम है गज़ब जुल्म ढाता।
हंसाता-रुलाता बाजारों बिकाता।
ऐसे करम से मुझे हैं निवारें ।। मेरे वीर...

हे नाथ ! लौटो वापस ना जाओ।
जगे भाग्य मेरे, उसे तुम बचाओ।
हंसा कर रुला क्यों गये वीर प्यारे।। मेरे वीर...

पड़गाया चौदह विधि से प्रभु को।
आहार लेकर उबारा सती को।
आयी 'क्षमा' भी शरण में तिहारे।। मेरे वीर...

(145) तर्ज : मेरे नैना सावन...

चंदनबाला तुमको पुकारे, नयनों से आँसू गिराये-2
कष्टों की मारी है, कर्मों से हारी है-2
सहन करुँ मैं कब तक स्वामी, संकट से घबराई,
क्यों मुझको बिसराई
तुम बिन स्वामी कोई न मेरा, मन में लगी ये दिलासा
टूटे न मेरी आशा-2।। चंदनबाला...

कब से खड़ी हूँ मैं, तुमको निहारती मैं-2
वीर प्रभुवर आकर लौटे, प्रभुवर क्यों फिर लौटे।
भाग्य है मेरे खोटे
ले लो शरण में अब तो मुझको, 'आस्था' की यही आशा।
टूटे न मेरी आशा ।। चंदनबाला-2

श्री धन्यकुमार चरित्र

(146) तर्ज : यशोमति मैय्या से...

अम्मा गई पानी को ठहरो थोड़ा गुरुवर।
माता आये बिना पाँव छोडूँ नहीं ऋषिवर।।
अम्मा गई...

आहार की बेला में आहार बनाया–2
दूध–घृत–शक्कर से चौका लगाया
भात कोदू का बनाया होऽऽ -2
आओ हे मुनिवर... माता...

भूख लगी थी मुझे खीर मैंने मांगी–2
माँ बोली बेटा रुक पानी लेके आती
मुनि को आहार देके होऽऽ -2
खाना तू मनभर... माता...

ऐसा कहके वो चली गई पनघट–2
आये मेरे प्रभुवर मानो मेरी बालहठ
मात आने तक नहीं होऽऽ -2
छोडूँ मैं गुरुवर... माता...

माता आई पानी लाई विधि भी मिलाई–2
खुशी–खुशी बेटा कहे खीर दे दो माई
दान अनुमोदन से होऽऽ -2
पायें पुण्य सुखकर... माता...

पंचाश्चर्य घर प्रगट हुये थे–2
धन्य–धन्य भाग्य मात कुँवर के हुये थे
उस दिन जीम लिया होऽऽ -2
सर्व ग्राम मनभर... माता...

धन्य कुंवर वो इस पुण्य से थे–2
मुनि बन धर्म साध स्वर्ग गये थे
'क्षमा' कहे दान करो होऽऽ -2
सदा नारी नर...माता...

आहार दान का आह्वान

(147) तर्ज : हे दीनबंधु श्रीपति...

ऐ जैन ! तूने जैन सा न काम किया रे।
आहार दान सा न श्रेष्ठ काम किया रे॥
रोता क्यूँ आज बार-बार तेरा जिया रे !।
क्योंकि न तूने पहले कभी दान दिया रे॥1॥

तूने न कभी दान किया दान दिया रे।
इस व्यर्थ जिन्दगानी को मर-मर के जिया रे॥
गरदान दिया तो भी मात्र मान किया रे।
पत्थर हृदय हो पत्थरों पे नाम किया रे॥2॥ रोता क्यूँ...

देने के नाम से डरे हैं जिनका जिया रे।
लेने के नाम से कभी न शर्म किया रे॥
उसने भिखारी जैसे दूसरों से लिया रे।
बेशर्मी की हद बेशरम ने पार किया रे॥3॥ रोता क्यूँ...

संपन्न हो के भी जो नहीं दान करेगा।
ईश्वर के नाम पे दे बाबा आगे कहेगा॥
जो हाथ होके भी कभी भी दान ना देते।
वो ही तो गाय-भैंस बिना हाथ के होते॥4॥ रोता क्यूँ...

गायों ने भी तो अपना दूध दान दिया रे।
नर हो के भी पशु से तूने दान लिया रे॥
नदियाँ भी दानियों में अपना नाम करे हैं।
मल को बिठा के तल में जल का दान करे हैं॥
वृक्षों ने भी मीठे फलों का दान किया रे।
बदले में ए मनुष्य ! तुमसे कुछ न लिया रे॥5॥ रोता क्यूँ...

निर्धन ने यदि तुझसे इक हजार लिया रे।
दो शून्य बढ़ा करके तूने लाख किया रे॥
बनकर के सवा सेर उनका खून पिया रे।
उपकार का बहाना ले अपकार किया रे॥
लोगों में दिखाने को प्याज त्याग दिया रे।
अरे प्याज त्याग चक्रवर्त्ती ब्याज लिया रे॥6॥ रोता क्यूँ...

पुरुषों ने दान क्षेत्र में हैं नाम कमाया।
श्रेयांसराज जिनने दान तीर्थ चलाया॥
भरतेश चक्रवर्ती जो षट् खंडजयी थे।
आहारदान से महान पुण्यमयी थे॥
इस दान से ही चंद्रगुप्त मौर्य हुए थे।
जिनने की भद्रबाहु के श्री चरण छुए थे॥7॥ रोता क्यूँ...

श्रीषेण महाराज ने आहार कराया।
उस पुण्य ने ही उनको शांतिनाथ बनाया॥
श्री वज्रजंघ राज ने आहार कराया।
उस दान ने ही उनको आदिनाथ बनाया॥
वो दान चार भव्य पशु देख रहे थे।
भगवान आदिनाथ के वो पुत्र बने थे॥8॥ रोता क्यूँ...

पापक ने अनुमोदना आहार की करी।
उस पुण्य से पर्याय धन्य कुँवर की वरी॥
श्री रामचन्द्रजी ने भी आहार दिया था।
जटायु पक्षी ने भी भव सुधार लिया था॥
ओ सेठ ! बड़े पेट के गुमान ना करो।
जोड़े से दे आहार आदिनाथ से बनो॥ 9॥ रोता क्यूँ...

माताओं का भी दानियों में नाम बड़ा हैं।
पर आज की माताओं पे कलंक पड़ा हैं॥
मैं आपके मातृत्त्व को चुनौती दे रहा।
यदि शर्म हैं तो बोलो शर्म छोड़ दी कहाँ॥10॥ रोता क्यूँ...

प्रभु वीर को माँ चंदना ने दान दिया था।
प्रभु वीर ने भी चंदना को मुक्त किया था॥
जो दान क्षेत्र में महा चिंमामणी बनी।
वो अत्तिमब्बे गुड्डुमब्बे धर्म की धनी॥11॥ रोता क्यूँ...

श्री श्रीमति रानी ने भी आहार कराया।
आहार दान ने उसे श्रेयांस बनाया॥
उसने ही आदिनाथ को आहार कराया।
अक्षय तृतीया पर्व को प्रारंभ कराया॥12॥ रोता क्यूँ...

आहार दानियों में अग्निला भी ज्येष्ठ है।
वो ब्राह्मिणी हो जैन नारियों से श्रेष्ठ है॥
वो ही तो नेमिनाथाजी की यक्षी कहाये।
बन गुल्लिकाज्जी गोम्मटेश न्हवन कराये॥13॥ रोता क्यूँ...

माताओं ! तुम्हारे ये साधु बाल शिशु हैं।
इनको सम्हारो आप ये गर्भस्थ शिशु हैं॥
हो मातृ हृदय आप तो मातृत्त्व जगाओ।
ममता से अपने इन शिशु को आप खिलाओ॥14॥ रोता क्यूँ..

गैया भी प्यार से शिशु को दूध पिलाती।
जिह्वा से चाट-चाट उसपे प्रेम लुटाती॥
पर आप तो उस गाय से माता अनूप हो।
मरूदेवी वामादेवी वा त्रिशला का रूप हो॥15॥ रोता क्यूँ...

तीर्थंकरों की मात कौन मात बनी हैं ?
जिस मात में मुनियों के प्रति प्रीत घनी हैं॥

सौधर्म की शचि क्या आप ऐसे बनोगी ?
ऐसे तो उसकी दासी भी न आप बनोगी॥
अब ठान लो आहार दान की ओ मतारी !।
इस श्रेष्ठ दान से बनो सौधर्म की प्यारी॥16॥ रोता क्यूँ...

आहार दान से तो भोगभूमि मिलेगी।
सम्यक्त्वीयों को देवगति श्रेष्ठ मिलेगी॥
ये दान क्या उपकार साधुओं पे करेगा ?
ओ श्रावकों ! तुम्हारी दुर्गति को हरेगा॥17॥ रोता क्यूँ...

साधु की अंजुलि पे जिनने हाथ करे हैं।
लक्ष्मी ने उनके सिर पे दोनों हाथ धरे हैं॥
आहार से क्या साधु अपना पेट भरे हैं ?
वे तो तिजोरी में तुम्हारी नोट भरे हैं॥18॥ रोता क्यूँ...

जो एक बार भी आहारदान करेगा।
निश्चय ही नरक आयु का न बंध करेगा॥
नरकायु बाँध के आहार दे न सकेगा।
देना तो दूर दान नहीं देख सकेगा॥ 19॥ रोता क्यूँ...

सोचो ओ ! जैन धर्म के अनुयायियों जरा।
आहार दान में सुखों का कोष है भरा॥
अब आप जैन होके ना अजैन कहाओ।
आहारदान दे के सच्चे जैन कहाओ॥20॥ रोता क्यूँ...

आहार दान ही जगत में श्रेष्ठ दान हैं।
आहार दान श्रेष्ठ दानियों का प्राण हैं॥
मैं 'चंद्रगुप्त' आपको आह्वान करूँगा।
सारे दुःखों की औषधि ये दान कहूँगा॥

रोता क्यूँ आज बार-बार तेरा जिया रे ?।
क्यूँकी न तूने पहले कभी दान दिया रे॥

(148) तर्ज : हम सब नन्हें बच्चे...

हम सब नन्हें बच्चे हमें आहार कराना है।
भक्ति भावों से गुरुओं का पड़गाहन कराना है॥

पड़गाहन करायेंगें तो क्या-क्या हमको करना है।-2
क्या-क्या हमको करना है जी क्या-क्या हमको करना है॥-2
''हे स्वामी नमोऽस्तु, नमोऽस्तु-नमोऽस्तु।
अत्र अत्र अत्र, तिष्ठ: तिष्ठ: तिष्ठ:।
आहार जल शुद्ध है, ऐसा हमको कहना है।''
पड़गाहन करायेंगें तो ऐसे-ऐसे कहना है॥

हम सब नन्हें बच्चे हमें आहार कराना है।
भक्ति भावों से गुरुओं की तीन प्रदक्षिण करना है॥
तीन प्रदक्षिण हो जाये तो क्या-क्या हमको करना है।-2 क्या-क्या...

''मन शुद्धि वचन शुद्धि काय शुद्धि।
आहार जल शुद्ध है, ऐसे हमने कहना है॥''
तीन प्रदक्षिण हो जाये तो ऐसे ऐसे कहना है।

हम सब नन्हें बच्चे हमें आहार कराना है।
भक्ति भावों से गुरुओं को उच्चासन बैठाना है॥
उच्चासन बैठायेंगें तो क्या-क्या हमको कहना है।-2, क्या-क्या...
''हे स्वामी नमोऽस्तु, उच्चासन विराजिये। ऐसे हमको कहना है''
उच्चासन बैठायेंगें तो ऐसे ऐसे कहना है॥

हम सब नन्हें बच्चे हमें आहार कराना है।
भक्ति भावों से गुरुओं के चरणों को धुलाना है॥
चरणों को धुलायेंगें, तो क्या-क्या हमको करना है।-2, क्या-क्या...
चरणों का प्रक्षालन करके, गंधोदक को लेना है॥

हम सब नन्हें बच्चे हमें आहार कराना है।
भक्ति भावों से गुरुओं की पूजन पाठ रचाना है।
पूजन पाठ रचायेंगे तो क्या-क्या हमको करना है।-2, क्या-क्या...
आठों द्रव्यों को चढ़ाकर, चरणों में झुक जाना है।

हम सब नन्हें बच्चे हमें आहार कराना है।
भक्ति भावों से गुरुओं को भोजन थाल दिखाना है॥
भोजन थाल दिखायेंगें तो क्या-क्या हमको करना है ।-2, क्या-क्या...
हे स्वामी नमोऽस्तु, ये है रोटी सब्जी।
ये है हलुआ पुरी, ऐसा हमको कहना है॥
भोजन थाल दिखायेंगें तो ऐसे-ऐसे कहना है॥

हम सब नन्हें बच्चे हमें आहार कराना है।
भक्ति भावों से गुरुओं को भोजन पानी देना है॥
भोजन पानी देना है तो क्या-क्या हमको करना है।-2, क्या-क्या...
रोटी सब्जी हलुआ-पुरी, शुद्धि कहके देना है॥

हम सब.....

आत्म संबोधन

(149) तर्ज : सुख के सब साथी...

निज के निज साथी, दूजा न कोय-2
भज वीर महावीर वही नाम, एक सच्चा दूजा न कोय

यह जग तेरा है न मेरा, स्वारथ का सब है ये झमेला
ज्ञानी हो या मूर्ख सभी का, अंत एक न होई॥ निज के...
पर को ही तू अपना माने, निज आतम को न पहचाने।
पुद्गल की रौनक में बंदे, निज अनुभूति न होई॥ निज के...

व्यसनों में जीवन को खोया, कर्मों के जंगल को बोया।
सुत नारी का जाल बुना, और जग जंगल में रोये ।। निज के...

व्रत शीलों को धारण करना, 'गुप्ति' त्रय का पालन करना।
रत्नत्रय के पथ पर चल, तू मुक्ति वधु तेरी होई ।। निज के...

(150) तर्ज : गजल (राग- आसावरी)

तुम हो इक नदिया की धारा,
हो मत जाना कहीं किनारा।
सागर की तह छूकर देखो,
मोती का अम्बार तुम्हारा।।
गम दुनिया के पीकर देखो,
होगा यह संसार तुम्हारा।
क्या करने आये थे जग में,
अब तक तुमने नहीं विचारा।।
लघुता में प्रभुता का अम्बर,
अन्तस ने हर बार पुकारा।
'गुप्ति' उन्हीं चरणों में बैठो,
जिसने सच्चा रूप निखारा।।

(151) तर्ज : कभी-कभी भगवान को...

सदा-सदा निज आतम ही, हमें भव से पार करें।
जाना है भव से पार हमें, हम निज की राह धरें।

पहले अशुभ से ध्यान हटाओ, अशुभ छोड़कर शुभ में आओ
पाप छोड़कर पुण्य कमाओ, पुण्य छोड़ शुद्धातम ध्याओ।

पाप-पुण्य दोनों छूटे तब-2 मुक्ति श्री वरें.....
जाना है भव से पार.....

पुण्य से सब दुष्कर्म नशाओ, जाति कुल भव उत्तम पाओ।
उत्तम शक्ति संहनन पाओ, तब निज आतम को तुम ध्याओ।
पुण्य बिना इस भवसागर से-2 कोई नहीं तिरे।
जाना है भव से पार.....

किन्तु इसमें अटक न जाओ, इसका सम्यक् लाभ उठाओ।
भोग उपाधि सब बिसराओ, बस अब तो निज आतम ध्याओ।
पुण्य भोग में अटक गये तो-2 भव का भ्रमण बढ़ें।
जाना है भव से पार.....

मुनि आर्यिका श्री बन जाओ, बनकर निज चेतन को ध्याओ।
'गुप्ति' से वसुकर्म नशाओ, परम साम्य निज रूप जगाओ।
इसी विधि से सर्व साधु जन-2 कर्मन दोष हरें।
जाना है भव से पार.....

(152) तर्ज : सूरज कब दूर गगन से...

साधु ना दूर संयम से, भक्ति ना दूर भगवन से।
पर भौतिक युग में देखो, हैं मानव दूर धरम से॥
मानव ने धर्म को भूला है, फैशन में वो तो झूला है॥

पाश्चात्य संस्कृति आई, फैशन की बहारें लाई।
इस फैशन ने तो देश में, पापों की आग जलाई॥
इस भौतिक युग में देखो, ना बन सकता महावीरा।
क्योंकि मानव के दिल पर, छाया है तेरा मेरा॥ मानव ने.....

सोया है धन की गोद में, टी.वी. को माना गीता।
निज धर्म संस्कृति भूलकर, वो दारू व्हिस्की पीता॥
दो नंबर धंधा करके, करता है वो घोटाला।
जब पोले उसकी खुलती, लगता है सब पे ताला॥ मानव ने.....

दो क्षण की फैशन के लिए, वो क्रूर दुष्ट बन जाता।
हड्डी चर्बी वा खून से, वो हिंसक वस्तु बनाता॥
ऐसी वस्तु घर लाकर, कैसे मानव कहलाते।
खुद को खुद ठोकर मारे, यह 'चन्द्रगुप्त' बतलाते॥ मानव ने.....

(153) तर्ज : ये दुनिया ये महफिल...

ये बन्धु ये रिश्ते, कुछ काम के नहीं–2

किसको सुनाता हाल, तू अपने ख्याल का।
कोई न साथ देगा, तुझे तेरे ख्वाब का।
समझा रहे गुरु हैं, समझता तू क्यों नहीं।
किस भूल में पड़ा है, छूटेंगे सब यहीं॥ ये बन्धु...

अपना पता लगा ले, आया कहाँ से तू।
जाना कहाँ तुझे है, जाता कहाँ है तू।
आयेगी मौत तेरी, इसका पता नहीं।
निष्प्राण देह तेरी, रह जायेगी यहीं॥ ये बन्धु...

बन्धु सखा सभी हैं, चहुँ ओर रो रहे।
अर्थी बनाने का वे, इंतजाम कर रहे।
नहला रहे हैं तेरी, मृत देह को सभी।
श्मशान में ले जायेंगे, कहते हैं सब यहीं ॥ ये बन्धु...

कैसे दिखाऊँ दृश्य ये, दुनियाँ की प्रीत का।
स्वारथ भरे जगत में, मरने की रीत का।
धू-धू जला रहे हैं, अर्थी को सब तेरी।
आतम का 'राज' पाओ, कहते गुरु यहीं ।। ये बन्धु...

(154) तर्ज : बड़ा नटखट है कृष्ण...

बड़ा नटखट है रे, मन ये भ्रमैया।
पार लगाले नैया।

आ रे मन तोहे पूजा सिखाऊँ।
जल चंदन आदि द्रव्य सजाऊँ।
हमको है पाना सुख की छैया।। पार लगा ले...

मन मंदिर में प्रभु को बिठाऊँ।
उसकी ही नित मैं पूजा रचाऊँ।
जल समता से हो पाप नशैया ।। पार लगा ले...

मन शीतल कर गंध चढ़ाऊँ।
सुख के हेतु मैं पुष्प चढ़ाऊँ।
'राजश्री' करे, शिवपुर बसैया ।। पार लगा ले...

(155) तर्ज : होठों से छू लो.....

प्रभुवर को ध्यायूँ मैं, मुझको भी अमर कर दो।
मिल जाओ प्रभु मुझको, दर्शन अपना दे दो।।

हो धर्मसभा राजे, परमौदारिक तन है।
जिनवर की ध्वनि खिरती, काटे भवबंधन है।
वह ध्वनि सुना करके, सम्यग्दर्शन दे दो ।। प्रभुवर को.....

जग के इन कष्टों से, ऊबा है मन मेरा।
तुम दर्शन बिन ही तो, करता भव का फेरा।
दर्शन दे दो प्रभुवर, मेरी दृष्टि अमर कर दो ॥ प्रभुवर को.....

जग झूठा सपना है, ये मैंने अब जाना।
संयम तप जीवन से, है तुमको अब पाना।
छवि तेरी मन में रहे, ऐसी शक्ति भर दो ॥ प्रभुवर को.....

कर रागद्वेष भारी, निज आतम को खोया।
फंस मोह महातम में, कर्मों का वन बोया।
मैं भाव 'क्षमा' धारूँ, ऐसा मुझको वर दो ॥ प्रभुवर को.....

(156) तर्ज : बाबूल की दुआएँ...

औरों की कथायें बहुत सुनी, ना हमने उनका मनन किया।
इस कारण ही प्यारे मानव, इस जग में तूने भ्रमण किया॥

निज मात-पिता बंधु जन के, बंधन में फंस बचपन खोया।
तरुणाई की मदहोशी में, बेहोश हुआ अब क्यों रोया।
अब वक्त गया मेरे बन्धु, ना उस पर पल भर ध्यान दिया॥ इस कारण...

क्या नर तन पाया इसीलिए, शुभ वक्त बहाया पानी में।
अब देख बुढ़ापा सब भागे, तब रोया निज नादानी पे।
अब ध्यान धरो उस प्रभुवर का, जिनका ना अब तक गान किया॥ इस कारण...

जिन शास्त्र गुरु की शरण वरो, और सम्यक् पथ पर गमन करो।
उनके सिद्धान्तों को पाकर, अपना ये जीवन धन्य करो।
हो 'क्षमा' भाव सब जीवों से, इसका ना अब तक भान किया॥ इस कारण...

(157) तर्ज : सासों की न टूटे लड़ी...

सांसों की न टूटे लड़ी धर्म कर ले घड़ी दो घड़ी
ओ लम्बी लम्बी उमरिया न देखो-2
धर्म की इक घड़ी है बड़ी।। धर्म कर ले.....

उस नर तन का पाना भी क्या, जिसमें धर्म की कणी न हो।
वो आतम-आतम नहीं, जिसमें धर्म निशानी नहीं
धर्म हैं खुशियों की लड़ी ।। धर्म कर ले.....

लाख गहरा है सागर तो क्या, संयम से कुछ गहरा नहीं।
आत्म धर्म के हर मोड़ पर 'क्षमा' भावों के हर जोड़ पर
टूट जायेगी भव की कड़ी ।। धर्म कर ले.....

(158) तर्ज : यारो सब दुआ करो...

भावों पे ध्यान दो, अपना उद्धार करो।
कर्मों पे जय करो, पापों से तुम डरो।।
प्रभु चरणों की वंदना करो.....2

समझ गया मैं जैन धरम। भक्ति करूँ तेरी हरदम।
मानव जन्म सफल होवे। राग-द्वेष मल को धोवे।
पाऊँ मैं तो आतम द्वारा2 ओ प्रभुवर-2 समझ...

धर्म अहिंसा प्रचार करूँ मैं। जिन आगम की राह चलूँ मैं।
समकित दिव्य प्रकाश मिले। आतम ज्ञान की ज्योति जले।
पाऊँ मैं तो आतम द्वारा-2 ओ प्रभुवर-2 समझ...

मिट जाये मिथ्यात्व भरम। मुक्ति मिले मुझे इसी जनम।
जैन धरम का चयन करे। 'आस्था' से मुक्ति को वरे
पाऊँ मैं तो आतम द्वारा-2 ... ओ प्रभुवर..समझ...

प्रार्थना

ध्वज गान

(159) तर्ज : जन-गण-मन...

तन मन से हम विनय करेंगे, भारत की भूमि का
ऋषभदेव के पुत्र भरत पर, नाम पड़ा भारत का
ऋषि मुनि की तपोभूमि, यह इसको शीश नवायें
हम सब तव गुण गायें, शुभ आशीष ये पायें
गाते हम सब गाथा,

जन-जन मंगलदायक जय हो, भारत की भूमि का
जय होऽऽ जय होऽऽ जय हो, जय-जय-जय-जय हो॥1॥

जन-जन में हम भाव जगायें, 'सत्यमेव जयते' का,
दया क्षमा का भाव बढ़ायें, पाने ज्ञान ज्योति का,
अनेकांत की जोत जगाकर, तम अज्ञान हटायें,
हम सब ध्वज गुण गायें, जिन की ध्वनि ये पायें,
धर्म अहिंसा प्यारा,

जन-गण का कल्याणक जय हो, 'सत्यमेव जयते' का
जय होऽऽ जय होऽऽ जय हो जय-जय-जय-जय हो॥2॥

(160) तर्ज : चन्दन है इस...

पावन है इस देश का कण-कण मोक्षपुरी का धाम है।
हर कन्या सीता सुन्दरी, बालक वीर महान है। बालक...2
जहाँ संतजन तपोभूमि में, अध्यातम पर शोध करें।
भौतिकता से ऊपर उठकर, निज आतम की खोज करें। निज-2
जहाँ धर्ममय प्रात: बेला, अध्यातम की शाम है॥ हर कन्या...

अकलंक निकलंक परम प्रतापी, महाधुरन्धर वीर जहाँ।
लक्ष्मी बाई वीर शिवाजी, जैसे दिग्गज शेर यहाँ–जैसे...2।
हँसते–हँसते धर्म देश प्रति, करते निज बलिदान हैं॥ हर कन्या...

सत्यमेव जयते नारे को, मरते दम तक गाते हैं।
सत्य धर्म की सेवा में नित, अपना शीश चढ़ाते हैं– अपना...2।
हर प्राणी की रक्षा करना, हर मानव का काम है॥ हर कन्या...

सत्य प्रेम और शांति का, हम देते सबको नारा है।
सत्य अहिंसा इस भारत का, बड़ा अनोखा नारा है–बड़ा...2।
अनेकता में एकता यह, भारत की पहचान हैं।
हर कन्या सीता सुन्दरी, बालक वीर महान है॥

(161) तर्ज : राजपूतियानों को...

क्रांति युग वीरों को, साहस के चिरागों को, आगे बढ़ो, क्रांति करो न्याय ने पुकारा रे। जाग तुझे फिर धर्म ने पुकारा रे...3

खतरा है सत्य और समता के आधारों को,
खतरा है सुख और शांति की बहारों को,
खतरा है देश की आन बान शान को,
खतरा है देश में धर्म ईमान को,
युग महावीरों को, सत्य के दीवानों को, समता के पुजारी क्रांति
वीर ने पुकारा रे...3 जाग...

अनेकांत भाव हर जीव में जगाना है
सापेक्षवाद हर बोल में मिलाना है,
आचरण नभ–सा उदार भी बनाना है,
विश्व कल्याण का ध्येय अपनाना हैं,

अंध विश्वासों को, भेद की दीवारों को, सब मिल दूर करो
गुरु ने पुकारा रे...3 जाग...

जवान् किसान श्रीमान्, धीमान् भी,
संत ऋषि मुनि योगी ज्ञानी ध्यानवान भी,
हिन्दु सिक्ख ईसाई जैन बौद्ध रुसी भाई भी,
पंथवाद छोड़ सीखो विश्व की भलाई भी,
छोड़ो पक्षपात को, और कट्टरवाद को, संगठित हो आगे बढ़ो
सत्य ने पुकारा रे–3 जाग तुझे.....

महावीर जैसे तुम महान बन जाओ ना,
जिन की पूजा भक्ति करके निज को जिन बनाओ ना,
वज्र सम दृढ़ सत्यग्राही तुमको बनना है,
राणा सांगा जैसे स्वाभिमान को जगाओ ना
निंदा और प्रशंसा से, स्वार्थ के घड़ियालों से, निज को बचाओ।
तुम्हें 'गुप्ति' ने पुकारा रे–3 जाग तुझे...

(162)

विश्व में सद्ज्ञान का प्रचार हो, शान्तिनाथ वन्दना सुनो।
अनेकांतवाद पर विचार हो, शांतिनाथ प्रार्थना सुनो।।

सत्य हेतु विश्व का हर एक प्राणी मित्र हो।
विश्व के बन्धुत्व का सद्भावमय सुचित्र हो।।
भाषा जाति राष्ट्र धर्म की लड़ाई छोड़कर।
सत्य के उत्थान का विचार वह पवित्र हो।।
वाणी में सापेक्ष का उचार हो... शान्तिनाथ प्रार्थना.....

सूत्र वे स्वतंत्रता के आज हमको मिल गये।
साम्यवाद सत्य शोध के प्रसून खिल गये॥
धर्म ज्ञान के अमोघ नये मंत्र मिल गये।
एकता अखण्डता व संगठन में घुल गये।
धर्म से विज्ञान का उभार हो... शान्तिनाथ प्रार्थना.....

देश की रक्षा में जो स्वयं को भेंट कर रहे।
जो उदार भाव से सभी का पेट भर रहे॥
झूठे स्वार्थ दंभ का विषैला रूप छोड़कर।
शील सदाचार की अमोल भेंट कर रहे॥
उन सभी का सदा सहकार हो... शान्तिनाथ प्रार्थना.....

वर्द्धमान जैसी वीतरागता को पा सकें।
राम राणा ईसा सी महानता को ला सकें॥
राजनीति के घिनौने दावपेंच छोड़कर।
'गुप्ति' विश्व प्रेम का, अखण्ड भाव आ सके॥
वोट-नोट का नहीं विकार हो... शान्तिनाथ प्रार्थना.....

(163)

अरिहंत भजो रे सिद्ध भजो, जय सिद्ध भजो आचार्य भजो।
पाठक मुनि का ध्यान करो, पाँचों परमेष्ठी का नाम जपो-2

जय-जय-जय अरिहंत हमारे, चन्द्र-शुक्र ग्रह कष्ट निवारे।
णमो अरिहंताणं ध्यान धरो, पाँचों.....

सिद्ध अनंतानंत कहायें, रवि-मंगल ग्रह दोष नशायें।
णमो सिद्धाणं ध्यान धरो, पाँचों.....

परमेष्ठी आचार्य ऋषिवर, गुरु ग्रह पीड़ा हरते गुरुवर।
णमो आइरियाणं ध्यान धरो, पाँचों.....

रत्नत्रय का पाठ पढ़ायें, उपाध्याय बुध दोष नशायें।
णमो उवज्झायाणं ध्यान धरो, पाँचों.....
साधु पंचमहाव्रत पाले, राहु-केतु-शनि कृत दुख टाले।
णमो सव्वसाहूणं ध्यान धरो, पाँचों.....

(164) तर्ज : कहते जाओ...

कहते जाओ जपते जाओ पाँचों परमेष्ठी।
ध्याते जाओ जय-जय बोलो जय-जय-जय परमेष्ठी
श्री अरिहंत देवा, पहले परमेष्ठी।
घाति कर्मों को नशायें, ना रागी ना द्वेषी।।
छ्यालीस मूलगुणों को धारे, श्री अर्हंत परमेष्ठी। ध्याते...
सिद्ध अनंतानंता, दूजे परमेष्ठी।
आठों कर्मों को नशायें, सारे जग में श्रेष्ठी।।
आठों मूलगुणों को धारे, श्री सिद्ध परमेष्ठी। ध्याते...
तीजे परमेष्ठी, श्री आचार्य गुरुवर।
दीक्षा-शिक्षा देते हैं, पंचाचारी ऋषिवर।।
छत्तीस मूलगुणों को धारें, आचार्य परमेष्ठी।। ध्याते...
चौथे परमेष्ठी, श्री पाठक मुनीशा।
जिनवाणी को पढ़ते हैं, पढ़ाते हैं हमेशा।।
पच्चीस मूलगुणों को धारे, पाठक परमेष्ठी।। ध्याते...
पाँचवें कहलाते हैं, साधु परमेष्ठी।
विषयों की आशा को छोड़े, नग्न दिगम्बर वेषी।।
अट्ठाइस मूलगुण को धारे, श्री साधु परमेष्ठी।। ध्याते...
चलते-फिरते गायेंगे, नाम परमेष्ठी।
इक दिन हम सब बच्चे भी, बन जावें परमेष्ठी।।
'चन्द्रगुप्त' भी भक्ति करके, पाये पद परमेष्ठी।। ध्याते...

(165) तर्ज : हे शारदे माँ ...

हे वीतरागी ! संकट हारी।
आये शरण में, बनने पुजारी॥ हे वीतरागी...

रागी नहीं है नहीं है तू द्वेषी,
हे वीतरागी ! सर्व हितैषी,
ऐसे प्रभु का गुणगान गायें,
जीवन की नैया पार लगाये ॥ हे वीतरागी...

बालक विनय से शीश झुकायें,
गुरु की मूरत मन में बिठायें।
सेवा गुरु की करते रहेंगे,
शिक्षा उनसे पाते रहेंगे ॥ हे वीतरागी...

क्रांति से शांति लाना है हमको,
जगत् में नया दौर लाना है हमको,
आशीष हमको दे दो गुरुवर !,
चरणों में ले लो, तारो ऋषिवर ! ॥ हे वीतरागी...

आये शिविर में सद्ज्ञान पाने,
आदर्श जीवन अपना बनाने,
आतम गुणों की जोत जलायें,
'राजश्री' भी मुक्ति को पाये ॥ हे वीतरागी...

(166) तर्ज : लक्ष्य न ओझल...

मोक्ष की मंजिल पाने वाले, सत्य डगर पे चल।
अरिहंतों का सुमरण करके, सिद्ध जपो हर पल।
जय2-जय2 जय2-जय2 जय बोलो हर पल-2

साहस निर्भय स्वाभिमान रख, कदम बढ़ाता चल,
प्रेम दया स्नेह सरलता, सब पे लुटाता चल,
नफरत की खंजर से प्यारे, तोड़ न देना दिल,
दीन-दु:खी को गले लगाकर, पा लेना मंजिल ।। जय जय...

राष्ट्र भक्त बनना है हमको, भ्रष्टाचार मिटाना है,
हिंसा के ताण्डव का तूफां, जग से हमें भगाना है,
राग-द्वेष और पक्षपात को, मन से हटाता चल,
एक सूत्र में बंधकर जग में, क्रांति फैलाता चल ।। जय जय...

जिओ और जीने दो का, संदेश बताना है,
महावीर के पथ पर चलकर, शांति लाना है,
ऐसे गुण का पालन कर लो, याद रखेगा कल,
'क्षमा' भाव को धारण करके, पाना मोक्ष महल ।। जय जय...

(167) तर्ज : प्रभु पतित पावन...

दो ज्ञान गुरुवर आज हमको, हम शरण तेरी खड़े।
भवोदधि से पार कर दो, चरण हम तेरे पड़े।

प्रभु भक्ति हम मन से करें, और मात पितु सेवा करें,
गुरुजनों के गुण ग्रहण कर, सफल निज जीवन करें।। दो ज्ञान...

प्रभु आप सम हम सत्य ग्राहक, और साहस युत बनें।
बनकर सदाचारी गुरु हम, देश भक्ति उर धरें।। दो ज्ञान...

न्याय नीति धर्म पूर्वक, दया सब पर हम करें।
'क्षमा' मैत्री को बढ़ाने, शिविर में अध्ययन करें।। दो ज्ञान...

(168)

विश्व में सत्य का प्रकाश हो।
माँ भारती की वंदना करो।
गुरु कृपा सदा ही साथ-साथ हो।
गुरुजनों की वंदना करो।

विश्व मैत्री भावना उदारता हृदय धरें।
सत्य के लिये जियें और सत्य के लिये मरें।
सत्य-साम्य-शांति पाने हम कदम बढ़ायेंगें।
एक साथ आगे बढ़ के विश्व क्रांति लायेंगें।
हिंसा भ्रष्टाचार का विनाश हो।।
माँ भारती.....

मन में अनेकांतवाद शब्द में हो स्याद्वाद।
तोड़ना है हमको सारी रूढ़ियाँ व पंथवाद।
वीर की महानता और राम सी हो धीरता।
बापू जैसी राजनीति राणा जैसी वीरता।
वीरसेन जैसा शोध ज्ञान हो।।
माँ भारती.....

गुप्तिनंदी की सौम्यता स्वर्ण सी दमक रही।
जिनसे प्रवर प्रखर ज्ञान रश्मियाँ निकल रही।
धर्म-रत्नत्रय की सभा यहाँ है लग रही।
है 'क्षमा' की भावना सफल हो कामना यही।।
सत्य धर्म का सदा प्रचार हो।।
माँ भारती.....

(169) तर्ज : हो रात के मुसाफिर...

अरिहन्त ध्यान करना, सिद्धों का नाम जपना।
आचार्य साधु पाठक, सत्संग इनका करना॥
चौबीसों नाथ मेरे, हैं शिवपुरी निवासी।
सुमरण है इनका पावन, कर्मों का है विनाशी॥
जिन धर्म है निराला, करुणा अहिंसा वाला।
ध्वज धर्म की फहरा कर, करें विश्व का उजाला॥
गुरु गुप्तिनंदी मुनिवर, गंभीर ज्ञानी ध्यानी।
इनकी शरण जो पाता, पाये वो मुक्ति रानी॥
हे राज श्री माता, वात्सल्य की हो सरिता।
इसमें नहा के प्राणी, पाते हैं ज्ञान शुचिता॥
हम इनकी शरणा पायें, जीवन सुखी बनायें।
'क्षमा' ज्ञान ज्योति पाकर, अज्ञान को मिटायें॥

(170) तर्ज : भक्ति और ज्ञान का लाभ...

अरहंत शरणा, सिद्ध प्रभु शरणा,
आचार्य शरणा, उपाध्याय शरणा-2।
सर्व साधुओं की-2 शरण लीजिए,
हर पल प्रभु का नाम लीजिए-2।

आदिनाथ की शरण, चन्द्रप्रभु की शरण,
पार्श्वनाथ की शरण, महावीर की शरण
चौबीसों प्रभु का-2 नाम लीजिए॥ हर पल प्रभु...

कुन्थु सिन्धु की शरण, कनकनंदी की शरण,
गुप्तिनंदी की शरण, आचार्य संघ की शरण।
सब गुरुओं की शरण लीजिये।। हर पल गुरु...

विजया माता की–2 शरण लीजिये।
राज श्री माता की शरण लीजिये।
'क्षमाश्री' को अम्बे शरण लीजिए।
भव सागर से पार कीजिए।
सभी आर्यिकाओं की शरण लीजिए।। हर पल गुरु...

(171) तर्ज : हे परम...

हे ! परम कृपालु गुरुवर हम सब, विनय भक्ति से नमन करें।
शरण आपकी आन खड़े हैं, दुर्भावों का दमन करें।।

सत्य न्याय की शिक्षा पाकर, हम भी तुम सम बन जायें।–2
कुपथ मोह से त्रस्त दु:खित जन, उनके दु:ख का दहन करें।।
हे परम...

शांति क्रांति हो विश्व में सारे, यही प्रार्थना आज करें।–2
हम बालक गुरु चरणों में आ, पाप–ताप का शमन करें।।
हे परम...

ज्ञान ज्योति विकसायें हम सब, तम अज्ञान विनश जाये।–2
वीर महापुरुषों के पथ का, मन–वच–तन से चयन करें।।
हे परम...

विनय करें हम वृद्धजनों की, और छोटों से प्यार करें।–2
'क्षमा' धर्म का पालन करके, मुक्ति महल में शयन करे।।
हे परम...

शिविर

(172) तर्ज : जहाँ डाल-डाल पर...

श्री रत्नत्रय संस्कार शिविर में, जागे ज्ञान सबेरा।
आया अवसर आज सुनहरा-2।
जहाँ धर्म ध्यान चिंतवन मनन का, निशदिन लगता मेला
आया अवसर आज सुनहरा-2।
आबाल वृद्ध नर नारी सभी मिल, पढ़ने आते सारे।
शुभ धर्म न्याय विज्ञान सभी का, शिक्षण कर सुख पाते-2।
जहाँ भजन आरती ज्ञान ध्यान ने, सब पर डाला डेरा॥ आया अवसर...

है भारत शान हमारी हम तो, इस पर मर मिट जायें।
हो सत्य अहिंसा हर मानव में, ऐसा यतन कराये-2।
जहाँ देश भक्ति और धर्म भक्ति का, निशदिन लगता मेला ॥ आया अवसर...

हम कर्म कालिमा दूर करें, निज आतम स्वर्ण बनायें।
श्री मुनि आर्यिका बना गुरुवर, आत्म गवेषी बनायें-2।
जहाँ सेवा संयम 'गुप्ति' से, हो केवलज्ञान उजेरा ॥ आया अवसर...

(173) तर्ज : यह देश है वीर जवानों...

यह शिविर है बाला वीरों का, बालक युवाओं धीरों का,
इस शिविर का भैया-2 क्या कहना, यह शिविर है मानव का गहना,
हो ओ ऽऽ ओ ऽऽ आ ऽऽ आ ऽऽऽऽ

जहाँ धर्म न्याय विज्ञान पढ़े, हर मानव निज उद्धार करे,
यहाँ जैनी अजैनी ऽऽ-2 आते हैं-
अध्ययन चिंतन सुख पाते हैं। हो ऽऽ ओ ऽऽ...

अनुशासन में हर काम यहाँ, स्वालम्बी बनाते गुरु जहाँ,
यह देश भक्ति का ऽऽ–2 मेला है–
यहाँ मिल–जुल सबको रहना है। हो ऽऽ ओ ऽऽ...

यहाँ राजा रंक का भेद नहीं, बच्चे–बूढ़े सब एक यहीं
हर छात्र यहाँ ऽऽ–2 संचालक है, सब वक्ता गायक नायक है। हो ऽऽ ओ ऽऽ

यहाँ विद्या भूषण पायेंगे, व्रत, क्षमा, 'गुप्ति' अपनायेंगे
हम निज वैभव को ऽऽ–2 पायेंगें
सही शिविर का लाभ उठायेंगें। हो ऽऽ...ओऽऽ...।

(174) तर्ज : इंसाफ की डगर पे...

सब मिल शिविर में आओ, ज्ञानी दिखाना बनके।
है राष्ट्र भार तुम पर, नायक तुम्हीं हो कल के॥

फेरी प्रभात में आ, सद्भावना जगाना–2।
क्रान्ति बिगुल बजा के, क्रांति विचार लाना–2।
भक्ति से शान्ति सम्भव होती, दिखाना करके॥ सब मिल.....

शुभ योग ध्यान करके, तन–मन को स्वस्थ रखना–2।
आरोग्य लाभ लेकर, यह राष्ट्र स्वस्थ रखना–2।
उन्नत यह राष्ट्र रखना, तुम स्वार्थ त्याग करके॥ सब मिल.....

कक्षा में शिक्षा पाकर, ज्ञानी बनाना खुद को–2।
सत् न्याय धर्म आदर, गुण से सजाना खुद को–2।
सेवा–विनय–दया से, भारत तुम्हारा चमके॥ सब मिल.....

संगीत के सुमन ले, हम भाव को जगायें–2।
सुर–ताल और लय से, जीवन मधुर बनायें–2।
देना जगत को शिक्षा, सब एक स्वर में गाके॥ सब मिल.....

सज्जन प्रभावशाली, नायक तुम्हें है बनना-2।
ज्ञानी सरल स्वभावी, आचार वान बनना-2।
'गुप्ति' से आत्म शक्ति, पाकर दिखाना तप के॥ सब मिल.....

(175) तर्ज : ऐ मेरे...

मेरे देश के वीर जवानों, अब भारत माँ को बचाओ।
हर घर में शत्रु बैठा, अब इसको दूर भगाओ॥

मेरी भारत माँ को दूषित, हर शत्रु करने आये।
भ्रष्टाचारी अशिक्षा, स्वारथ हिंसा बढ़ आये।
इन शत्रु से लोहा लेकर, अब देश की आन बचाओ॥ हर घर...

हम भौतिकता में उलझे, नैतिकता भूल गये हैं।
मानवता को भूलें हम, दानवता सीख रहे हैं।
श्री वीर सुभाष औ गांधी, अब पुन: बनाने आओ ॥ हर घर...

निज संस्कृति को भूले हम, सभ्यता छोड़ दी अपनी।
शिक्षा आदर्श गंवाये, हम भूल गये निज जननी।
'गुप्ति' फिर तुम्हे पुकारे, आदर्श सिखाने आओ ॥ हर घर...

(176) तर्ज : राजा की आई है...

शिविर की आई है बहार आज इस नगरी में।
पाते हैं ज्ञान अपार गुरु के चरणों में॥-2
जय हो- जय हो- जय जय हो-2

प्रात: उठ नित भक्ति करते बन के मुक्ति दिवाने-2।
पूजा की थाली ले करके आते प्रभु गुण गाने-2
करें वन्दन बारम्बार प्रभु के चरणों में॥ पाते हैं.....

ज्ञान सुमनों की सुरभि से सारा जग महकायें-2
सदाचार की शिक्षा पाके मन पवित्र बनायें-2
बने आदर्शवान महान् गुरु के आंगन में ।। पाते हैं.....

गुप्तिनंदी गुरु हमारे जग जन मंगलकारी-2
'राजश्री' भी भक्ति करके पाये मुक्ति नारी-2
जागे भाग्य हमारे आज सत्संग करने में ।। पाते हैं.....

(177) तर्ज : चंदन है इस देश...

रत्नत्रय संस्कार शिविर का, लक्ष्य सत्य को पाना है।
जग जीवों में विश्वमैत्री, कर्त्तव्य निष्ठता लाना है। कर्त्तव्य..।।

सत्य साम्य सुख पाने का, उद्देश्य हमारा है प्यारा।
हिंसा भ्रष्टाचार मिटा दे, हो चिज्ज्योति उजियारा-हो...।।
विश्व शांति का ध्येय बनाकर, सबको एक बनाना है। जग जीवों में...

भावों में हो अनेकान्त और स्याद्वाद नित वचनों में।
एक सूत्र में बंधे विश्व गुरु, कहते अपने वचनों में-कहते...।।
ऐसे ही अद्भुत विचार से, सबको क्रांति लाना है। जग जीवों में...

रामचन्द्र सी धीर वीरता, सन्मति की गंभीरता।
शील अंजना सीता जैसा, राणा जैसी वीरता-राणा...।।
'राजश्री' गुरु की शिक्षा से, हमको अलख जगाना है। जग जीवों में...

(178) तर्ज : आ जा सनम...

आओ सभी मिल शिविर में चले, यहाँ आकर सभी ज्ञान पा जायेंगे।
महिमा गुरु की महान्-2

प्रात: ईश्वरगान से, धर्म की प्रभावना हम करें।
ध्यान योग और व्यायाम से, स्वस्थ अपना तन हम करें॥
सत्य निष्ठ हम बनें, धर्म से नहीं डिगें।
पूजा आहार दान से, मिले प्रयोग ज्ञान।। आओ सभी...

कनकनंदी प्राचार्य हैं, गुरुवर साधु वृन्द हैं।
अनुशासन शालीनता, एकता सब में आनंद है।।
संगठित हों सभी, पाप ना करें कभी।
देश के उत्थान की, पा रहे शिक्षा महान् ।। आओ सभी...

शाम को हो रहे कार्यक्रम, सबके मन को भा रहे।
आरती वंदना हम करें, ज्ञान के दीप को जला रहे।।
शिविर की महिमा महान्, सब बनेंगें ज्ञानवान।
'राज' पाये मुक्ति थान, है यही अवसर महान् ।। आओ सभी...

(179) तर्ज : इंसाफ की डगर...

सच्चाई की डगर पर, बच्चों चलेंगे मिल के।
ये धर्म है हमारा, पालन करेंगे मिलके ।।

दुष्कर्म हो रहे जो, उनको है दूर करना।
चारित्र के ही बल से, उनका विरोध करना।
रख देंगे एक दिन हम, कुरीतियाँ बदल के।। सच्चाई...

रक्षक बने हमारे, भक्षक वो बन रहे हैं।
धन का गुमान करके, मद में जो बह रहे हैं।
उनको दिशा दिखाना, सत धर्म पे ही चलके ।। सच्चाई...

चारों तरफ मची है, अन्याय अत्याचारी।
रूढ़ी में फँस रही है, जनता ये त्रस्त सारी।
इन सबको दूर करना, आर्दशवान बनके ॥ सच्चाई...

सत् न्याय के कदम पर, तत्पर सदा ही रहना।
तन मन लगाके अपना, कर्त्तव्य नित्य करना।
शिव 'राज' तुम करोगे, गुरु शरण में ही आके ॥ सच्चाई...

(180) तर्ज : माइन माइन...

गूंज रहे हैं गीत खुशी के, देख रहा जग सारा।
ज्ञानवान बनने को हमने, शिविर लगाया प्यारा॥ बोलो जय-जय-

कष्टों से टक्कर लेकर के, आजादी दिलवाई।
तन-मन अपना कर न्यौछावर, शिक्षा हमें सिखाई।
याद करो उन महावीर को, जिनने लाज बचाई।
इन वीरों को भाव सुमन की, श्रद्धांजलि चढ़ाई ॥ बोलो जय-जय-

सूरज बनकर इस धरती को, सदा प्रकाशित करना।
सरिता बनकर अविरल गति से, प्रगति पथ को वरना।
शीलवान अनुशासित बनकर, जीवन सफल बनाना।
अंधियारे जीवन में हमको, ज्ञान के दीप जलाना ॥ बोलो जय-जय-

रूढ़ीवादी भ्रष्टाचारी, जग से आज भगाना।
अन्यायी अत्याचारी को, सत्य की राह बताना ।
तुम बालक हो देश के पालक, न्याय नीति पर चलना।
'राज' कहे गुरु पग रज लेकर, ज्ञानवान है बनना॥ बोलो जय जय...

(181) तर्ज : तुम्हीं मेरी भक्ति तुम्ही मेरी पूजा

बच्चों तुम्हें है सुख जो पाना।
गुरु सेवा में मन को लगाना।।

सदा सत्य के ही मार्ग पे चलना,
कर्त्तव्य करना पीछे न हटना,
सदा धर्म मय ही जीवन बनाना।। गुरु सेवा...

नहीं भूलकर हो तुमसे हिंसा
सारे जगत को सिखा दो अहिंसा
सम्यक् गुणों का पालो खजाना...।। गुरु सेवा...

वीरों ने अपना फर्ज निभाया
स्वतंत्र भारत तुमने है पाया
देश धरम हित शीश चढ़ाना ।। गुरु सेवा...

गुरुवर को तुम लगते हो प्यारे
अनुभव इनके सबको सुधारें
'क्षमा' की बातें भूल न जाना ।। गुरु सेवा...

(182) तर्ज : रिमझिम बरसता जीवन...

ज्ञानमय सबका जीवन होगा।
अज्ञानी जब कोई न रहेगा।
ऐसा पूरा सपना, मेरे गुरु का होगा।। ज्ञानमय...

नन्हें मुन्ने बच्चों को, हरदम पढ़ायेंगे।
जग को धर्म का मर्म समझायेंगे।
बच्चों से सुन्दर समाज बनेगा ।। अज्ञानी...

भौतिकता की आँखों में धर्म जगायेंगे।
धर्म के दीप से ज्योत जलायेंगे।
नैनों से प्रभु का दर्शन होगा ।। अज्ञानी...

सत्य अहिंसा सबको सिखायेंगे।
रूढ़ि अधर्म को दूर भगायेंगे।
'क्षमा' विनय मय सब जग होगा।। अज्ञानी...

(183) तर्ज : परदेसी परदेसी जाना...

मैं ये नहीं कहती, कि साधु ही बन जाना।
मगर ये जरुर कहती हूँ, कि जैनी तो बन जाना।।
जैनी भाई !, जैनी भाई !, भूलो नहीं, अरे भूलो नहीं जिनधर्म को-2
सत्य अहिंसा वाला, जिन धर्म प्यारा,
इसकी शरणा पाकर, सबको है सुख पाना।। जैनी भाई...2

ना सोचा ना समझा, इसको त्याग दिया।-त्याग...
परदेसी की नकल में, सब कुछ वार दिया -। वार...
टी.वी. और फैशन से, तुमने प्यार किया। प्यार...
अपने अच्छे संस्कारों को त्याग दिया।।2
धर्म ये हमारा, सबसे निराला
इसकी शरणा पाके, सबको है सुख पाना ।। जैनी भाई...2

भूल न जाना, महावीर की गाथा को-गाथा...
भूल न जाना, सती चंदना बाला को-बाला...
भूल न जाना, जिनवर के उपदेशों को-उपदेशों...
भूल न जाना, गुरुओं के संदेशों को-संदेशों...
धर्म ये हमारा, समता रस वाला,
इसकी शरणा पाके, हमको है सुख पाना ।। जैनी भाई...2

भूल न जाना, सत्गुरुओं की वाणी को–वाणी...
भूल न जाना, निकलंक की कुर्बानी को–कुर्बानी...
धर्म के खातिर भाई ने, बलिदान दिया–बलिदान...
प्राणों से प्यारे भ्राता का, दान दिया–दान...
धर्म ये हमारा, सुख शांति वाला
'क्षमा' भाव भाके, सबको है सुख पाना ॥ जैनी भाई...2

(184) तर्ज : ये नरतन का पाना...

ये शिविर में आना और ज्ञान को पाना।
बच्चों याद रखोगे, कि भूल जाओगे ॥

मोह अंधेरे में हम पड़े थे, धर्म और गुरु को भूल रहे थे।
गुरुदेव का पढ़ाना, और समय से आना॥ बच्चों...

सूर्य के समान तेजस्वी बनो, चन्द्र से सुन्दर मनमोहक बनो।
माताजी का समझाना, न इनको तुम भुलाना ॥ बच्चों...
सागर के जैसे गंभीर भी बनो, सरिता के जैसे पवित्र तुम रहो।
गुरु सागर का मिलना, पवित्र भाव लाना ॥ बच्चों...

सौरभ सी सुरभि तुम्हारी बढ़े, कीर्ति के पुष्प जीवन में खिले।
ये प्रतिभा जगाना, 'क्षमा' को न भुलाना ॥ बच्चों...

(185) तर्ज : प्यारा दीवाना होता...

भारत का हर कण–कण, तुमको वीर बनाता है।
वीर महावीरों की हरदम, याद दिलाता है ॥

अरे सुनो ! सुन लो प्यारे, करो बलिदान।
भौतिकता का दामन छोड़ो, करो अभयदान॥
दया धर्म का पाठ हमको यही सिखलाता है॥ वीर...

देश धर्म न्याय की, रखना लगन।
सुभाष तिलक सम, बचाना वतन।
निर्भयता का पाठ हमको यही सिखलाता है ॥ वीर...

'क्षमाश्री' कहती गुरु की, पा लो शरण।
महाव्रत धारी हैं ये, तारण-तरण।
गुरुवर का आशीष हमको राह बताता है॥ वीर...

(186) तर्ज : शादी रचाऊँगा...

शिविर में आयेंगे, ज्ञान हम पायेंगे।
धर्म ध्वजा को हम, जग में फहरायेंगे॥
ज्ञान की आयी है बहार हो, बन जाये पुजारी।...2

शिविर आपने लगवाया, अनुशासन हमें सिखलाया।
विनय नम्रता सिखला कर, सत्य मार्ग हमें दिखलाया।
आदर्श बने जीवन सबका, ज्ञान मिले सबको इसका।
शिक्षा हम पायेंगे, ध्यान लगायेंगे, आगे बढ़ जायेंगे।
धर्म का करें प्रचार हो..... बन जाये पुजारी...

हिंसा भ्रष्टाचारी को, हमको आज मिटाना है।
विश्व राष्ट्र में शांति हो, अत्याचार मिटाना है।
दया मैत्री का भाव जगे, एक दूजे से मिलके रहें।
हिंसा मिटायेंगे, पाप भगायेंगे, सत्संग में आयेंगे।
दोषों का करें परिहार हो... बन जाये पुजारी।

आदि पुरुष महावीरा के, आदर्शों को लाना है।
राष्ट्र हितैषी बनकर के, क्रांति आज जगाना है।
महापुरुष बन जायें हम, भक्ति नित गुरुओं की करें।
शिविर लगायेंगे, 'आस्था' बढ़ायेंगे, चरणों में आयेंगे॥
हो रही जय जयकार हो- बन जाये पुजारी...

(187) गुरु वंदना

ज्ञानी ध्यानी निर्ग्रंथों की, संस्तुति करते सुर नर-इन्द्र।
महातपस्वी समताधारी, संयमधारी सर्व मुनीन्द्र।।
तन से मोह ममत्व न करते, हरदम करते आतम ध्यान।
उन गुरुओं को शीश नवायें, सदा करें हम उनका ध्यान।।1।।

रवि के सन्मुख योग लगायें, खड्गासन कई माह बिताय।
ग्रीष्म योग धारी गुरुवर को, भक्ति भाव से शीश नवाय।।
आतापन जब योग लगाते, निज का ही करते नित ध्यान।। उन...।।2।।

धरती अम्बर दोनों तपते, हिले-डुले ना उनकी काय।
ठूठ समझ के वन्य जीव भी, अपने तन की खाज खुजाय।।
मेरुवत वे अचल रहे नित, कभी न छोड़ें अपना ध्यान।। उन...।।3।।

वृक्षमूल वर्षा ऋतु में भी, तरुँ के नीचे योग धरें।
पत्तों से पानी नित झरता, मुनिवर फिर भी ध्यान करें।।
शीतल हवा बर्फ सी लगती, गुरुवर घोर करें नित ध्यान।। उन...।।4।।

वन पर्वत या नदी गुफा में, ध्यान करें सागर तट पे।
बाइस परिषह सहते रहते, मासोपवास करें तट पे।।
समता से उपसर्ग सहें नित, उनका हम भी करते ध्यान।। उन...।।5।।

करें आरती अर्घ चढ़ायें, कोई करता असि से वार।
कोई करें वंदना पूजा, निंदा अथवा शब्द प्रहार।।
सुख-दुःख में समता वे धारे, राग-द्वेष तजते अभिमान।। उन...।।6।।

शत्रु मित्र बंधु वैरी से, तजे मोह के भाव सभी।
इष्ट अनिष्ट आदि वस्तु में, आर्त्त रौद्र ना करें कभी।।
परम सिद्ध पद पाने हेतु, धर्म शुक्ल दो करते ध्यान।। उन...।।7।।

दश धर्मों को पालन करते, सर्व कषायें कृष करते।
अंत समाधि सम्यकपूर्वक, समिति गुप्ति व्रत वे धरते॥
द्वादश अनुप्रेक्षा गुरु भाते, 'आस्था' से करते हम ध्यान॥ उन...॥8॥

(188)

(तर्ज – मधुवन के मंदिरों में...)

जीवन सुखी बनाने, आये गुरु के द्वारे।
आशीष ही गुरु का, संसार दुःख से तारे॥

1. गुरुओं की साधना को, आगम हमें बताये।
उनकी ये शांत मुद्रा, दुःख–दर्द सब मिटाये॥
जो भी शरण में आये, उनको गुरु उबारें...आशीष..

2. व्रत में महाव्रतों को, पालें सदा गुरुवर।
जिनवाणी जिनकी भूषण, विषयों को तजते ऋषिवर॥
नित ज्ञान ध्यान करते, ग्रीष्मादि योग धारें...आशीष..

3. करते कठिन तपस्या, पर्वत गुफा में जाके।
जीवन सुखी बनाते, चरणों में उनके आके॥
हम भी उन गुरु को, भक्ति से नित पुकारे...आशीष..

4. छवि उनकी कितनी प्यारी, लख वन के सारे प्राणी।
पत्थर समझ के उनको, खुजली मिटाते प्राणी॥
सहते गुरु परिषह, समता हृदय में धारें...आशीष..

5. पूजा व वंदना हम, गुरुओं की नित्य करते।
'आस्था' से सर झुकाकर, चरणों में शीश धरते॥
पिच्छी रखो गुरुवर, बस शीश पे हमारे..आशीष..

कथा कीर्तन

(189) पारसनाथ भजन (तर्ज–जंगल–जंगल बात चली है...)

सल्लकी वन में बहुत बड़ा कोहराम मचा है।
वज्रघोष हाथी ने हल्ला मचा रखा है॥ सल्लकी...

1. मरुभूति ने पाप कमाया–पाप–2, अन्यायी से, मोह बढ़ाया–2
भ्रात प्रेम में उसने सब कुछ भुला रखा है–2 वज्रघोष...
2. उसी पाप से पशु बना वो, पशु–2 पशुओं में भी महाबली वो–2
अपने बल से उसने सबको डरा रखा है– डरा रखा–2, वज्रघोष...
3. जंगली प्राणी भागे डरकर, भागे–2 शेर भी उससे काँपे थर–2
अपने बल का उसने सिक्का चला रखा है– वज्रघोष...
4. इक मुनि संघ शिखरजी जाये, शिखर–2 वही सल्लकी वन में
आये– वन में...2 उन्हें देख वो हाथी अब यमराज बना है– वज्रघोष–2
5. अरविन्द मुनि को मारने आया, मारने–2
श्री वत्स लख वो गज बौराया, गज...
ज्ञान हुआ अब ये मुनिवर तो पूर्व सखा है, वज्रघोष–2

(190) श्री वृषभ कथा सत्संग महोत्सव

(तर्ज–ये नवग्रह शान्ति विधान हैं...)

जय आदिनाथ भगवान की, जय जय हो आदिपुराण की।–2
कृति अनोखी कृति निराली, होऽऽ–2..श्री जिनसेनाचार्य की...

जगजननी माँ मरुदेवी ने, आदिप्रभु को जन्म दिया।–2
नाभिराय के कुलदीपक ने, इक्ष्वाकु कुल धन्य किया॥–2
षट्कर्मों की कला सिखाकर होऽऽ–2, कर्मभूमि निर्माण की।
जय आदिनाथ भगवान की...

श्रेष्ठदान आहारदान से, आदि प्रभु जगश्रेष्ठ बने।
इसीलिए तो वर्तमान की, चौबीसी में ज्येष्ठ बने॥
महापुरुष की महाकथा ये, होऽऽ-2, जन-जन के कल्याण की।
जय आदिनाथ भगवान की...

आदिकथा सुनकर ये जीवन, उपवन सा खिल जाता है।
धर्म और धन देवे वाला, चिंतामणी मिल जाता हैं॥
रोग शोक संकट हरती ये, महाकथा भगवान की।
जय आदिनाथ भगवान की...

(191) आदिनाथ भगवान का कीर्त्तन

(तर्ज-जय जिनवाणी माता...)

जय आदीश्वर स्वामी, हम तुम्हें पुकारे, जय आदीश्वर स्वामी..
जय आदीश्वर स्वामी...

1. नाभिराय मरुदेवी के नंदन-2, हे त्रिभुवन के स्वामी.. हम तुम्हें..
2. काल तीसरे में प्रभु जन्में-2, जन मन रंजन स्वामी..हम तुम्हें..
3. सर्व प्रजा को कर्म सिखाया-2, तीन लोक के स्वामी..हम तुम्हें..
4. द्वय पुत्री को प्रथम पढ़ाया-2, बनी सुता द्वय ज्ञानी..हम तुम्हें..
5. शत पुत्रों को कला सिखाई-2, बने पुत्र मुनि ध्यानी..हम तुम्हें..
6. 'आस्था' से हम कीर्त्तन गायें-2, ऋषभ जिनेश्वर स्वामी..हम तुम्हें..

(192) (तर्ज-इक्षुरस का...)

दान विधि की शिक्षा देने हो ऽऽऽ-2 निकले श्री भगवान,
जय-जय आदिनाथ भगवान्
छह महीने का योग लगाया, अंतराय छह महीने आया।
गाय बैल का मुख बंधवाया, वही कर्म उदयागत आया॥
कर्म किसी का सगा नहीं है, चाहे हो भगवान.. जय-जय...

कोई सुन्दर कन्या लाए, कोई भोजन वसन दिखाए।
कोई रथ वाहन ले आए, कोई अश्रु धार बहाए।।
भरत चक्री भी दान विधि से, रहा पूर्ण अनजान... जय-जय...

नृप श्रेयस को सपना आया, महासुमेरु चल घर आया।
कल्प वृक्ष घर में हर्षाया, चन्द्र सूर्य ने यश फैलाया।।
सिंह, बैल, व्यंतर वा सुरगण, गाते हैं गुणगान... जय-जय...

तभी हस्तिनापुर प्रभु आये, श्रेयस जाति स्मरण उपाये।
नृप प्रभु को विधिवत पड़गाये, निरंतराय आहार कराये।।
'गुप्तिनंदी' कहें वहाँ पर अचरज हुये महान...जय-जय...

(193) शांतिनाथ भगवान का कीर्त्तन

(तर्ज-जय जिनवाणी...)

जय हो शांति जिनेशा, हम तुमको ध्यायें, जय हो शांति जिनेशा..

1. हस्तिनापुर में जन्मे स्वामी-2, पूजें सर्व सुरेशा.. हम तुमको..
2. तीन पदों के धारी प्रभुवर-2, झुकते सर्व नरेशा..हम तुमको..
3. धर्म अखंड चला प्रभु तुमसे-2, कहते मुनि गणेशा..हम तुमको..
4. शांतिनाथ प्रभु शांति प्रदाता-2, शांति करें हमेशा..हम तुमको..
5. गुप्ति गुरु प्रभु कथा सुनाये-2, देते नव संदेशा हम तुमको..
6. 'आस्था' से प्रभुवर को ध्यायें-2, पूजें भव्य हमेशा..हम तुमको..

(194) मुनिसुव्रतनाथ भगवान का कीर्त्तन

(तर्ज-जय जिनवाणी...)

जय मुनिसुव्रत देवा, हम तुमको ध्यायें, जय मुनिसुव्रत देवा.....

1. राजगृही में जन्में स्वामी-2, सुर नर करते सेवा.. हम तुमको ध्यायें..

2. सर्व तीर्थ पे आप विराजे–2, भक्त करें नित सेवा.. हम तुमको..
3. दुःख संकट को हरने वाले–2, कष्ट मिटाओ देवा.. हम तुमको..
4. मन मंदिर में आप विराजे–2, देते मुक्ति मेवा..हम तुमको..
5. गुप्तिनंदी गुरु कथा सुनाये–2, 'आस्था' रख नित देवा.. हम तुमको..

(195) संगीतमय पार्श्वनाथ कथा कीर्त्तन

(तर्ज–जय जिनवाणी माता...)

जय चिंतामणि बाबा, हो पारस देवा, जय चिंतामणि बाबा
जय चिंतामणि बाबा....

1. सबकी चिंता हरने वाले–2, सबके भोले बाबा॥ जय...
2. अश्वसेन वामा के नंदन–2, हो साँवरियाँ बाबा॥ जय...
3. समता मूरत पारस स्वामी–2, सहस्र फणेश्वर बाबा॥ जय...
4. पापी का भी पाप छुड़ाया–2, कमठ विजेता बाबा॥ जय...
5. जलते नाग युगल को तारा–2, संकट हरते बाबा॥ जय...
6. गुप्तिनंदी गुरु कथा सुनाये–2,'आस्था' बोले बाबा॥ जय...

(196) महावीर कथा कीर्त्तन

(तर्ज–गजमोती..)

जय महावीर भगवान की, जय महावीर भगवान की।
जन–जन के उद्धारक जिनवर, महावीर भगवान की॥

1. कनकोज्ज्वल खेचर ने प्रभु का, दर्शन नित्य विधान किया।
महातीर्थ निर्माण कराये, जिन मंदिर में दान किया॥
लान्तवेन्द्र बन पाई घड़ियाँ, प्रभु ने अब उत्थान की।
जय महावीर....

2. मंडलीक हरिषेण बने तब, जिन पूजन व दान किया।
चार संघ को हर दिन प्रभु ने, चउविध उत्तम दान दिया॥
श्रमण समाधि से फिर आई, घड़ियाँ स्वर्ग प्रयाण की।
जय महावीर....

3. महादान से महावीर ने, चक्रवर्ती का पद पाया।
चक्रवर्ती प्रियमित्र बने पर, अब वैराग्य उमड़ आया॥
स्वर्ग बारहवें में फिर आई, घड़ियाँ निज कल्याण की।
जय महावीर....

4. वीरवती के पुत्र नंद बन, सबको अति आनंद दिया।
सोलह कारण दिव्य भावना, भाकर अति आनंद लिया॥
अच्युतेन्द्र बन करी क्रिया अब, 'गुप्ति' देवोत्थान की।
जय महावीर....

(197) कीर्त्तन

(तर्ज–जय जिनवाणी माता....)

जय महावीरा स्वामी, लो शरण तुम्हारी। जय महावीरा स्वामी...
सिद्धारथ के राजदुलारे, त्रिशला माँ के नयन सितारे॥
कुण्डलपुर अवतारी – लो शरण तुम्हारी॥1॥ जय....
तुमने हिंसा यज्ञ रुकाया, दास प्रथा को आन मिटाया।
चन्दन के उद्धारी, लो शरण तुम्हारी॥2॥ जय....
सत्य अहिंसा पाठ पढ़ाया, धर्म शास्त्र का नाद कराया।
मिथ्या मार्ग निवारी, लो शरण तुम्हारी॥3॥ जय....
'गुप्तिनंदी' ने तुमको ध्याया, वीर कथा कह अति हर्षाया।
जन–जन के उपकारी लो शरण तुम्हारी॥ जय....

(198) कथा कीर्त्तन

(तर्ज – मेरा महावीर प्यारा...)

वीर महावीर ध्याओ, वीर गाथा में आओ, हम तो वीर भजेंगे।
वीर कथा सुनेंगे–2, जय हो महावीरा–4

महावीर गाथा ऋषियों ने गायी, जिनवाणी माता ने हमको सुनायी॥
चंदन बाला सी वीर भक्ति करेंगे। वीर महावीर..॥1॥

जिओ और जीने दो प्रभु ने बताया। सत्य अहिंसा का पाठ पढ़ाया॥
भारत इसी से विश्व गुरु बना है॥ वीर महावीर..॥2॥

वर्धमान ने कोटि जीवों को तारा, गौतम आदि का मद निवारा।
श्रेणिक भी वीर से तीर्थेश बनेंगे॥ वीर महावीर..॥3॥

'गुप्तिनंदी' वीर कथा को सुनाये, वीर का संदेश देश–देश में बताये॥
वीर कथा सुनके हम भी वीर बनेंगे॥ वीर महावीर..॥4॥

(199) कथा गीत

इक चला शिकारी–2, पुरुरवा शिकारी..
तीर कमान हाथ में ताने, चला शिकारी–पुरुरवा।

अति विकराल भयंकर काया, उसमें ही यमराज समाया॥
गिद्ध पंख का मुकुट लगाया, शेर चर्म से देह सजाया।
मानव मुण्ड गले में पहना, पशु हड्डी का धारे गहना॥
पत्नि भी उसकी ही छाया, नाम कालिका आगम गाया।
बड़ा ही क्रूर शिकारी... इक चला शिकारी..॥1॥

जंगल जिससे थर–थर काँपे, हाथी भागे हरिण विलापे।
जो भी उसके सामने आये, जिन्दा वापिस जा नहीं पाये॥

इक दिन वन में घूम रहा था, शेर शिकारी खोज रहा था।
तीन दिनों का भूखा-प्यासा, भोजन की नहीं दिखती आशा॥
बना दुर्दांत शिकारी... पुरुरवा शिकारी...॥2॥

वन में देखे इक मुनिरायी, उन पर ताने तीर कसाई।
तभी कालिका सन्मुख आयी, बोली ये वनदेव गुसाई॥
पुरुरवा बोला ना छोडूँ, इसको खाऊँ खून निचोडूँ।
वो बोली ये देव हमारे, इनको तुम मत मारो प्यारे॥
तनिक नहिं सुने शिकारी, इक चला शिकारी...॥3॥

कहे भीलनी सुन अज्ञानी, क्यों करता है हठ अभिमानी।
गर ये रुष्ट हुए ऐ मानी ! नहीं बचेगा कोई प्राणी॥
चाहे तू मुझको ही खाले, लेकिन ये संसार बचाले।
ये जिस पर किरपा बरसाते, उसके सब संकट कट जाते।
डरा अब दुष्ट शिकारी, पुरुरवा शिकारी...॥4॥

नग्न देव की कैसी माया, पशुओं ने भी वैर भुलाया।
गाय शेरनी संग-संग खेले, सर्प मोर के संग-संग खेले॥
हम भी इनके दर्श करेंगे, दर्शन से सब पाप कटेंगे।
दोनों ने गुरु दर्शन पाये, अपने सारे पाप नशाये।
पुरुरवा शिकारी, इक चला शिकारी...॥5॥

गुरु ने सम्यग् मार्ग दिखाया, धर्म अहिंसा पाठ पढ़ाया।
दोनों ने अणुव्रत स्वीकारा, पापारंभ तजा अब सारा॥
उसके फल से देव बने वो, आगे प्रभु महावीर बने वो।
हम भी जीव दया को धारें, मांसाहार तजे अब सारे॥
हो शाकाहारी, नहिं बने शिकारी...॥6॥

(200) चंदन बाला (गीताजंलि)

1. चंदनबाला–चंदनबाला ऽ, महासती चंदनबाला ऽऽ
रानि सुभद्रा की सुकुमारी, चेटक नृप की राजदुलारी।
वैशाली की राजकुमारी, चंदनबाला जन–मनहारी॥
दस भाई की प्यारी बहना, छह बहनों की छोटी बहना।
त्रिशला दी सम वो अति सुन्दर, विश्व सुन्दरी वो अति सुन्दर।
गयी वो गुरुकुल शाला, महासती चंदनबाला...॥1॥

2. वीर प्रभु की छोटी मौसी, बनी उन्हीं की शिष्या मौसी।
उनको ही आदर्श बनाया, उन सम ब्रह्मचर्य अपनाया॥
सखियों के संग खेल रही थी, वन में झूला झूल रही थी।
वहाँ एक विद्याधर आये, वो चंदन को हर ले जाये॥
बिलखती चंदनबाला, महासती चंदनबाला...॥2॥

3. नर पिशाच से भिड़ी चंदना, पूरी कोशिश करे चंदना।
लेकिन अबला बल से हारी, मूर्च्छित हो गयी वो बेचारी॥
तभी दुष्ट की पत्नि आयी, दुष्ट पति पर वो चिल्लायी।
एक डांट से दुष्ट डरा अब, वन में चंदन छोड़ भगा अब॥
पड़ी वन चंदनबाला, महासती चंदनबाला...॥3॥

4. वन में भील भयंकर आया, चंदन का मन अब घबराया।
णमोकार वो जपे बिचारी, महामंत्र की शक्ति भारी॥
मंत्र जाप से भील डरा अब, माँ को चन्दन सौंपे वो तब।
यह वनदेवी है माँ बोली, हाथ लगा ना इसे तम्बोली॥
शांत हुई चंदनबाला, महासती चंदनबाला...॥4॥

5. पर पापी का मन ना माना, चंदन बेचूँ मन में ठाना।
चंदन को कौशाम्बी लाया, उसे दास बाजार बिठाया॥
अब सबकी दृष्टि चंदन पर, काम धनुष बस सुन्दर तन पर।
चंदन यहाँ बहुत घबराये, पल-पल वीर प्रभु को ध्याये॥
रोये वो भोली बाला, महासती चंदनबाला...॥5॥

6. शुरू हुई नीलामी उसकी, सबसे ऊँची बोली उसकी।
हे वीरा ! अब मुझे बचालो, दुष्टों के घर अब ना डालो॥
वृषभदत्त नर पुंगव आया, सबसे ऊँचा दाम लगाया।
मानो वीरा ने पहुँचाया, उसने सती का शील बचाया॥
अचंभित चंदनबाला, महासती चंदनबाला...॥6॥

7. रथ में चढ़ या भागे चंदन, आशंकित उसका अंतर्मन।
बेटी तनिक नहीं घबराओ, निर्भय हो रथ में आ जाओ॥
बेटी शब्द सुने जब चंदन, भीग गया आँसू से तन-मन।
धर्म पिता की पायी छाया, उसने प्रभु को शीश झुकाया॥
हँसी अब चंदनबाला, महासती चंदनबाला...॥7॥

8. सोचे माता-पिता मिले अब, दुःख संकट मिट गये सभी अब।
पर वह सुख क्षण भर रह पाया, मिली मात में ईर्ष्या माया॥
पिता पुत्री मन निर्विकार था, भद्रा के मन में विकार था।
वो बस ईर्ष्या में जलती थी, उसको बस चंदन खलती थी॥
न जाने चंदनबाला, महासती चंदनबाला...॥8॥

9. वृषक सेठ इक दिन घर आये, भद्रा को आवाज लगाये।
चंदन घट में जलभर लाये, पूज्य पिता के चरण धुलाये॥

बिखरे बाल पिता के आगे, लहरा कर चरणों में लागे।
पिता प्रेम से बाल उठाये, बेटी के सिर वे पहुँचाये॥
खिली तब चंदनबाला, महासती चंदनबाला...॥9॥

10. वहाँ अचानक भद्रा आये, उसका शक पक्का हो जाये।
वो चंदन का सिर मुंडवाये, आभूषण श्रृंगार छुड़ाये॥
बेड़ी हथकड़िया पहनाये, कारागृह में वो डलवाये।
उल्टे झूठे दोष लगाये, जी भरकर वो उसे रूलाये॥
रोये तब चंदनबाला, महासती चंदनबाला...॥10॥

11. कारागृह में रोये चंदन, हुआ उसे तब आत्म प्रबोधन।
यह तो तेरा बीता कल है, पूर्व कर्म का यह प्रतिफल है॥
रोकर काटे नहीं कटेंगे, दोष द्वेष को भड़का देंगे।
अपना दोष किसी को ना दे, चल उठ समता भाव जगा ले॥
शांत अब चंदनबाला, महासती चंदनबाला...॥11॥

12. माता यह ममता की मूरत, मुझे न छोड़ा किसी भी सूरत।
घर से मुझको नहीं निकाला, चिंतन का अवसर दे डाला॥
जो कुछ होता अच्छा होता, सदा बुरा हर्गिज ना होता।
अब मैं अपने प्रभु को ध्याऊँ, अपनी आतम शक्ति जगाऊँ॥
ध्यानमय चंदनबाला, महासती चंदनबाला...॥12॥

13. कोदो भात मिले खाने को, उड़द बाकले उबले बस वो।
मिट्टी का इक थाल सकोरा, उसमें खाना मिलता थोरा॥
ग्रास गले ना निगला जाये, शांत चंदना ग्रास उठाये।
वीरा छह महीने से भूखे, शब्द सुने कानों से रूखे॥
हाथ से गिरा निवाला, महासती चंदनबाला...॥13॥

14. वीरा अब कौशाम्बी आये, सुन चंदनबाला हर्षाये।
महावीर का ध्यान लगाये, अन्तर्मन से उन्हें बुलाये॥
आओ जिनवर मेरे दर पर, तुम्हें दान दूँगी मैं जी भर।
कोलाहल अब बढ़ता जाये, इसी ओर वीरा अब आये॥
उठे अब चंदनबाला, महासती चंदनबाला॥14॥

15. एक पैर देहली के अन्दर, और दूसरा घर से बाहर।
मुंडा शीश आँखों में पानी, कपड़े कहते दुखद कहानी॥
हाथों में हथकड़ी के छाले, पैरों में बेड़ी के छाले।
चंदन प्रभु को टेर लगाये, पडगाहन का मंत्र सुनाये॥
वीर को देखे बाला, महासती चंदनबाला॥15॥

16. चंदन निकट वीर अब आये, हर्षित मुख लख वापिस जायें।
चंदन ने फिर रूदन मचाया, रोते हुए उन्हें पड़गाया॥
आर्त्तनाद सुन वीरा आये, चंदन आगे बढ़ पड़गाये।
टूट गये चंदन के बंधन, बड़े केश तन में आकर्षण॥
प्रफुल्लित चंदनबाला, महासती चंदनबाला॥16॥

17. स्वर्ण पात्र बन गया सकोरा, उसमें षट्रस व्यंजन पूरा।
चंदन ने आहार कराया, पंचाश्चर्य परम यश पाया॥
जग बंधन अब उसे न भाये, वो प्रभुवर के पीछे जाये।
वीर बने जब केवलज्ञानी, चन्दन बनी आर्यिका गणिनी।
'गुप्ति' का गीत निराला, महासती चन्दन बाला॥

***

(201) सोलहकारण कीर्तन

जय तीर्थंकर भगवान की, जय तीर्थंकर भगवान की।
जय हो सोलहकारण जैसे हो ऽऽऽ–2 पावन पर्व प्रधान की॥ जय...

सोलहकारण के कारण भव, का कारण कट जाता है।
सोलहकारण से कंकर भी, तीर्थंकर बन जाता है॥
सोलहकारण में शक्ति है हो ऽऽऽ–2 तीर्थंकर पद दान की॥ जय...

सोलहकारण के सोलह दिन, जिनमत के सोलह श्रृंगार।
इन सोलह श्रृंगारों से जो, सजता उसका बेड़ापार॥
इन्हीं भावनाओं से जलती हो ऽऽऽ–2 ज्योति केवलज्ञान की। जय...

आओ हम बहती गंगा में, डुबकी आज लगायेंगे।
सोलहकारण के प्रवचन सुन, तीर्थंकर गुण गायेंगे॥
भक्ति से भगवन बनने की हो ऽऽऽ–2, सुक्ति ये उत्थान की॥ जय...

(202) श्री पार्श्व कथा सत्संग महोत्सव

जय पार्श्वनाथ भगवान की, जय–जय हो पारसनाथ की।
जय हो चिंता हरने वाले, चिंतामणी भगवान की॥

चिंतामणी पारस प्रभु सबकी, चिंता दूर भगाते हैं।
इस कारण ये भोले बाबा, चिंतामणी कहलाते हैं॥
चिंतामणि पारस प्रभु तुममें, प्रीति हर इंसान की।
जय पार्श्वनाथ भगवान की...

उपसर्गों में प्रभुवर कैसे, क्षमा रखी ये समझाओ।
कष्टों में भी हँसकर रहना, आकर आप सिखा जाओ॥
क्षमा वीर का आभूषण है, शिक्षा ये भगवान की।
जय पार्श्वनाथ भगवान की...

पारस का रस अमृत पीकर, भक्त अमर हो जाते हैं।
इस हित पार्श्वकथा सुनने हम, दौड़े-दौड़े आते हैं॥
पार्श्व कथा में बड़ी शक्ति है, मनवांछित फलदान की॥
जय पार्श्वनाथ भगवान की...

(203) श्री महावीर कथा सत्संग-महोत्सव

(तर्ज : ये नवग्रह शांति विधान है...)

ये महाकथा महावीर की, ये महाकथा महावीर की।
वर्तमान के शासननायक हो ऽऽऽ-2, वर्धमान अतिवीर की॥ ये...

त्रिशला माँ ने एक शलाका, महापुरुष महावीर जना।
जैन धर्म का रथ आगे कर, सिद्धारथ सुत सिद्ध बना॥
भवसागर से पार करे ये, कथा भवोदधि तीर की॥ ये...

हिंसा के ताण्डव में प्रभु ने, शंख अहिंसा का फूँका।
इंद्रभूति सा मानी मानव, आकर उनके चरण झुका॥
मुक्तिद्वार खुलवाने वाली, चाबी ये तकदीर की॥ ये...

महावीर की महाकथा सुन, महापुरुष बन जायेंगे।
गुप्तिनंदी गुरु गौतम गणधर बनकर कथा सुनायेंगे॥
महकेगी जीवन में सबके, खुश्बू ज्ञान समीर की॥ ये...

(204) जन्म कल्याणक गीत

लिया वीर अवतार, जय-जयकार-3
त्रिशला नंदकुमार - जय-जयकार-3

त्रिशला माँ के भाग्य जगे थे, सिद्धारथ घर वाद्य बजे थे।
छाया हर्ष अपार, जय-जयकार-3॥1॥

चैत सुदी तेरस का दिन था, वीर प्रभु ने जन्म लिया था।
कुण्डलपुर अवतार, जय-जयकार-3॥2॥

शचिपति का आसन कम्पाया, ऐरावत सुर सेना लाया।
आया प्रभु के द्वार, जय-जयकार-3॥3॥

तुम्हें खुशी है हमें खुशी है, हमें खुशी है आज खुशी है।
खुशियाँ अपरम्पार, जय-जयकार-3॥4॥

'गुप्तिनंदी' प्रभु कथा सुनाये, वीरा का संदेश बताये।
पावे शिवपुर द्वार, जय-जयकार-3॥5॥

(205) गर्भ कल्याणक स्तुति
(गीता छंद)

(इंद्र द्वारा भगवान के माता-पिता की स्तुति)

हे जनक जननी माँ तुम्हारी, शचीपति सेवा करे।
तू माँ बनी तीर्थेश की, सारा जगत पूजा करे॥

नारी का भव है आखिरी, माँ पुण्य तेरे पास है।
स्त्री बने ना अब कभी, ऐसे गुरु के भाष्य हैं॥

पायेंगी माँ निश्चय ही मुक्ति, कह रही माँ शारदे।
करते हैं माँ भक्ति तेरी, माँ तू हमें भी तारदे॥

मुनि को दिया है दान जो, अभिषेक प्रभुवर का किया।
उस पुण्य से ही आज माँ, प्रभु को गरभ धारण किया॥

प्रभु के जन्म दाता जनक, जग पूजता तुमको सदा।
अभिषेक व आहार से, अवसर मिला ये सौख्यदा॥

जो नित्य जिन अभिषेक कर, शिशुवत मुनि को दान दे।
नहीं गर्भपात करे कभी, हर जीव को सम्मान दे॥

वे ही जनक जननी बने, त्रिभुवन पिता तीर्थेश के।
दो-तीन भव में आप भी, जायेंगे मोक्ष प्रदेश में॥

गुरुदेव भक्ति

(206)

(तर्ज–माइन–माइन...)

केशलोंच करते हैं गुरुवर, प्रभु का पथ अपनायें।
मुनि बने बिन मुक्ति न मिलती, जैनाचार्य बतायें॥
बोलो तीर्थंकर की जय, बोलो जिन गुरुओं की जय।
जय गुरुवर, जय गुरुवर, जय हो, जय हो गुरुवर।
गुरुवर के चरणों में नमन, ऋषिवर के चरणों में नमन॥

1. दो तीन या चार मास में, केशलोंच गुरु करते।
केशलोंच तो मूलगुण है, इसका पालन करते॥
केशलोंच के दिन गुरुवर ये, हो हो हो (2)
ना आहार को जायें॥ केशलोंच....

2. पुण्यवान और वीर पुरुष ही, केशलोंच कर पाये।
वीतराग विज्ञान यही है, समयसार कहलाये॥
भक्त देखकर आँसु बहाये, हो हो हो (2)
गुरुवर तो मुस्काये ॥ केशलोंच....

3. तीर्थंकर भी पंचमुष्टि में अपने केश उखाड़े।
मुनि आर्यिका घास समझ कर अपने केश उखाड़ें॥
कर्म क्लेश विनशाने गुरुवर, हो हो हो (2)
महाव्रती बन जाय॥ केशलोंच....

4. केशलोंच होता है पहले, जब–जब होती दीक्षा।
मुनि आर्यिका ऐलक क्षुल्लक, और क्षुल्लिका दीक्षा॥
'आस्था' से हम सब गुरुओं को, हो हो हो (2)
अपना शीश झुकायें॥ केशलोंच....

(207)

(तर्ज–म्हारा हिवड़ा में नाचे मोर...)

म्हारी कुटिया में आये आज, गुरु गुप्तिनंदी।
सब भक्त बुलाये आज, आओ गुप्तिनंदी॥
अत्रो–अत्रो तिष्ठो–तिष्ठो, ठहरो गुप्तिनंदी॥ म्हारी कुटिया....

1. गुरुवर को हमने पड़गाया, शुद्धि कह घर में ले आये–2
   हो हो, आ आ आ–2
   उच्चासन पे बैठें गुरुवर, हम पैर धुला कर हर्षाये॥
   पूजा करके, शीश झुकायें, जय–जय गुप्तिनंदी॥ म्हारी...
2. घर द्वार सजाया फूलों से, रांगोली से ये चौक सजा–2
   हो हो, आ आ आ–2
   घृत दीप जलाये तोरण संग, बहु नृत्य करें हम वाद्य बजा॥
   बड़े भाग्य से, गुरु पधारें, जय–जय गुप्तिनंदी॥ म्हारी...
3. जिस घर में गुरु के चरण पढ़े, वो तीर्थ स्वर्ग बन जाता है–2
   हो हो, आ आ आ–2
   देता जो गुरुवर को आहार, वो जीव नर्क ना जाता है।
   'आस्था' से हम, गुरु गुण गायें, जय–जय गुप्तिनंदी॥ म्हारी...

(208) (तर्ज – प्रभु रथ पे हुये सवार नगाड़ा बाज रहा...)

गुरु गुप्ति करें विहार, नगाड़ा बाज रहा।
गुरु करते धर्म प्रचार, नगाड़ा बाज रहा॥ गुरु गुप्ति...

1. गुरु तीर्थों के दर्शन पाये, अभिषेक देख मन हर्षाये–2
   सब बोलें जय–जयकार–2, नगाड़ा बाज रहा॥ गुरु गुप्ति..

2. गुरु संत समागम को पाया, संघों से मिल मन हर्षाया–2
सब में वात्सल्य अपार–2, नगाड़ा बाज रहा॥ गुरु गुप्ति..

3. गुरु श्रवणबेलगोला जायें, महासंघ मिले सब हर्षायें–2
था सबमें प्रेम अपार–2, नगाड़ा बाज रहा॥ गुरु गुप्ति..

4. बाहुबली का अभिषेक हुआ, इसमें सारा जग एक हुआ–2
बरसे पंचामृत धार, नगाड़ा बाज रहा॥ गुरु गुप्ति..

5. गुरु नगर–ग्राम में जाते हैं, सब में संस्कार जगाते हैं–2
जगे 'आस्था' भाव अपार, नगाड़ा बाज रहा॥ गुरु गुप्ति..

(209) (तर्ज – जिनके–जिनके काम बनाये...)

गुप्तिनंदी गुरुदेव तुम्हारी–2, महिमा अपरम्पार है।
वंदन हजार है, वंदन हजार है–2

1. तेरी कलम चले ऐसी, लगती जादूगर जैसी।
हर शब्दों में ज्ञान भरा, जिन आगम उसमें उतरा॥
प्रवचन कथा सुना गुरुवर–2, देते नित संस्कार हैं॥ वंदन..

2. धर्म की ज्योत जलाते हैं, आर्ष मार्ग बतलाते हैं।
सत्य मार्ग पे अटल रहे, चाहे कोई कुछ भी कहे॥
प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी–2, करते नित उपकार हैं॥ वंदन..

3. पौधे नये लगाते हो, फूल खिलाकर जाते हो।
तुम सूरज बनकर गुरुवर, हर घर को चमकाते हो।।
'आस्था' से जो तुमको ध्यायें–2 उसका बेड़ा पार है॥ वंदन..

(210) (तर्ज–म्हारा हिवड़ा नाचे मोर...)

हो जिनवाणी मैया, हमें प्रज्ञा देना।
मार्ग दिखाना, पार लगाना, मोक्ष महल पहुँचाना॥ हो जिनवाणी..

1. दसलक्षण धर्म बताता है, जिनवाणी से ये जाना है।–2 हो–हो–आ–
   जिन–जिन ने धर्म को जाना है, पूजें उसको ये जमाना है॥
   धर्म को पाना, मोक्ष खजाना, हमने ये है जाना। हो–
2. ये क्रोध मान माया व लोभ, इन सब में झूठ सदा रहता।–2 हो–हो–आ–
   ये पाप जहाँ पे रहते हैं, वहाँ धर्म कदापि नहीं रहता।
   छोड़ो कषायें, गुण अपनाये, सत्य को ही अपनाना॥ हो–
3. संयम तप त्याग आकिंचन ये, निज आतम का श्रृंगार करें।–2 हो–हो–आ–
   जो ब्रह्मचर्य को नित पाले, त्रिलोक पूज्य पद प्राप्त करें॥
   'आस्था' धारे, खुद को निखारे, पाना धर्म खजाना। हो–

(211) (तर्ज–आज मेरे यार की शादी...)

ये पिच्छी बड़े भाग्य से मिलती है, बड़े सौभाग्य से मिलती है।
जिसको भी मिलती है, उसकी तकदीर बदलती है॥ आज...
आज पिच्छी परिवर्तन है–2, भव्य पिच्छी परिवर्तन है।
पिच्छी के संघ भव्य जनों का मन परिवर्तन है॥ आज...

1. पिच्छी ये कोमल होती, मयुर पंखों की होती।
   सभी की रक्षा करती आ हा,
   गुरु के हाथ में रहती॥ हो–हो–
   पिच्छी ही पहचान बनाती, मुनि का भूषण है॥ आज...
2. होती है जब–जब दीक्षा, अणुव्रत महाव्रत दीक्षा।
   दया करुणा दर्शाती आ हा,

सभी के प्राण बचाती आ हा।। हो–हो–
मुनिवर के हाथों में पिच्छी, लगती सुन्दर है।। आज...

3. पिच्छी है कितनी सुन्दर, रंग है इसमें सुन्दर।
पिच्छी जब सर पे लगती आ हा,
हमारी किस्मत जगती आ हा।। हो–हो–
पिच्छी हाथ में लेकर गुरुवर, करते दर्शन हैं।। आज...

4. पिच्छी में गुण हैं इतने, गिनाऊँ मैं भी कितने।
पिच्छी बिन गुरु ना जाये आ हा,
पिच्छी ये 'आस्था' जगायें आ हा।। हो–हो–
पिच्छी लेकर मुनिवर पाते, ज्ञान समन्दर हैं।। आज...

(212) (तर्ज – मुरली वाले एक सवाल)

हे वात्सल्यमयी माता, क्यों बच्चों को मार रही।
कौन कहेगा तुझको माँ, बच्चों बिन परिवार नहीं।।
किसको प्यार करेगी तू–2, तेरे दिल में प्यार नहीं।
भोली भाली हे मैया ! बच्चों बिन संसार नहीं।। हे वात्सल्यमयी माता...

1. मुझे जन्म तू लेने दे, दुनियाँ को मैं देखुँगी।
तेरी ऊँगली पकड़ मैया, आँचल तेरा ओढूँगी।।
हे ममता की मूरत माँ–2, क्यों तू मुझको मार रही। हे वात्सल्यमयी...

2. भैया तो कुल दीपक है, मैं दो कुल की ज्योति माँ।
कन्या मंगल होती है, कन्या घर की देवी माँ।।
भैया के संग पढ़ लूँगी–2, माँगु कुछ उपहार नहीं। हे वात्सल्यमयी..

3. बहना घर की लक्ष्मी है, मुझको राखी बाँधेगी।
हर त्योहार में ये बहना, छम–छम घर में नाचेगी।।
लक्ष्मी की हत्यारिन है तू–2, खुद लक्ष्मी धिक्कार रही। हे वात्सल्यमयी..

4. तेरे संस्कारों को पा, मुनि आर्यिका बन जाये।
सैनिक अफसर बन माता, देश की सेवा कर जाये॥
सन्तानों की हत्या कर-2, तू ईश्वर को मार रही। हे वात्सल्यमयी..

5. बेटा-बेटी इक जैसे, भेदभाव को छोड़ो माँ।
मुझको अपना खून समझ, मुझसे मुखड़ा मोड़ो ना॥
ना कठोर बन हे मैया-2, क्यों ममता को मार रही। हे वात्सल्यमयी..

6. एक अक्षर का नाम है माँ, जहाँ चंद्र पे बिन्दु है।
तेरे संस्कारों को पा, तर जायें भव सिंधु से॥
सिद्ध शिला तक पहुँचाना-2, मैया तेरा नाम सही। हे वात्सल्यमयी..

(213) वीतराग स्तोत्र

न कच्चा है न बच्चा है, मेरा भगवान सच्चा है।
बुराई से भरे जग में, इसी का नाम अच्छा है॥
न रागी है न द्वेषी, न मोही न क्लेशी।
मेरा भगवान, हितोपदेशी॥ न कच्चा...
ना मानी है ना क्रोधी, न मायावी न लोभी।
मेरा भगवान, परम योगी॥ न कच्चा...
ना बंगला है गाडी, ना घर है ना घरवाली।
इसी की कृपा से हो खुशहाली॥ ना कच्चा...
ना कपड़ा है ना लफड़ा, ना ईर्ष्या है ना झगड़ा।
मेरे प्रभु का हर काम तगड़ा॥ ना कच्चा...
ना पतला है ना मोटा, ना बड़ा है ना छोटा।
मेरा भगवान, नहीं खोटा॥ ना कच्चा...
ना खाता है ना पीता, ना मरता है ना जीता।
ना आता है न जाता, मेरे परम पिता॥ ना कच्चा...
न कच्चा है न बच्चा है, मेरा भगवान सच्चा है।
बुराई से भरे जग में, इसी का नाम अच्छा है॥

(214) निर्ग्रंथ दशक
(नरेन्द्र छंद)

वीतरागता की गंगा का, कलकल स्वर जिनमें गूँजे।
ऐसी नग्न दिगम्बर मुद्रा, तीन लोक जिनको पूँजे।।
महाव्रतों की शुचि किरणों से, सुन्दर जिनका आनन है।
उन मुनिराजों के चरणों में, मेरा शत-शत वंदन है।।1।।

विषयानल पर शील कलश से, शांतिधारा जो करते।
ज्ञान-ध्यान में लीन महामुनि, निश्चय रत्नत्रय वरते।।
क्रोध-मान-मायादिक् में भी जिनका भाव अकिंचन है।
उन मुनिराजों....।।2।।

दीक्षित होकर जो निज गुरु से, गुणस्थान सप्तम वरते।
ज्ञान-ध्यान में लीन महामुनि, निश्चय रत्नत्रय वरते।।
क्रोध-मान-मायादिक् में भी, जिनका भाव अंकिचन है।।
उन मुनिराजों....।।3।।

पंचमहाव्रत पंचसमिति वा, तीन गुप्ति के पालक हैं।
चर्चा पूर्व कठिन चर्या से, जो जिनमत-प्रतिपादक हैं।।
पंचेन्द्रिय विषयों का जिन पर, रंचमात्र ना बंधन है।
उन मुनिराजों....।।4।।

चार-तीन या दो महिने में, केशलोंच जो करते हैं।
षट् आवश्यक पालन कर नित, नग्न स्वरूप विचरते हैं।
छ्यालिस दोष रहित शुचि जिनका, एक समय का भोजन है।
उन मुनिराजों....।।5।।

दंतधवन से रहित महामुनि, शयन भूमि पर करते हैं।
स्नान कभी ना करते फिर भी, सबसे सुन्दर लगते हैं।।

जिनमें ऐसे मूलगणों संग, उत्तम-गुण का संगम है।
उन मुनिराजों....॥6॥

सर्दी-गर्मी हो या वर्षा, बाईस परिषह सहते हैं।
ग्राम नगर से दूर वनों में, शांत निराकुल रहते हैं॥
उपसर्गों के आने पर भी, मेरु समान अकंपन हैं।
उन मुनिराजों....॥7॥

क्षपक श्रेणी शुद्धोपयोग का, परमानंद सुहाना है।
अक्ष-अगोचर उसका वर्णन, उनसे ही हो पाना है॥
जिनकी ऐसी ध्यान अवस्था, अतुल अलौकिक अनुपम है।
उन मुनिराजों....॥8॥

शुक्ल ध्यान की ज्योत जगा फिर, निर्विकल्प हो जाते हैं।
करके तब गुण श्रेणी निर्जरा, घाति कर्म विनशाते हैं॥
तब ही केवलज्ञान लक्ष्मी वर, बने सयोगी भगवन हैं।
उन मुनिराजों....॥9॥

धन्य-धन्य वे महामुनीश्वर, धन्य-धन्य इनका जीवन।
धन्य-धन्य इनका गुण वैभव, धन्य-धन्य इनके चरणन॥
'चंद्रगुप्त' शाश्वत सुख पाने, मुनि पद ही अवलंबन हैं।
उन मुनिराजों....॥10॥

दोहा- मुक्ति पथिक बनकर चले, मुक्तिपुर की ओर।
कठिन साधना से वरा, भवसागर का छोर॥
'वंदे तद्गुण लब्धये, यही भाव सुखदाय।
हाथ जोड़कर मैं करूँ विनती भो मुनिराय॥

***

(215) (तर्ज – फूलों सा चेहरा तेरा....)

पर्वों में पर्व बढ़ा, मुनियों का ये पर्व है।–2
समता में जो रहे, ना किसी कुछ कहे, हमको सदा गर्व है॥ पर्वों में पर्व....

1. गुरूवर अकंपन उज्जैन आये, राजा के संग मंत्री दर्शन को जायें–2
   मुनि विरोधी चारों ही मंत्री, राजा के कारण दर्शन को जाये॥
   हाथ जोड़ते हैं, सारे मुनियों को, कोई भी उनसे बात ना करें।
   लौट आये राजा, मंत्रियों के संग, राजा के कानों को मंत्री भरे॥
   मुनिवर ये अज्ञानी है, कितना इन्हें गर्व है॥ समता...
2. छोटे मुनि से चारों ही मंत्री, राह में वाद–विवाद करें।–2
   हार गये वे चारों ही मंत्री, रात्रि में मुनि पे प्रहार करें॥
   क्षेत्रपाल आयें, मुनि को बचाये, चारों ही मंत्री को कीलित करें।
   राजा भी आये, सजा सुनाये, चारों को राज्य से बाहर करे॥
   पापी ये दुष्ट बढ़े, कितना इन्हें दर्प है॥ समता...
3. हस्तिनापुर में गुरुवर पधारे, चारों ही मंत्री वहाँ आ गये।–2
   सात दिवस का राज्य वो पाकर, उपसर्ग करने वहाँ आ गये॥
   रक्षा करने आये, विष्णु मुनिवर, उपसर्ग गुरूओं का दूर करें।
   ध्यान लगायें, विष्णु मुनीश्वर, आठों ही कर्मों को नष्ट करें॥
   'आस्था' से वंदन करें, ये ही मुनि पर्व है॥ समता...

(216) (तर्ज–किसी के काम जो आये...)

जो आया है वो जायेगा, नहीं कुछ साथ जायेगा।
इकट्ठा जो किया तूने, यहीं सब छूट जायेगा॥

न सोना साथ जायेगा, न चाँदी साथ जायेगी।
न बंगला साथ जायेगा, न गाड़ी साथ जायेगी॥
ये सब सामान मिट्टी का, तुझे इक दिन रुलायेगा॥ इकट्ठा....
न बेटा साथ जायेगा, न बेटी साथ जायेगी।
जो पत्नी हैं तुझे प्यारी, वो आँगन तक ही जायेगी॥
जो बेटा लाडला तुझको, वही तुझको जलायेगा॥ इकट्ठा....
ये जीवन चार दिन का है, उसे तू प्रेम से जीना।
लड़ाई और झगड़ों ने, सभी का चैन है छीना॥
तू कर उपकार सब पर ही, यही तो साथ जायेगा॥ इकट्ठा....
ये तन घर हैं किराये का, किरायेदार तू पगले।
नियम संयम ग्रहण करके, किराया आज तू भरले॥
किराया न भरा तो तू, नरक की मार खायेगा॥ इकट्ठा...
बहुत पैसा कमाया हैं, कमाई पुण्य की करले।
अनादि से करम बाँधे, धरम का ध्यान अब करले॥
ये धन तो धर्म का फल हैं, धरम करके ही पायेगा॥ इकट्ठा....
तू मेहमाँ बनके आया हैं, विदा इक दिन तो होना है।
मरण को ना सुधारा तो, अनेकों जन्म रोना है॥
समाधिमय मरण ही तो, तुझे भव से तिरायेगा॥ इकट्ठा....

(217) (तर्ज–माता तु दया करके.. 2. भगवान मेरी...)

प्रभुवर इतना वर दो, मेरा मरण समाधि हो।
ना आधि उपाधि हो, ना ही कोई व्याधि हो॥
जब तक ये सांस चले, हमको जिनधर्म मिले।
जब अंत समय आये, हमको गुरू चरण मिले॥
गुरू का संबोधन पा, हम पूर्ण विरागी हो॥ प्रभुवर...

संकल्प विकल्पों का, मैं त्याग करूँ मन से।
ना राग करूँ तन से, ना द्वेष किसी जन से॥
धन दौलत परिग्रह का, नहीं लोभ कदापि हो॥ प्रभुवर...
ना भूख सतायें तब, ना प्यास सतायें तब।
भोजन का कीड़ा तन, सुदृढ़ बन जायें तब॥
यम नियम व्रतों में हम, किंचित न प्रमादी हो॥ प्रभुवर...
मुख पर प्रभु नाम बसे, मन में प्रभु ध्यान रहे।
सुनते-सुनते नवकार, यह प्राण प्रयाण करें॥
उस मृत्यु महोत्सव में, प्रभु धर्म ही साथी हो॥ प्रभुवर...
ना प्यास जनम की हो, ना आस मरण की हो।
ना चाह विषय की हो, ना भोग रमण की हो॥
ना कोई बीमारी हो, ना भाव विकारी हो॥ प्रभुवर...
हाथों में पीछी हो, ना मोह रहें जग से।
सब त्याग नियम धरके, हम माँगे क्षमा सबसे॥
इस विकट परीक्षा में प्रभु विजय हमारी हो॥ प्रभुवर...

(218)

ममता मूरत माँ तू कैसी ममता बाँटती है।
अपने आँचल में ही बच्चों को तू काटती हैं॥

सोचा था तू लोरी सुनाके मीठी नींद सुलायेगी।
पर नहीं सोचा था तू मुझको मौत की नींद सुलायेगी॥
तेरे इक अक्षर को सारी दुनियाँ चाहती है॥ अपने....
माँ तेरे इस नाम के ऊपर बनी हुई है सिद्धशिला।
सिद्धशिला तक पहुँचाती तू, संस्कारों का दूध पिला॥
तू ही बच्चों में भगवन का रूप ढालती है॥ अपने...

मैंने सोचा था तू मुझको ऊँगली पकड़ चलायेगी।
पर ना सोचा था तू, मुझ पर छूरी ब्लेड़ चलायेगी॥
बेटी हो तू जनम से पहले, बेटी को ही मारेगी।
फिर बेटों के हाथ में राखी, कौनसी बहना बाँधेगी॥
बेटी होकर तू बेटी का दुःख ना जानती है॥ अपने...

माँ मैंने सोचा था मैं, जब इस धरती पर आऊँगा।
सीमाओं पर सैनिक बनकर, देश पे मर मिट जाऊँगा॥
मुझको मार के तू इक सैनिक को मारती है॥ अपने...

माँ मैंने सोचा था जब मैं इस धरती पर आऊँगा।
तेरे संस्कारों को पाकर इक मुनिवर बन जाऊँगा॥
मुझको मारके तू इक मुनिवर को मारती है॥ अपने...

माँ मैंने सोचा था जब मैं इस धरती पर आऊँगा।
संस्कारों की घुट्टी पीकर तीर्थंकर बन जाऊँगा॥
मुझको मारके तू तीर्थंकर को मारती है॥ अपने...

माँ मैंने सोचा था जब मैं इस धरती पर आऊँगी।
झाँसी की रानी बन करके देश की लाज बचाऊँगी॥
मुझको मार तू वीरांगना को मारती है॥ अपने...

माँ मैंने सोचा था जब मैं इस धरती पर आऊँगी।
श्वेत साटिका धारण करके, आर्यिका बन जाऊँगी॥
मुझको मार तू आर्यिका को मारती है॥ अपने...

माँ तू तो बच्चों के कारण, अपना दूध बहाती है।
फिर क्यूं जनम से पहले, तू बच्चों का खून बहाती है॥
हे माँ ! तुझको तेरी ममता भी धिक्कारती है॥ अपने...

(219)

जो नारी तीर्थंकर प्रभु को, अगर जनम दे सकती है।
वो नारी अभिषेक प्रभु का, कैसे ना कर सकती है॥

आज काल की विडम्बना से, नारी के अधिकार गये।
अधिकारों के दाता प्रभु भी, अब तो मोक्ष सिधार गये॥
जो नारी चंदनबाला बन, प्रभु को पड़गा सकती है॥ वो नारी...

चौके में तो माँ बहने ही, भोजन शुद्ध बनाती है।
यदि अशुद्ध है तो वो कैसे, काया शुद्ध बताती है॥
सम्यक्त्वी बन नारी वेद का, छेदन जो कर सकती है॥ वो नारी...

व्यसनी नर अभिषेक करें, जब की उनकी आदत गंदी।
फिर भी शीलवती नारी पर, कैसे करदी पाबंदी॥
सफेद साड़ी धारण कर जो, महाव्रती बन सकती है॥ वो नारी...

खुद अशुद्ध है जो वो कैसे, वेदि शुद्धि करती है।
घटयात्रा में घट लेकर क्यूँ, तीर्थों का जल भरती है॥
जो नारी शचि बनकर प्रभु का, पहला दर्शन करती है॥ वो नारी...

अगर नारियाँ हैं अशुद्ध तो, घटयात्रा में पुरुष चले।
वरना उनको उनका पूरा, आगमोक्त अधिकार मिले॥
जो सुवर्ण सौभाग्यवती बन विधि विधान कर सकती है॥ वो नारी...

प्राचीन ग्रंथों का प्रमाण दो, कोई तो मुझको आकर।
जो मुझको झूठलादे उसका, बन जाऊँगा मैं चाकर॥
जो माता मरुदेवी त्रिशला, ऐरादेवी बनती है॥ वो नारी...

ओ माताओ जग जाओ, वरना सर्वस्व गँवा दोगी।
अभिषेक के जैसे आगे, दर्शन भी ना पाओगी॥
'चन्द्रगुप्त' कहता जो शचि बन, परभव मुक्ति वरती है॥ वो नारी..
जो नारी तीर्थंकर प्रभु को, अगर जनम दे सकती है।
वो नारी अभिषेक प्रभु का, कैसे ना कर सकती है॥
वो नारी अभिषेक प्रभु का, निश्चित ही कर सकती है॥

(220) (तर्ज – शंकर को नहला दो...)

दीक्षा दिवस मनाओ भक्तों, दीक्षा दिवस मनाओ–2
आया दीक्षा का त्योहार आया–2, मुनि दीक्षा का त्यौहार आया॥

1. कुंथु गुरु से मुनि दीक्षा लेकर, गुप्तिनंदी बने तुम–2
रोहतक नगर में मुनि दीक्षा ले, महाव्रती बने तुम।
22 जुलाई को गुरुवर ने, मुनिदीक्षा को पाया..
बने गुरुवर महाव्रती अब सबने शीश झुकाया– आया...

2. अरिहंत प्रभु को पिता बनाया, जिनवाणी मैया को माता–2
सर्व परिग्रह त्यागें गुरुवर, जन–जन गुरु को ध्याता॥
पिच्छी और कमण्डल जिनके, हरपल साथ में रहता।
जिनवाणी माता के सुत को, सारा जग है भजता॥
आया दीक्षा का त्यौहार आया– मुनि...

3. सरल स्वभावी ज्ञानी गुरु की, भक्ति में मनवा ये झूमे–2
जो तेरे उपदेश को मन में धारे, भव–भव में फिर वो ना घूमे॥
आर्ष मार्ग का दीप जलाया, सबको वही सिखाया।
भक्ति से 'आस्था' ने गुरु को, अपना शीश झुकाया॥
आया दीक्षा का त्यौहार आया– मुनि...

(221) (तर्ज–म्हारा हिवड़ा में नाचे मोर...)

आओ खेले हम सब आज, प्रभु के संग होली।
प्रभु के संग खेले आज, भक्ति की होली।।
भक्त ये आये, कलशा लाये, धार प्रभु पर डोली।।

1. नाना द्रव्यों से प्रभुवर का, हम सब मिलके अभिषेक करें–2 आ आ..
ये रंग–बिरंगे कलशे भर, नर–नारी जिन अभिषेक करें।।
भक्ति रचाने, पुण्य कमाने, आई भक्तों की टोली।। प्रभु...

2. ये सप्त रंगी अभिषेक महा, युग–युग से होता आया है–2 आ आ..
कर्मों की होली जलाने का, शुभ अवसर हमने पाया है।।
जिनवाणी गुरुवाणी कहती, खेलो प्रभु संग होली।। प्रभु...

3. गुरुवर गुप्तिनंदी जी का, हम सबको शुभ आशीष मिला।–2 आ आ..
इस धर्मतीर्थ पे आकर के, आदिप्रभु का अभिषेक मिला।।
इच्छापूरी सब हो जाती, भर जाती है झोली।। प्रभु...

4. ये गुरुवर जहाँ–कहाँ जाते, भक्तों को भक्ति सिखाते हैं।–2 आ आ..
दुःख संकट से तिरने गुरुवर, भक्ति का मार्ग दिखाते हैं।।
'आस्था' करते, वंदन करते, मन की अँखियाँ खोली।। प्रभु...

(222) (तर्ज–आज हमारे मन में... हम साथ–साथ हैं..)

भाग्योदय करवायें, गुरु गुप्तिनंदी।
जहाँ–जहाँ भी जायें, गुरु गुप्तिनंदी।।
जीवन सूत्र सिखायें, गुरु गुप्तिनंदी।
सबका भाग्य जगायें, गुरु गुप्तिनंदी।।

1. बालक हो या बालिका, सबका ही भाग्य जगे।–2
नर हो या नारियाँ, सबकी ही किस्मत जगे॥
आगम दीप जलायें–2, गुरु गुप्तिनंदी–2 सबका...

2. आदि प्रभु ने किया, संस्कार सब पुत्रों पे॥–2
श्रद्धान् उनपे करो, गुरुओं के सूत्रों पे॥
वो ही मार्ग बतायें–2, गुरु गुप्तिनंदी–2 सबका...

3. बालक गुरुवाणी सुन, बाल हटाते हैं जो॥–2
स्वस्तिक बनाते गुरु, बालक व्रती बनते वो॥
'आस्था' भाव जगायें–2, गुरु गुप्तिनंदी–2 सबका...

(223) (तर्ज–चपटी भरी चोखानी..)

जन्मे हैं गुरुवर गुप्तिनंदी जी, जन्म जयन्ति मनाओ रे, मनाओ रे।
आओ गुरुवर के चरणों में आओ रे। आओ–2..

1. एक अगस्त को गुरुवर जी जन्मे–2
सब मिलके खुशियाँ मनाओ रे, आओ रे, आओ गुरुवर के चरणों....

2. चौक पुराओ रंगोली डालो–2, तोरणद्वार बंधाओ रे
आओ गुरुवर के चरणों....

3. दीपक जलाओ पुष्प चढ़ाओ–2, गुरुवर की आरती गाओ रे..
आओ गुरुवर के चरणों....

4. पैर धुलाओ पूजा रचाओ–2, चरणों में चंदन लगाओ रे..
आओ गुरुवर के चरणों....

5. भक्ति रचाओ पुण्य कमाओ–2, गुरुवर का गुणगान गाओ रे
आओ गुरुवर के चरणों....

6. जन्म दिवस की देते बधाई–2, 'आस्था' से शीश झुकाओ रे
आओ गुरुवर के चरणों....

(224) (तर्ज–एक बार आओजी....)

दीक्षा दिवस मनावा आया, गुरुवर थारा द्वार पे। हो ओ हो–2...
थाने झुक–झुक करूँ मैं प्रणाम, गुरु जी माने पार करो..

1. कुंथुसागर गुरुवर जी से, दीक्षा ली है थाने।
   गुप्तिनंदी नाम है थारो, लागे प्यारो माने॥
   थांकी नजर उतारूँ गुरुराज... गुरुजी माने...
2. छोटी उम्र में मुनि बणग्या थे, लागे घणा ही आछा।
   मात बणाई जिनवाणी ने, शास्त्र घणा ही बाचा॥
   थे तो ज्ञान रा हो भंडार.. गुरुजी माने...
3. मूलगुण छत्तीस है थाके, भाई–बंधू होवे।
   ना सोवे ना सोने देवे, ना कभी रोने देवे॥
   थे देवो आनंद अपार.. गुरुजी माने...
4. रत्नत्रय है गहणो थारो, आतम रो श्रृंगार।
   गुप्ति समिति नाव है थारी, ले जावे भव पार॥
   आया 'आस्था' से, मैं तो थांके द्वार.. गुरुजी माने...

(225) (तर्ज–चूड़ी जो खनकी हाथ...)

दीक्षा जयन्ति आई आज है–2, करें गुरुवर का गुणगान।
जय गुप्तिनंदी.. करें गुरुवर.. जय...

1. भाई बंधु मात–पिता, सब स्वारथ के हैं साथी।
   वैरागी बनकर आये, गुरु चरण के अनुरागी॥
   मात–पिता को छोड़के–2, आये कुंथु गुरु के द्वार। जय गुप्तिनंदी...

2. कुंथु गुरु के पास गये, उनसे दीक्षा पाई है।
रोहतक नगरी गुरुवर की, दीक्षा भूमि कहाई है॥
बाईस जुलाई को गुरु–2, तुम बने हो श्री मुनिराज। जय गुप्तिनंदी...

3. महाव्रतों को पाया है, जग में नाम कमाया है।
अठारह बरस की आयु में, मुनिव्रत को अपनाया है॥
देख आपके रूप को–2, सारे गुरु बंधु हर्षाय। जय गुप्तिनंदी...

4. पंच महाव्रत को पाले, आठ बीस गुण को धारे।
गुरुवर मेरे मात–पिता, भाई–बंधु हैं सारे॥
'आस्था' रखे गुरुराज पे–2, आस्था को तिराओ सूरिराज॥
जय गुप्तिनंदी...

(226) (तर्ज – झीनी–झीनी...)

चौका मैंने लगाया, गुरुजी मेरे घर आओ..
गुरुजी मेरे घर आओ, गुरुजी मेरे घर आओ
स्वागत करने आया, गुरुजी मेरे घर आओ... चौका मैंने...

1. अत्रो–अत्रो कहके बुलाये, हाथ में मंगल कुंभ सजाये।
फैरी तीन लगाये... गुरुजी मेरे घर आओ....

2. रांगोली से चौक बनाये, तोरण बंधन द्वार लगाये।
दीप से घर को सजाये, गुरुजी मेरे घर आओ....

3. चंदन का पाटा मैं लगाऊँ, उसपे गुरुवर तुमको बिठाऊँ।
घर को स्वर्ग बनाओ... गुरुजी मेरे घर आओ....

4. पैर धुलाऊँ पूजा रचाऊँ, गंधोदक को शीश लगाऊँ।
आहार गुरु का कराऊँ, गुरुजी मेरे घर आओ....

5. धन्य दिवस धन्य भाग्य हमारा, नाचे देखों घर परिवारा।
'आस्था' से गुरु को बुलाये... गुरुजी मेरे घर आओ....

(227) (तर्ज–झुम–झुम ....)

मंगल कलशा लाओ, गुरु नगर पधारे।
नगर पधारे, गुरु नगर पधारे
खुशियाँ ही खुशियाँ छाई, गुरु नगर पधारे

1. श्रीफल लाओ गुरु को चढ़ाओ, गुरु के पैर धुलाओ।
   गुरु गुप्तिनंदी आये... गुरु नगर...मंगल कलशा..
2. मंगल दीप सजाकर लाये, गुरुवर की हम आरती गाये।
   गुरु को अर्घ चढ़ाये.... गुरु नगर..., मंगल कलशा...
3. दूध दही चंदन घिस लाओ, रंग–बिरंगे पुष्प चढ़ाओ
   जय–जयकार लगाओ.... गुरु नगर...मंगल कलशा..
4. झुमो गाओ भक्ति रचाओ, गुरु चरणों में शीश झुकाओ
   मंगलवाद्य बजाओ, गुरु नगर पधारे... मंगल कलशा..
5. सौम्य शांत प्रतिभा के धारी, गुरु मुद्रा है मंगलकारी।
   'आस्था' से गुण गाओ, गुरु नगर पधारे... मंगल कलशा..

(228) (तर्ज– अरे रे मेरी जान है राधा...)

चलो प्रभु पूजा करने, प्रभु की भक्ति करने–2
संकट हरेंगे सारे ही प्रभु–2

1. दुःखड़े मिटाये प्रभु चौबीसों महान।
   आओ करें नवग्रह शांति का विधान।।
   परमेष्ठी पाँचों का जपलो प्यारा–प्यारा नाम–2
   आया आया नवग्रहों की शांति का विधान.. चलो प्रभु पूजा..

2. दुःख में प्रभु को सदा याद है किया।
सुख में कभी भी प्रभु नाम ना लिया॥
सुख की घड़ी में यदि भजन किया–2,
दुःख नहीं पाये फिर तेरा जिया॥ चलो प्रभु पूजा...

4. गुप्तिनंदी गुरुवर करुणा धनी।
रचनायें जिनसे अनेकों बनी॥
नवग्रह शांति विधान की ध्वनि–2,
'आस्था' जगाये हर मन में घनी॥ चलो प्रभु पूजा...

(229) (तर्ज–श्याम तेरी बंसी...)

गुप्तिनंदी गुरुवर तुम्हारा बड़ा नाम।
आपने लिखे हैं कितने सुन्दर विधान॥
आओ भक्तों भक्ति से करलो ये विधान।
कष्ट हरे नवग्रहों की शांति का विधान॥ गुप्तिनंदी...

1. कुंथुसागर के शिष्य ये कहाये।
रोहतक नगरियां में मुनि वेष पायें॥
कनकनंदी गुरुवर से बने ज्ञानवान॥ आपने लिखे...

2. सुन्दर सी रचनायें गुरुवर बनायें।
पूजन भजन से सभी का मन लुभाये॥
सावधान करने लिखे हैं सावधान॥ आपने लिखे...

3. गुरुवर की वाणी में जिनवाणी छाये।
वाणी से जिनवाणी हमको सिखाये॥
श्री चरण में 'आस्था' श्री करती है प्रणाम॥ आपने लिखे...

(230) (तर्ज- बन्ना रे बागा में झुला गल्या..)

आओ जी गुप्तिनंदी जी आओ-2
म्हारा अंगणा में-2 म्हारा मनड़ा में, म्हारा हिवड़ा में,
आन पधारो, गुरु गुप्तिनंदी जी। आओ जी..

1. अंगणा में चंदन चौक पुराओ-2
   गुरुवर का-2, पैर धुलाओ, गुरु गुप्ति... आओ जी...
2. लावो जी जगमग दीपक लाओ-2
   गुरुवर की-2, आरती गाओ, गुरु गुप्तिनंदी की.. आओ जी...
3. गुरुवर रा चरणन् शीश झुकाओ-2
   गुरु चरणा में-2, झुमों नाचों...गुरु गुप्ति....
4. गुरुवर के चरणा फूल चढ़ाओ-2
   गुरु चरणा में-2, छम-छम नाचो॥ गुरु....आओ जी...
5. गुरुवर से ज्ञान की ज्योति पाओ-2
   'आस्था' से-2... शीश झुकाओ...गुरु चरणा में...आओ जी...

(231) (तर्ज-ओ साथी रे तेरे बिना भी क्या..)

ओ प्राणी रे, सेवा बिना भी क्या जीना,
सेवा में मिलता है, आनंद मन को जो, और कहीं ना मिले ना
सेवा बिना भी... ओ प्राणी रे...

1. अपने लिये तो जीते हैं, जो जग में सारे प्राणी-2
   पर के लिये जो आँसू बहाते हैं, बोले जो अमृत वाणी-2
   तन-मन से करते हैं, धन वे लगाते हैं, रोने ना देते कभी ना।
   सेवा बिना भी क्या जीना॥ ओ प्राणी..

2. दुःखियों के दुःख में जो साथ देते हैं, सबको को गले से लगाते।
कौन है अपना कौन पराया, सबसे ही प्यार निभाते॥
करते भला हैं जो, सच्ची कला है वो, करते दुःखी, वो कभी ना।
सेवा बिना भी क्या जीना॥ ओ प्राणी..

3. कृष्ण के जैसे सच्चे सखा बन, मित्र का साथ निभाते।
धन की मद में फूले कभी ना, हरपल सुख पहुँचाते॥
करते हैं जो सेवा, पाते हैं सुख मेवा, 'आस्था' ये टूटे कभी ना।
सेवा बिना भी क्या जीना॥ ओ प्राणी..

(232) (तर्ज--दिल जाने जिगर..)

हम भक्ति से भगवान का, अभिषेक करेंगे ।
न्हवन करेंगे, प्रभु का न्हवन करेंगे ॥

1. पंचामृत धारा लगती सुहानी ।
आर्ष परम्परा है ये पुरानी ॥
नर-नारी आयें, कलशा भर लायें ।
जिनवर पर पंचामृत धार करेंगे ॥ न्हवन ----

2. लगती प्रभु पे जलधार ऐसी ।
पद्म सरोवर से नदियाँ ये बहती ॥
आनंद आये, कलशा ढुराये।
प्रभु पे फल रस की हम धार करेंगे ॥ न्हवन ---

3. दूध में क्षीरोदधि ये समाया ।
क्षीर से प्रभु का तन ये भिगाया ॥

होता रहा है, होता रहेगा ।
क्षीर से प्रभु का, अभिषेक करेंगे ।। न्हवन---

4. दही धार प्रभु पे मोती सी चमके ।
सर्वौषधि से, तन-मन ये चमके ।।
पुष्प चढायें, आरती गायें ।
चंदन लगा के शीश, तिलक करेंगे ।। न्हवन---

5. होती है प्रभु पे जब शांतिधारा ।
विश्व में बहती है शांति की धारा ।।
भक्ति रचायें, अर्घ चढ़ायें ।
'आस्था' से प्रभु का, गुणगान करेंगे ।। न्हवन--

(233) (तर्ज-ये परदा उठादो..)

ये थाली सजालो, ओ ताली बजालो
आओ पूजा विधान रचाओ सभी ।
करें हम पूजा विधान ये मिलके सभी ।।

1. जहाँ-जहाँ भी गुरुवर जायें, धर्म की अलख जगायें ।
सूरि गुप्तिनंदी गुरुवर पूर्ण विधान करायें ।।-2
अपना भाग्य जगालो, गुरु का आशीष पालो ।।
आओ पूजा---ये थाली---

2. पंचामृत अभिषेक प्रभु का हर दिन गुरु कराते।
नर-नारी बालक-बालिका न्हवन करा हर्षाते ।।-2
शांतिधारा करालो, अपने पाप नशालो ।
आओ पूजा--ये थाली--

3. हर विधान के माध्यम से गुरु सबका भाग्य जगाते।
प्रभु भक्तों को प्रभु भक्ति की, सच्ची राह दिखाते॥–2
ये अर्घ चढ़ालो, इसपे ध्वजा लगालो।
आओ पूजा––– ये थाली––

4. छोटे–बड़े विधान कराके, सबके कष्ट मिटाते।
कर्मों की आहुति करने, हर दिन हवन कराते॥–2
अपनी 'आस्था' जगालो, प्रभु को शीश झुकालो।
आओ पूजा––– ये थाली––

(234) स्त्रियों द्वारा पंचामृत अभिषेक भजन

आओ बहना करें न्हवन हम, तीन लोक के स्वामी का।
हर आतम बनती परमातम वाक्य है केवलज्ञानी का॥

स्त्री पुरूष का भेद नहीं है, सब हैं भक्त प्रभुवर के।
जो नारी प्रभुवर को जनती, वो क्यों दूर रहे प्रभु से॥

प्रथम दर्श इंद्राणी करती, इंद्र के संग अभिषेक करे।
वस्त्राभूषण शची पहनाती, प्रभूवर का श्रृंगार करे॥

नारी लक्ष्मी नारी दुर्गा, नारी है माँ सरस्वती।
ब्राह्मी सुंदरी चंदन सीता, अंजन मैना मनोवती॥

मैना ने तो कुष्ठ मिटाया, कर के न्हवन जिनेश्वर का।
चंदन बाला मुक्त हो गई, कर पडगाहन जिनवर का॥

सभी जगह नारी की पूजा, नारी है रत्नों की खान।
कभी न करना इस माता का, सपने में भी तुम अपमान॥

है सौभाग्यवती ये नारी, पंच कल्याणक पूर्ण करे।
मंगल सूचक है ये नारी, धर्म कार्य सम्पूर्ण करें।।

यदि अशुद्ध नारी इस जग में, फिर आहार क्यों लेते हैं।
क्या आहार समय नारी को, पुरूष मानकर लेते हैं।।

चौका नित्य लगाती माता, मुनिवर को पडगाती है।
शिशु मानकर मुनिराजों को, वो आहार कराती है।।

गुरू की सेवा पूजा भक्ति, हर नारी जब कर सकती।
वो ही नारी नाथ आपका, क्यूँ अभिषेक न कर सकती।।

गुल्लिका ने बाहुबली का, पूर्ण महाअभिषेक किया।
अधिकार है हर माता का, आगम ने उल्लेख किया।।

पंचामृत अभिषेक प्रभु का, नर नारी सब कर सकते।
देवशास्त्र गुरू तीनों की हम, भक्ति मिलकर कर सकते।।

शुद्धि से हर नारी प्रभु का, 'आस्था' धर अभिषेक करें।
शांति से प्रभु की भक्ति कर, क्रम से मुक्तिधाम वरे।।

(235) (तर्ज---धिक ताना धिक ताना--)

जयकारा ऽ जयकारा ऽ जयकारा ।
जयकारा ऽ जयकारा ऽ जयकारा ।।
जन्म जयंती हमको मनाना, जयकारा-ऽ

1. गुरुवर मेरे जन्मे थे जब, सावन का महीना था तब।
झम-झमाझम बरसे पानी, खुशियों का नजराना।
जयकारा ऽ जयकारा ऽ जयकारा ऽ

2. (तर्ज---मेरा पिया घर आया---)
कुल को चमकाने आया, राह दिखाने आया,
सबको जगाने आया ओ ऽऽऽ
मार्ग दिखाने आया, धर्म का सूरज आया,
'आस्था' से तुमको ध्याया।
ओ गुरुदेवा, गुप्तिनंदी गुरु जन्में।
ओ गुरुदेवा, गुप्तिनंदी गुरु जन्में। 4

3. (तर्ज---नैनों में सपना सपनों में सजना---)
चरणों में आये, शीश झुकायें,
फूलों की करे बरसात,
जनम दिन आया है-2
धर्म की राह चले,
गुरुवर की छाँव तले।
मुनि बनने को चले।
गुप्ति गुरु का आज, जनम दिन आया है।।

4. (तर्ज-जय जय शिव शंकर---)
जय हो गुरुदेवा, हो गुप्ति गुरु देवा 2
हो गुरु तेरा नाम लिया,
ओ जय गुरुवर, ओ जय ऋषिवर
तूने भक्ति मार्ग दिया ओ जय गुरुवर,
ओ गुरु तेरा नाम लिया।
जय हो गुरुदेवा, हो गुप्ति गुरु देवा।

6. (तर्ज––खाइके पान बनारस वाला)
ओ गुप्तिनंदी नाम है प्यारा–2
ओ बोलो गुरुवर का जयकारा।
ओ गुप्तिनंदी नाम है प्यारा,
ओ बोलो गुरुवर का जयकारा ॥
गुप्तिनंदी है जिनका नाम,
उनको करते हम भी प्रणाम।
ओ हमने गुरुवर तुम्हें पुकारा–2,
ओ गुप्तिनंदी नाम है प्यारा

7. हे प्रज्ञायोगी, कैसे प्रज्ञा ये पाई, हाय हाय हाय।
हे ज्ञानयोगी, तूने ज्योति जलाई, हाय हाय हाय
ये गुरुवर समता धारी, इनको पूजें नरनारी, हाय हाय
ये गुरुवर–––वात्सल्य सिंधु गुरुवर ने,
हम सबको आज निखारा,
इनकी वाणी ने, इनकी वाणी ने, हमको तारा
ओ बोलो गुरुवर जयकारा,
ओ गुप्तिनंदी नाम है प्यारा–––

(236) (तर्ज – मैं निकला गड्डी लेके रस्ते में..)

गुप्तिनंदी, ऋषिवर की, गुरुवर की, सूरिवर की।
हम वंदना करें, गुरु की अर्चना करें।
गुरुवर की–हम वंदना करें...

1. 27 मई श्रुतपंचम को, मुनि गुप्तिनंदी आचार्य बने–2
इंदौर नगर गोम्मटगिरी पे, आये गुरुवर के भक्त घने॥
सब झूमे, सब नाचे, सब बोले,
गुरुवर की–हम वंदना करें...

2. दीक्षा गुरु कुंथुसागर ने, सूरिपद तुम्हें प्रदान किया–2
सूरि सीमन्धर सागर ने, सूरिपद का संस्कार किया॥
शहनाई, वहाँ बाजे, ताता थैया, सब नाचें।
गुरुवर की–हम वंदना करें...

3. कई मुनि आर्यिका सूरीगण, आकर उत्सव में हर्षाये–2
चारों दिश से गुरु दर्शन को, सब भक्त वहाँ दौड़े आये।
'आस्था' से हम बोले, जयकारा, गुरुवर की–हम वंदना करें...

(237) (तर्ज – सूरज कब दूर गगन से..:)

गुप्ति गुरु जहाँ भी जाते, विधान प्रभु के कराते।
विधान लिखे हैं अनेकों, उनकी रचना को देखो॥
गुरुवर ये, सबको जगाते हैं,
भक्तों को, मार्ग दिखाते हैं, हो ऽऽऽ ओ ऽऽऽ आ ऽऽऽ आ ऽऽऽ

1. ये कविहृदय गुरु प्यारे, विधान लिखे अति न्यारे–2
रत्नत्रय विजय पताका, नवग्रह ग्रह मुक्ति दिलाता॥
चौबीसी तीस हमारी, पूजा करते नर–नारी।
विद्या सिद्धि को बढ़ाये, सब कार्य सिद्ध हो जाये॥ गुरुवर..

2. विधान है पंचकल्याणक, जो जन-जन का कल्याणक।
महालक्ष्मी सिद्धीदाता, श्री गणधर भाग्य विधाता॥
परमेष्ठी पाँचों प्रभु का, विधान करें हम उनका।
प्रभु के विधान हम करते, 'आस्था' से प्रभु को भजते॥ गुरुवर..

(238) (तर्ज- शिखरजी वाले पारस बाबा..)

दिगम्बर मुद्रा में प्रभु महावीर की, छवि दिखती है।
गुरु आशीष से भक्तों की किस्मत चमकती है॥-2

1. कीर्त्तन तुम्हारा करूँ मैं गुरुवर, आशीष तेरा जाये ना खाली।
गुरुवर हमारे, श्री गुप्तिनंदी, मुस्कान तेरी सबसे निराली॥-2
चरणों में तेरे, आये हैं गुरुवर, गुणगान गायें, बजायें ताली।
सबसे निराली हो मुस्कान... गुरुवर...

2. ओ मेरे गुरुवर प्यारे, तुम्ही हो तारणहारे।
भक्त ये तेरे न्यारे, भक्ति ये करते सारे॥
गुरुवर प्रज्ञायोगी, तुम्हीं हो बालयोगी।
गुरु सबको जगायें, गुरु करुणा दिखायें॥ गुरुवर...

3. गुरु गुप्ति को ध्यायें, सच्चा ज्ञान पायें।
मोह अपना नशायें, धर्म की राह पायें॥
धर्म का ध्वज फहराते, पूजा अभिषेक सिखाते।
शिविर लगाते, ध्यान सिखाते,
प्रवचन कथा से मार्ग दिखाते॥ गुरुवर...

4. महाकवि ज्ञानी ध्यानी, मधुर है तेरी वाणी।
शरण जो तेरे आये, बहुत वात्सल्य पाये॥
तेरी है कीर्ति भारी, भक्त हैं सब नर-नारी।
तेरा आशीष पाने, भाग्य अपना जगाने॥
'आस्था' से तुमको ध्यायें, अपनी मंजिल को पायें।
समता सबको सिखायें, सबको ज्ञानामृत पिलायें॥

(239)

हमारी आर्ष परम्परा, सच्ची जैन परम्परा।
अरिहंतों ने बतलाई, जिनवाणी ने सिखलाई॥1॥
जब अभिषेक कराते हम, केवल जल ना लाते हम।
शुद्ध दूध ले आते हम, दही के कलश ढुराते हम ॥2॥ हमारी...
दूध मीठा लगता है, व्हाइट कलर में जँचता है।
जब वो प्रभु पर ढुरता है, कितना सुंदर लगता है ॥3॥ हमारी...
दही दूध से बनता है, जामन से ना जमता है।
ये पँचामृत गलत नहीं, जल फल रस घी दूध दही॥4॥ हमारी...
हरे भरे फल लायें हम, प्रतिदिन फूल चढ़ायें हम।
लड्डू पेढ़ा लायें हम, प्रभु की पूजा गायें हम ॥5॥ हमारी...
फ्रूट फ्लावर ग्रीन-ग्रीन, शुद्ध स्वीट घर का नमकीन।
सुंदर दिखता टेंपल सीन, होगा मेरा आतम क्लीन ॥6॥ हमारी...
मम्मी भी अभिषेक करें, पापा भी अभिषेक करे।
कर सकती नारी अभिषेक, ऐसा आगम में उल्लेख ॥7॥ हमारी...
पद्मावती माता प्यारी, क्षेत्रपाल महिमा भारी।
ये सबकी रक्षा करते, हम इनकी पूजा करते॥8॥ हमारी...
सब मुनियों पर एक समान, हम सबका सच्चा श्रद्धान।
णमो लोए सव्व साहूणम्, जैनं जयतु शासनम् ॥9॥ हमारी...

(240) (तर्ज--फूल तुम्हें भेजा है खत में--)

दीक्षा की शुभ बेला आई, वैरागी बन आप चले।
जग के रिश्ते नाते छोडें, त्यागी बनने आप चले॥
आठ बीस गुण अपनायेंगे, कहलायेंगे महाव्रती।
बने दिगम्बर मुद्राधारी, करते ना ये द्वेष रती॥ दीक्षा----

1. अब श्रृंगार ना मन को भाये,
   सब आभूषण बोझ लगे।
   रंग बिरंगे वस्त्राभूषण,
   तन-मन को बेरंग लगे॥
   सांसारिक सुख मन को न भाये,
   कैसे परमानंद मिले।
   तन -मन को संयम से सजाने,
   मुझको गुरु के चरण मिले॥ दीक्षा----

2. मुक्ति वधू से ब्याह रचाने,
   मैं संयम अपनाऊँगा।
   प्राणी मात्र की रक्षा करने,
   वेश दिगंबर धारूँगा॥
   पीछी-कमंडल दे दो गुरुवर,
   बढ़े पुण्य से आप मिले।
   बाईस परिषह सहते गुरुवर,
   हमको ऐसे गुरु मिले॥
   दीक्षा ----

3. केश उखाडें, कपडे छोड़ें,
गुरु का आशीष प्राप्त करें।
करुणाधारी गुरु हमारे,
दीक्षा के संस्कार करें॥
केशों का लोचन करते हैं,
मुनिवर नंगे पैर चलें।
गुरुवाणी पे 'आस्था' करते
संयम का उपहार मिले॥ दीक्षा ---

(241) दीपावली का भजन (तर्ज---ऐसे लहराके तू---)

आओ मंदिर चलें, पूजा भक्ति करें।
मोक्ष कल्याण हम सब मनाने चलें॥
लड्डु लेकर चलें ,दीप लेकर चलें।
पर्व मोक्ष का हम सब मनाने चलें॥ आओ---

1. फुलझडी फटाका ना, फोडें कभी।
एटमबम भी चलायेंगे हम ना कभी॥
दीप घर -घर जलें,सबको भोजन मिले॥
आओ ऐसी दीवाली मनाते चलें॥ आओ---
2. जिओ और जीने दो, इसको अपनायेंगे।
सुख शांति का संदेश फैलायेंगे॥
सबको प्यार करें, सबसे मिलकर रहें॥
आओ ऐसी दिवाली मनाते चलें॥ आओ---
3. जिनकी वाणी में, हमको अहिंसा मिली।
उनके कारण ही हमको दिवाली मिली॥
'आस्था' उन पे करें, जिन को वंदन करें॥
आओ ऐसी दिवाली मनाते चलें॥ आओ---

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

पोस्ट कचनेर गट नं. 11-12, जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र) द्वारा

आर्ष मार्ष संरक्षक, कवि हृदय, प्रज्ञायोगी, दिगम्बर जैनाचार्य

श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ससंघ का प्रकाशित साहित्य

1. श्री रत्नत्रय आराधना
2. श्री लघु रत्नत्रय आराधना
3. श्री वृहद् रत्नत्रय विधान
4. श्री लघु रत्नत्रय विधान
5. श्री रत्नत्रय भक्ति सरिता
6. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 1)
7. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 2)
8. श्री वृहद गणधर वलय विधान
9. लघु गणधर वलय विधान
10. श्री नवग्रह शान्ति विधान (समुच्चय)
11. श्री सूर्यग्रह शान्ति विधान (श्री पद्मप्रभु आराधना)
12. श्री चन्द्रग्रह शान्ति विधान (श्री चन्द्रप्रभु आराधना)
13. श्री मंगलग्रह शान्ति विधान (श्री वासुपूज्य आराधना)
14. श्री बुधग्रह शान्ति विधान (श्री शांतिनाथ आराधना)
15. श्री गुरुग्रह शान्ति विधान (श्री आदिनाथ आराधना)
16. श्री शुक्रग्रह शान्ति विधान (श्री पुष्पदंत आराधना)
17. श्री शनिग्रह शान्ति विधान (श्री मुनिसुव्रतनाथ आराधना)
18. श्री राहूग्रह शान्ति विधान (श्री नेमिनाथ आराधना)
19. श्री केतुग्रह शान्ति विधान (श्री पार्श्वनाथ आराधना)
20. धर्मसूर्य श्री पद्मप्रभ-वासुपूज्य-नेमिनाथ विधान
21. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (बड़ी)
22. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (छोटी)
23. श्री पंचकल्याणक विधान
24. श्री त्रिकाल चौबीसी (लक्ष्मी प्राप्ति) रोट तीज विधान
25. श्री तीस चौबीसी (महालक्ष्मी प्राप्ति) विधान
26. श्री सर्व तीर्थंकर विधान
27. श्री विजय पताका विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री सर्व सिद्धि (पंच परमेष्ठी) विधान
30. श्री विद्या प्राप्ति विधान
31. श्री श्रुत स्कन्ध विधान
32. श्री तत्त्वार्थ सूत्र विधान
33. श्री भक्तामर विधान
34. श्री कल्याण मंदिर (चिंतामणि पार्श्वनाथ) विधान
35. श्री एकीभाव विधान
36. श्री विषापहार विधान
37. श्री णमोकार विधान
38. श्री सहस्त्रनाम विधान (प्रेस से)
39. श्री आदि-पुष्प-शान्ति-पार्श्व-वीर-लक्ष्मी प्राप्ति-बाहुबली-धर्मतीर्थ एवं आचार्य गुप्तिनंदी विधान
40. श्री चन्द्रप्रभु विधान
41. श्री शान्तिनाथ विधान

42. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
43. श्री रविव्रत विधान
44. श्री पंचमेरु-दशलक्षण-सोलहकारण विधान
45. श्री नंदीश्वर विधान
46. श्री चन्दन षष्ठी व्रत विधान
47. श्री दीपावली पूजन (मंत्र-यंत्र-तंत्र संग्रह)
48. आचार्य श्री कुन्थुसागर विधान
49. आचार्य श्री कनकनंदी विधान
50. आचार्य श्री गुप्तिनंदी विधान
51. श्री छयानवे क्षेत्रपाल विधान
52. श्री भैरव पद्मावती विधान
53. श्री धर्मतीर्थ आरती संग्रह
54. सावधान (काव्य संग्रह)
55. महासती अंजना
56. कौडियो में राज्य
57. महासती मनोरमा
58. महासती चन्दनबाला
59. विलक्षण ज्ञानी (आचार्य श्री कनकनंदी जी चरित्र कथा)
60. वात्सल्य मूर्ति (गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी स्मारिका)
61. धर्मतीर्थ आरती संग्रह
62. धर्मतीर्थ प्रवेशिका (भाग-1)
63. आचार्य शांतिसागर विधान
64. धर्मतीर्थ आरती संग्रह
65. श्री मुनिसुव्रतनाथ, विद्याप्राप्ति, चौंसठ ऋद्धि एवं लघु गणधर वलय विधान
66. श्री कुन्थुनाथ विधान
67. श्री श्रेयांसनाथ विधान
68. श्री संभवनाथ विधान

सी.डी.

1. श्री सम्मेदशिखर सिद्ध क्षेत्र पूजा (सी.डी.)
2. श्री रत्नत्रय आराधना व महाशांति धारा (डी.वी.डी.)
3. श्री नवग्रह शांति चालीसा (सी.डी.)
4. श्री बाहुबली पूजा (सी.डी.)
5. ये नवग्रह शांति विधान है (सी.डी.)
6. गुप्तिनंदी गुणगान (सी.डी.)
7. वात्सल्यमूर्ति माँ राजश्री (डी.वी.डी.)
8. मेरे पारस बाबा (डी.वी.डी,)
9. देहरे के चन्दा बाबा (एम.पी. 3)
10. श्री कुन्थु महिमा (डी.वी.डी.)
11. कनकनंदी गुरुदेव तुम्हारी जय हो (एम.पी.3)
12. गुप्तिनंदी अभिवन्दना (डी.वी.डी.)
13. जयति गुप्तिनंदी डाक्यूमेन्ट्री (डी.वी.डी.)
14. श्री गुप्तिनंदी संघ हिट्स
15. श्री रत्नत्रय जिनार्चना